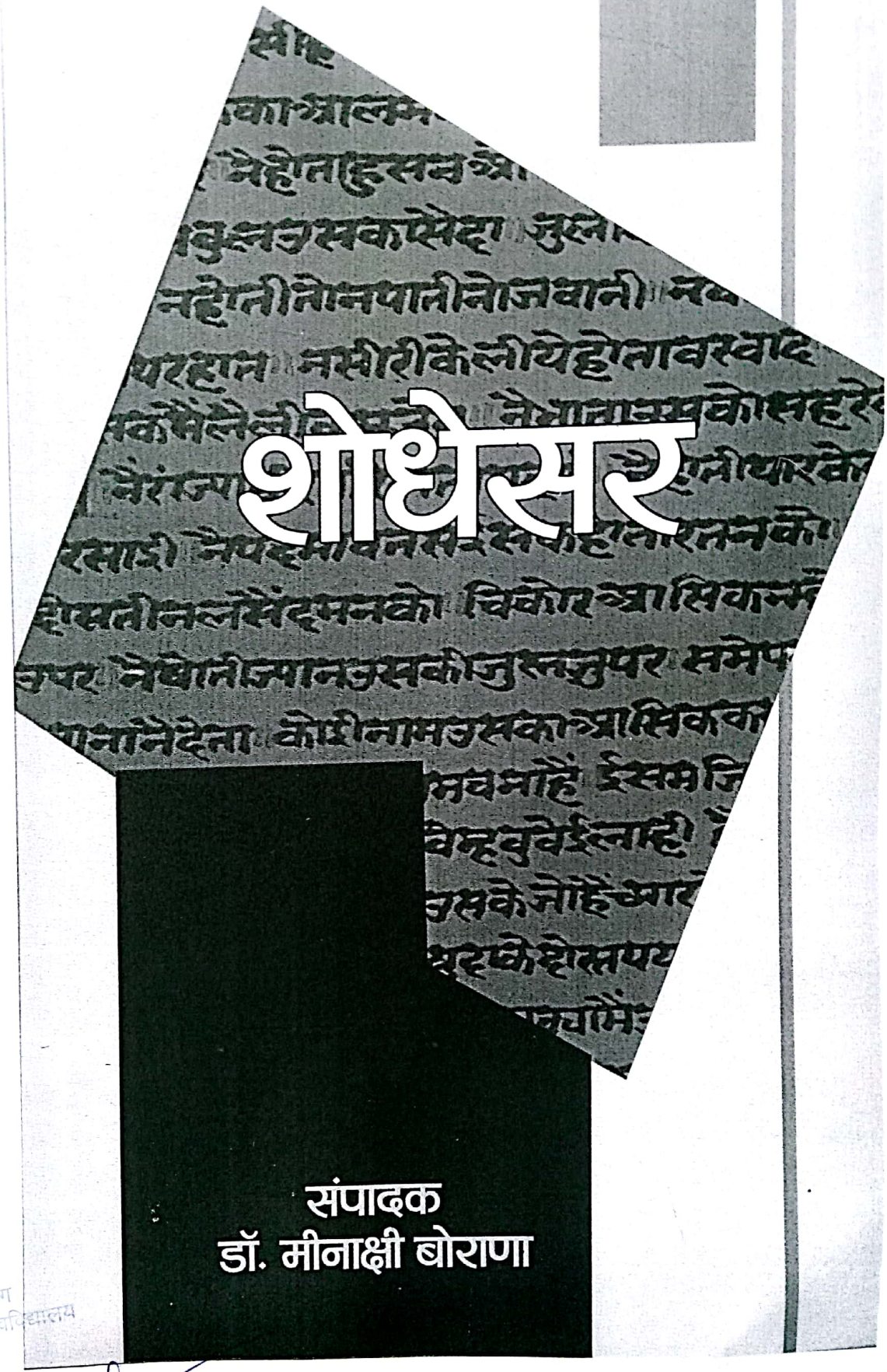

शोधेसर

संपादक
डॉ. मीनाक्षी बोराणा

अध्यक्ष
राजस्थानी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर

Scanned by CamScanner

जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर रै
राजस्थानी विभाग रौ शोध आलेख-संग्रै

छापणहार

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति
संस्कृति भवन, अेन.अेच.11, श्रीडूंगरगढ़-331803
बीकानेर (राजस्थान)
E-mail : hindipracharsamiti@gmail.com
www.rbhpsdungargarh.com

ISBN 978-81-94897-99-6

© डॉ. मीनाक्षी बोराणा

संस्करण : 2021
आवरण : रमेश शर्मा
आखरसाज : रोहित राजपुरोहित
मोल : तीन सौ रुपिया
छापाखानौ : कल्याणी प्रिंटर्स, बीकानेर

SHODHESAR (Rajasthani Research Paper Collection)
Edited by Dr. Meenakshi Borana
₹ 300

अध्यक्ष
राजस्थानी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर

Scanned by CamScanner

अनुक्रम

1. संस्कारां बिन रिश्ता सून
-डॉ. गजादान चारण 'शक्तिसुत' 9

2. राजस्थानी सबदकोस परंपरा अर विगसाव
-डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित 15

3. जूंझार गिरधर व्यास
-डॉ. चांदकौर जोशी 24

4. राजस्थानी लोककथावां में नारी चित्रण
-जेबा रशीद 30

5. आजादी पछै री राजस्थानी साहित्यिक पत्रकारिता : च्यार पत्रिकावां री फिरोळ
-दुलाराम सहारण 33

6. 'भड़खाणी' कृति रा कृतिकार : वीररसावतार सूर्यमल्ल मीसण
-डॉ. धनंजया अमरावत 45

7. उपन्यास-विकास : कथ्य अर बुणगट
-डॉ. नीरज दइया 50

8. राजस्थानी काव्य में गांधीवादी विचारां रौ असर
-डॉ. प्रकाश अमरावत 57

अध्यक्ष
राजस्थानी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर

Scanned by CamScanner

डॉ. धनंजया अमरावत

'भड़खाणी' कृति रा कृतिकार : वीररसावतार सूर्यमल्ल मीसण

वीरत्व नै अमरत्व प्रदान करणिया सूर्यमल्ल मीसण सरीखा स्पष्टवादी अर स्वाभिमानी कवि ईज आपरै स्वामी सारू अैड़ी अद्‌भुत अरदास कर सकै कै, ''हे भगवान भास्कर, अेक अैड़ौ दिन भी ऊगै कै म्हारा स्वामी रौ मुंड घोड़ा री टापां में लुढकतौ लादै।''

राजस्थानी साहित्य रै संदर्भ में 18 फरवरी 1937 रै दिन राजस्थान रिसर्च सोसायटी कलकत्ता में आपरै अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कवीन्द्र रवीन्द्र जका हियातणा उद्‌गार प्रकटाया वै इण प्रदेस में सिरज्योड़ा वीर-काव्य रै महताऊपणां नै आछी तरियां प्रकटावै, ''भक्ति रस का काव्य तो भारतवर्ष के प्रत्येक साहित्य में किसी न किसी कोटि का पाया ही जाता है। राधाकृष्ण को लेकर हरेक प्रांत में साधारण या उच्च कोटि का साहित्य निर्मित किया है, लेकिन राजस्थान ने अपने रक्त से जो साहित्य-निर्माण किया है, उसकी जोड़ का साहित्य और कहीं नहीं पाया जाता है और उसका कारण है राजस्थानी कवियों ने कठिन सत्य के बीच में रह कर युद्ध के नगाड़ों के बीच अपनी कविताएं बनाई थीं। प्रकृति का तांडव रूप उनके सामने था। क्या आज कोई कवि मात्र अपनी भावुकता के बल पर फिर वह काव्य निर्माण कर सकता है? राजस्थानी भाषा के साहित्य में जो एक प्रकार का भाव है जो उद्वेग है—वह राजस्थान का खास अपना है, वह केवल राजस्थान के लिए ही नहीं, सारे भारत वर्ष के लिए गौरव की वस्तु है।''

इणीज भांत चावा भाषा-विद् डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी भी राजस्थानी भाषा रा वीर-काव्य नै बिड़दावता थका कैयो है कै—"Rajasthani Heroic Literature is a massege of Blood Flooded life and Stormy Death."

अर्थात् राजस्थानी वीर-काव्य रगत रंजित जीवण अर तूफानी मौत रौ संदेसौ है।

इसी महताऊ वीर-काव्य परम्परा में सै सूं लूंठौ अर सिरै योग देवण वाळा 'वीररसावतार' री संज्ञा सू विभूषित सूर्यमल्ल मीसण रौ जलम कार्तिक वदी अेकम् संवत 1872 में व्हियौ। आपरै पिता रौ नाम चंडीदानजी अर माताजी रौ नाम भवान बाई हो। आपरा दादोसा श्री वदनजी अर पिताजी चंडीदानजी भी बूंदी दरबार रा चावा कवियां में आपरी ठावी ठौड़ राखता हा।

अध्यक्ष
राजस्थानी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर

Scanned by CamScanner

राजस्थली

अध्यक्ष
राजस्थानी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर

Scanned by CamScanner

राजस्थानी उपन्यासां मांय नारी-विमर्श	*मोनिका गौड़*	135
परंपरा अर संस्कृति रै विकास में महिला लेखन री भूमिका	*रेखा लोढ़ा 'स्मित'*	141
आधुनिक राजस्थानी महिला काव्य में प्रगतिवादी सुर	*डॉ. शारदा कृष्ण*	146

कविता

रूंख भायलो / वीर दुर्गादास	*अर्चना राठौड़*	153
थारी कविता	*अनिला राखेचा*	154
पांखड़ल्यां / मिजमानी	*अभिलाषा पारीक 'अभि'*	155
मन रै आंगणै / आंधल घोटो	*अरुणा जी. मेहरू*	156
म्हारी प्रीत	*इन्द्रासिंह*	157
जठै हर नारी दुर्गा / जद तूं खुद है ज्वाला	*इन्दु तोदी*	158
के लिखूं म्हैं... ?	*इला पारीक*	159
जगतो सवाल	*डॉ. उषा श्रीवास्तव*	160
आयो आसाढ / प्रकृति में रमणी चावूं	*ऐश्वर्या राजपुरोहित*	161
घर / साच / दुनिया	*ऋतु प्रिया*	162
पणिहारी / आंधी	*कविता शर्मा*	163
थे ई जाणो	*डॉ. कृष्णा कुमारी*	164
कियां लिखूं कविता / थे अरथा दीजो	*कृष्णा सिन्हा*	165
मजलां चालणियो ई पासी	*कमला मारवाड़ी (जैन)*	166
हथाई आळी चूंथरी	*कामना राजावत*	167
अंगरख्यो	*डॉ. चेतना उपाध्याय*	168
बा बतळासी बगत अर आभै नैं	*ज्योत्स्ना राजपुरोहित*	169
मन / देवो थे किणनैं दोस	*ज्योति राजपुरोहित*	170
महेन्द्र-मूमल / जीवण री बातां	*जयश्री कंवर*	171
गैली राधा	*तरनिजा मोहन राठौड़ 'तंवराणी'*	172
सोना नो सूरज क्यारे उगेगा ?	*दीपिका दीक्षित*	173
म्हारो बेरो	*डॉ. धनञ्जया अमरावत*	174
माधवी	*नलिनी पुरोहित*	175
मायड़ कैवै बेटी नैं	*निर्मला राठौड़*	176
कोविड पर आपबीती	*नीलिमा राठौड़*	177
कुबदी कोरोना / अबखाई अर औसर	*पवन राजपुरोहित*	178
आंगण अब जोवैला बाट	*प्रमिला चारण*	179
अनुभवां री लाठी / उठाया दोनूं हाथ	*डॉ. प्रियंका भट्ट*	180
मुळक / मजूर / सरणार्थी कैंप / किसान अर मजूर	*प्रियंका भारद्वाज*	181
प्रीत रै आंगणै / दोजक	*बंशी यथार्थ*	182

ISSN : 2320-0995

अध्यक्ष
राजस्थानी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर

Scanned by CamScanner

कविता

डॉ. धनञ्जया अमरावत

म्हारो बेरो

म्हारो बेरो
हां औ बेरो, म्हनैं चोखो लागै
अठै बसी है,
म्हारै बाळपणै री यादां
जठै म्हैं हेरती,
चिड़कलियां रा आळा
कबूड़ां रा माळा
अर व्हारां नैना-नैना
बिचियां रै हाथ लगाय
लेंवती बो सुख
जको आज
नीं मिळै, हेरियोड़ो ई।
हां, अठै ईज तो रैवता हा
भंवर जी, मांगो,
उणरी मां अर खेमौ
कितरा लाड-लडावता हा बै
नैना लीलू बाईसा नैं।

कठै गिया, बै हेजाळू लोग
आज हेरूं तो ई
नीं लाधै बो हेज।
इणीज बैरा माथै
हा कीं रूंखड़ा
कीं बोरड़ियां रा
कीं खेजड़ियां रा
तो कीं बांवळियां रा
जका देंवता म्हनैं
बोरां, खोखां, गूंद अर
पापड़ियां रो इधको सुवाद
कठै गियो बो सुवाद
अबै तो,
बो सुवाद आवै ई कोनी।

म्हारै बाळपणै रा बेली
धूड़ा में,
ऊंडो रैवणियो हाथीड़ो
बाड़ा में भरिया आंईणा अर
ठाणां बंधिया दूजोड़ा ध्राव।
कठै गई बा सिंझ्या
जद दुवारी करता सागड़ी
म्हनैं हेलौ मार बुलाता
अर, दूध री धारां सूं
भरीज जावतो
म्हारो सगळो मूंडो
बो झागां चढी,
दूध री बाल्टी सूं
आंगळी भरनै
दूध रा झाग चाटणो
आज ई म्हारै मूंडै
मुळक लेय आवै
इणीज बेरा री
माटी री सौरम
इणरी साखां री महक
नीप्योड़ा लाटां री गंध
आज पण बसी है
म्हारै अंतस में।
हां, इणीज बेरा माथै
म्हैं फिरती
म्हारा जीसा री
आंगळी पकड़ियां
उछळती-कूदती
जद जीसा री याद आवती
तो पूछती
खेतां में चुगता सारड़ां नै
जीसा रो पतो
पण आज तो बै सारड़ ई कोनी
जिणसूं पूछूं म्हैं
म्हारै जीसा रो पतो
पण म्हैं जाणूं हूं कै
इणीज बेरा री
रज-रज में बसिया है
म्हारा जीसा।
हां, इणीज कारण
म्हनैं चोखो लागै औ बेरो।
◆◆

11, शक्ति-सदन, राम मोहल्ला, नागौरी गेट रै बारै, जोधपुर (राज.) मो. 8003700477

अध्यक्ष
राजस्थानी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर

ISSN : 2320-0995

Scanned by CamScanner

राजस्थानी लोक देवी-देवता परंपरा और साहित्यिक पीठ

गजेसिंह राजपुरोहित

Scanned by CamScanner

❑ प्रकाशक :

बाबा रामदेव शोधपीठ

जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

अर

राजस्थानी ग्रंथागार

प्रकाशक एवं वितरक

पैलौ माळौ, गणेश मंदिर रै सांम्ही

सोजती गेट, जोधपुर (राजस्थान)

फोन : 0291-2657531, 2623933 (का.)

E-mail : info@rgbooks.net

Website : www.rgbooks.net

❑ ISBN : 978-93-91446-75-8

❑ © सगळा इधकार संपादक रा

❑ पैलौ संस्करण : 2021

❑ मोल : ₹ 300/- (तीन सौ रिपिया)

❑ आवरण चितराम : राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी, जोधपुर में संग्रहीत
श्री हिमतरामजी व्यास, पोकरण रौ वणायोड़ौ लोक देवता
बाबा रामदेवजी रौ चितराम

❑ छापणहार :
जांगिड़ कंप्यूटर्स, जोधपुर 6376545732

RAJASTHANI LOK DEVI-DEVTA : PARMPARA AR SAHITYIK DEETH

Edited by Dr. Gaje Singh Rajpurohit

First edition : 2021 Price : 300/-

Scanned by CamScanner

विगत

खण्ड-क

1. आस्था का आधार राजस्थान की लोक देवियां
-डॉ. मनोहरसिंह राठौड़ ... 21

2. राजस्थानी लोक में पांच पीर : एक अनुशीलन
-डॉ. आईदानसिंह भाटी ... 27

3. मेहाजी मांगळिया : भ्रामक धारणाए व निराकरण
-गिरधरदान रतनू 'दासोड़ी' ... 41

4. गोगादेव चौहान : लोक अवधारणा
-भंवरलाल सुथार ... 53

5. लोक देवता जुंझारजी : एक अनुशीलन
-डॉ. महीपाल सिंह राठौड ... 57

6. पिछमधरा के पीर : बाबा रामदेवजी
-डॉ. महेन्द्रसिंह तंवर ... 67

7. लोक परम्परा में लोक पूज्य देवियां
-डॉ. धनंजया अमरावत ... 75

8. लोकमानस में तल्लीनाथ : एक अनुशीलन
-डॉ. लक्ष्मणसिंह गड़ा ... 82

9. सिद्ध अलूनाथजी का सामाजिक एवं धार्मिक चिंतन
-डॉ. किरण चारण ... 92

10. चारणों की आराध्य देवियां और करणी मढ़ की विशेषताएं
-अशोक कुमार चारण ... 96

अध्यक्ष
राजस्थानी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर

Scanned by CamScanner

ज़िंदगी ढूँढ़ती है

डॉ. धनंजया अमरावत

Scanned by CamScanner

ISBN : 978-93-91127-33-6

प्रकाशक :

रॉयल पब्लिकेशन

प्रकाशक एवं वितरक

18, शक्ति कॉलोनी, गली नं. 2

लोको शेड रोड, रातानाडा,

जोधपुर-342 011 (राजस्थान)

Mobile : 094142-72591

E-mail : rproyalpublication@gmail.com

© डॉ. धनंजया अमरावत

प्रथम संस्करण : 2021 मूल्य : ₹ 300.00

आवरण : इंटरनेट से साभार

मुद्रक : भारत प्रिण्टर्स (प्रेस), जोधपुर

लेज़र टाइपसेटिंग : रोहन कम्प्यूटर, जोधपुर

अध्यक्ष
राजस्थानी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर

ZINDAGI DHUNDHATI HAI

Edited by : Dr. Dhananjaya Amrawat

Royal Publication, Jodhpur

First Edition : 2021 • Price : ₹ 300.00

Scanned by CamScanner

Dr. Dananjaya Amarawat Ji Rajasthani
12/23/2021 at 10:16 PM

अध्यक्ष
राजस्थानी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर

Scanned by CamScanner

ISBN : 978-81-949377-8-4

प्रकाशक :
रॉयल पब्लिकेशन
प्रकाशक एवं वितरक
18, शक्ति कॉलोनी, गली नं. 2
लोको शेड रोड, रातानाडा,
जोधपुर-342 011 (राजस्थान)
Mobile : 094142-72591
E-mail : rproyalpublication@gmail.com

© डॉ. धनंजया अमरावत

प्रथम संस्करण : 2021 मूल्य : ₹ 250.00

आवरण चित्रांकन : डॉ. नम्रता स्वर्णकार, जोधपुर

मुद्रक : भारत प्रिण्टर्स (प्रेस), जोधपुर

लेज़र टाइपसेटिंग : रोहन कम्प्यूटर, जोधपुर

DINGARA-DINGARA

Edited by : Dr. Dhananjaya Amrawat
Royal Publication, Jodhpur
First Edition : 2021 ● Price ₹ 250.00

आगम
राजस्थानी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर

Scanned by CamScanner

सगत

संपादक

डॉ. धनंजया अमरावत

Scanned by CamScanner

ISBN 978-93-91127-01-5

प्रकाशक :

रॉयल पब्लिकेशन

प्रकाशक एवं वितरक

18, शक्ति कॉलोनी, गली नं. 2

लोको शेड रोड, रातानाडा,

जोधपुर-342 011 (राजस्थान)

Mobile : 094142-72591

E-mail : rproyalpublication@gmail.com

© डॉ. धनंजया अमरावत

प्रथम संस्करण : 2021 मूल्य : ₹ 250.00

आवरण चितरांम : अंतरजाळ सूं साभार

मुद्रक : भारत प्रिण्टर्स (प्रेस), जोधपुर

लेज़र टाइपसेटिंग : रोहन कम्प्यूटर, जोधपुर

SAGAT

Edited by : **Dr. Dhananjaya Amrawat**

Royal Publication, Jodhpur

First Edition : 2021 ● Price ₹ 250.00

अध्यक्ष
राजस्थानी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर

Scanned by CamScanner

★ राजस्थानी री सबसूं जूनी पत्रिका ★ 45 बरसां सूं अणथक प्रकाशित

राजस्थली

(लोक चेतना री राजस्थानी तिमाही)

संस्कृति भवन, एन. एच. 11, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर) राज.

राजस्थली सम्मान

डॉ. धनञ्जया अमरावत, जोधपुर

मानीता

भासा, साहित्य, संस्कृति अर लोक चेतना री तिमाही 'राजस्थली' री 45 बरसां री अणथक सफळ प्रकासण जात्रा पूरी होवणै रै मंगळ ... भासा राजस्थानी में आपरै सांवठै सिरजण, अमोलक अवदान, राजस्थली नै रचनात्मक सैयोग नै ध्यान में राख'र पत्रिका परिवार ... आपनै 'राजस्थली सम्मान-2021' अरपण करतां म्हानैं घणो अंजस हुवै।

... पूरो भरोसो अर पतियारो है कै आप भविस में भी इणी भांत सिरजणरत रैय'र सफळता रा नूंवा सोपान हासल करस्यो अर आपरी ... सूं राजस्थानी साहित्य रो भण्डार भरता रैस्यो।

... परिवार रा सगळा पदाधिकारी आपरै ऊजळ भविस री मंगळ कामना करै।

—— सुभकामनावां साथै ——

... पुरोहित
... संपादक

अध्यक्ष
राजस्थानी ...
जयनारायण महर्षि
संपादक

राजस्थानी लेखिका सम्मेलन

अदीतवार, 29 अगस्त, 2021

जलसै री ठोड़ : माहेश्वरी सेवा सदन, आडसर बास, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर)

Scanned by CamScanner

भारतीय विद्या भवन जोधपुर केंद्र

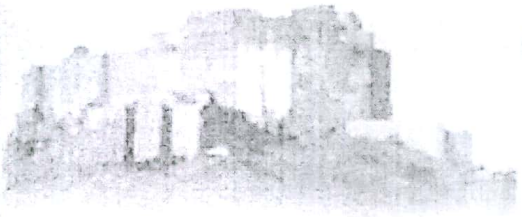

सम्मान पत्र

डॉ. धनंजया अमरावत

को मातृभाषा राजस्थानी के उन्नयन एवं विकास में अपने सृजन तथा अनुसंधान कार्य से योगदान करने पर
यह सम्मान पत्र आज दिनांक 21 फरवरी 2021 मातृभाषा दिवस पर प्रदान किया जाता है।
भारतीय विद्या भवन आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

न्यायाधिपति एन. एन. माथुर
अध्यक्ष

प्रो. डॉ. कल्याण सिंह शेखावत
आयोजक / सचिव

Scanned by CamScanner

AICTE Sponsored STTP under AQIS on

Character Building Through Moral Values and Ethics (Phase-I)

March 22-27, 2021

CERTIFICATE OF PARTICIPATION

This is to Certify that

Dr Dhananjaya Amrawat

From

JNV University

has participated in the AICTE sponsored One Week Short Term Training Programme (STTP) on Character Building Through Moral Values and Ethics (Phase-I) Organized by S.S. Jain Subodh PG College, Jaipur held from March 22, 2021 to March 27, 2021.

Prof. K.B. Sharma
Director

Dr. Manish Kaushik
Principal

अध्यक्ष
राजस्थानी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर

Dr. Leena Bhatia
Coordinator

Scanned by CamScanner

S.S. JAIN SUBODH P.G. (AUTONOMOUS) COLLEGE, JAIPUR, RAJASTHAN

3rd Cycle Re-Accredited A++ Grade (3.82 CGPA) by NAAC-UGC
NIRF-MHRD Ranks Among Top 200 Colleges of India
Awarded Status of "College of Excellence" by UGC
College with "Star Status" Recognised by DBT, Govt. of India

INTERNATIONAL FACULTY DEVELOPMENT PROGRAM
on
EMERGING ASPECTS OF RESEARCH METHODOLOGY

1st - 7th February 2021

Certificate of Participation

This is to certify that Prof./Dr./Mr./Ms. Dr Dhananjaya Amrawat *of*

Jai Narayan Vyas University ,Jodhpur ,Rajasthan *has successfully participated in One Week*

International Faculty Development Program on the topic "Emerging Aspects of Research Methodology" organized by

Internal Quality Assurance Cell (IQAC) of Subodh College under the aegis of UGC Paramarsh Scheme.

Prof. (Dr.) K.B. Sharma *Principal* *Brand Ambassador* *UGC Paramarsh Scheme* *Rajasthan*	*Prof.(Dr.) Rajesh Kumar Yadav* *Dean Academics* *(IQAC, Co-Ordinator)*	*Prof. (Dr). Manish Kaushik* *Convener*	*Prof. (Dr.) Ripu Ranjan Sinha* *Organising Secretary*

जयनारायण व्यास
जोधपुर

Scanned by CamScanner

Kamla Nehru College for Women

Jai Narain Vyas Univeristy, Jodhpur

Seven Days Interdisciplinary International

Faculty Development Conclave

September 15- 21, 2020

CERTIFICATE

This is to certify that Dr. Dhananjaya Amrawat

from Department of Rajasthani J.N.V.University, Jodhpur

has successfully completed Seven Days Interdisciplinary International Faculty Development Conclave organised by Kamla Nehru College for Women, Jai Narain Vyas University, Jodhpur from September 15-21, 2020 and has been awarded Grade 'A'

Dr. Rajshree Ranawat
Convener

Prof.(Dr.) Sangeeta Loonkar
Director
Kamla Nehru College for Women
J.N.V.U., Jodhpur

Prof. (Dr.) P. C. Trivedi
Vice Chancellor
J.N.V.U., Jodhpur

अध्यक्ष
राजस्थानी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर

Scanned by CamScanner

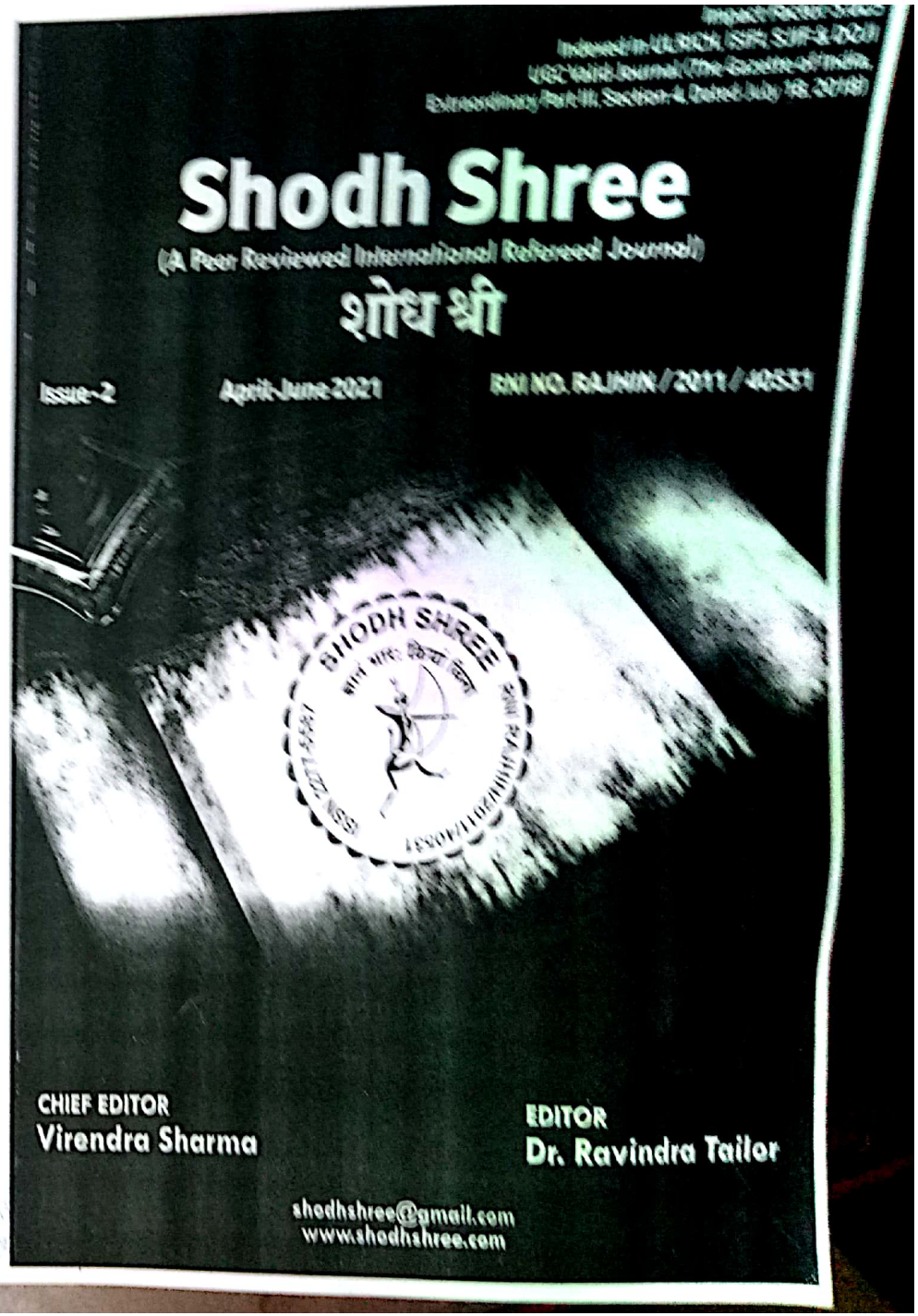

UGC Valid Journal (The Gazette of India,
Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Shodh Shree

(A Peer Reviewed International Refereed Journal)

शोध श्री

Issue-2 April-June 2021 RNI NO. RAJHIN/2011/40531

CHIEF EDITOR
Virendra Sharma

EDITOR
Dr. Ravindra Tailor

shodhshree@gmail.com
www.shodhshree.com

Scanned by CamScanner

ISSN 2277-5587
RNI No. RAJHIN/2011/40531

Shodh Shree

(A Peer Reviewed International Refereed Journal)

Editors take no responsibility for inaccurate misleading data, opinion and statement appeared in the articles published in the journal. It is the sole responsibility of contributors.

©Editors also hold of the copyright of the Journal

Published By
Dr. S. N. Tailor Foundation
Munot Nagar, Beawar (Rajasthan)

To be had from
Shri Virendra Sharma
54-A, Jawahar Nagar Colony
Tonk Road, Jaipur (Rajasthan)

Printed at
Ganesh Printers, Jaipur

Shodh Shree

(A Peer Reviewed International Refereed Journal)

Contents

Volume-39 Issue-2 April-June 2021

1. राजस्थान में आर्थिक परिवर्तन और आदिवासी एवं किसान आंदोलन (1920-1939) — 1-6
डॉ. सज्जन पोसवाल, झालावाड़

2. अवध में खाद्य तथा पेय पदार्थ (1722-1856 ई.) — 7-12
डॉ. चित्रगुप्त, झांसी (उत्तरप्रदेश)

3. नई शिक्षा नीति 2020: विहंगम परिदृश्य — 13-19
डॉ. शालिनी चतुर्वेदी, जयपुर

4. जनपद चमोली में लोक संस्कृति और पर्यटन का वर्तमान समाज तथा अर्थव्यवस्था पर प्रभाव — 20-26
डॉ. हर्षा खण्डूड़ी, चमोली (उत्तराखण्ड)

5. 19 वीं शताब्दी में पश्चिमी राजस्थान के प्रमुख खनिज : एक अध्ययन — 27-30
डॉ. अनिल पुरोहित, जोधपुर

6. आजादी के बाद राजस्थान में भूमि सुधार के सरकारी प्रयास (1947 ई. से 1970 ई. तक) — 31-38
निर्मल शर्मा, जयपुर

7. नरेंद्र कोहली: व्यक्तित्व और कृतित्व — 39-42
दीक्षा गुप्ता, कलकत्ता (पश्चिम बंगाल)

8. सिक्खों के बीकानेर राज्य के साथ सम्बन्ध : ऐतिहासिक अध्ययन (20वीं शताब्दी में) — 43-52
डॉ. रश्मि मीना, जोधपुर

9. पातोला महादेवः भौगोलिक पर्यटन और भौगोलिक सर्वेक्षण का महत्त्वपूर्ण केन्द्र — 53-56
अभिषेक श्रीवास्तव, भीलवाड़ा

10. हिन्दी उपन्यास साहित्य में स्त्री लेखन की परम्परा — 57-61
डॉ. प्रवीण चन्द, जोधपुर

11. मध्यकालीन मारवाड़ में पुरुष एवं स्त्री आभूषण — 62-65
गरिमा, जोधपुर

12. मुंहणोत नैणसी और उनके ऐतिहासिक ग्रंथ : एक अध्ययन — 66-69
डॉ. मीनाक्षी बोराणा, जोधपुर

13. महात्मा गांधी की पत्रकारिता — 70-77
हर्षवर्धन पाण्डे, नैनीताल (उत्तराखण्ड)

14. मारवाड़ के राठौड़ों के प्रारंभिक राजनीतिक इतिहास का विश्लेषणात्मक अध्ययन — 78-80
डॉ. भगवान सिंह शेखावत, जोधपुर

15. पारंपरिक लोक रंगकला के समकालीन स्वरूप का स्त्रीपक्षीय परिपार्श्व : पंडवानी के विशेष संदर्भ में — 81-84
डॉ. अपर्णा वेणु, ओट्टाप्पालम (केरल)

16. जोधपुर का प्राचीन जल स्रोत-शेखावत जी का तालाब — 85-87
डॉ. प्रतिभा सांखला, जोधपुर

Scanned by CamScanner

International Indexed, Peer Reviewed & Refereed Research Journal Related to Higher Education For all Subject

MAY, 2021

Vol-1, ISSUE-05

IMPACT FACTOR 5.901 (SJIF)

SHODH, SAMIKSHA AUR MULYANKAN

ISSN 0974-2832 (Print), E-ISSN- 2320-5474,RNI RAJBIL 2009/29954

Editor in Chief

Dr. Krishan Bir Singh

www.ugcjournal.com

अध्यक्ष
राजस्थानी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर

Scanned by CamScanner

International Level Double Blind Peer Reviewed, Refereed, Indexed Research Journal, ISSN(Print)-0974-2832, E-ISSN-2320-5474 ,RNI-RAJBIL-2009/29954, May-2021, Vol-I, Issue-05
Research Paper - Rajasthani

डिंगळ रा लूंठा कवि पृथ्वीराज राठौड़ अर उणांरी 'वेलि क्रिसन रुकमणी री'

डॉ. मीनाक्षी बोराणा
राजस्थानी–विभाग विभागाध्यक्ष अर सहायक आचार्य जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

राजस्थान री इण पवित्र धरती माथै सुरसत रा कैई लाडलां कवि जलमियां अर आ इमरत झरती आपरी लेखणी सूं राजस्थानी रो काव्य भंडार सिणगारियाँ। राजस्थानी कविसरां री इण परम्परा रा कवि पृथ्वीराज राठौड़ रो जलम बीकानेर रै राजघराणां मे विक्रमी संवत् 1606 मिगसर वदि बीज नै हुयौ। आप राव जैतजी रा पोता अर बीकाणे रा राव कल्याणमल रा बेटा हा। पृथ्वीराज जी निरभिक, स्वाभिमानी, ज्ञानी, वीरता, धीरता, धरमपरायणता सारु जग में चावा हा।

कर्नल टॉड महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ रै बारे में लिख्यो है कै "पृथ्वीराज आपरै जुग रा वीर सामंता में सिरमौड वीर हा अर कलम अर तरवार रा धणी हा। अकबर रा दरबार में आं री खास ठौड़ ही, अकबर रै दरबार रा नवरतना मांय सूं अेक रतन हा।"[1]

सम्राट अकबर भी वांनै बौत चावता हा, पृथ्वीराज जी रै देवलोक हुसा पछै दुखी होय'र अकबर कैयो–

पीथळ सो मजलिस गयी, तानसेन सो राग।
रीझ बोल हंस खेलबो, गयो बीरबल साथ।।

समाज में पृथ्वीराज जी रौ घणौ मान हो अर साहित्यकारां में भी व्हांरी जोरदार धाक ही अर सबसूं मोटी बात आ ही व्हांरौ निडर सुभाव। व्हारै निडर सुभाव रै प्रमाण सारु इण सूं मोटी बात फैरू कांई व्है कै अकबर रै दरबार में रैवतां थकां हिन्दुवां री मान–मरजाद नै राखण खातर–राणा प्रताप नै उकसाया अर हिम्मत बधाई।

महाराणा प्रताप आपरी तरफ सूं कागद लिख'र अकबर सूं समझौतो तो कबूल कर लियौ जद खार खाय'नै पृथ्वीराज जी राणा प्रताप नै दो दूहा पाछा लिख्यां अर वां दूहा सूं राणा रौ सोयोड़ो स्वाभिमान जगायौ अर भूलियोड़ी प्रतिस्ठा पाछी याद दिरायी हार्योडी हिम्मत पाछी जीवती कराई।

कवि महाराणा प्रताप रा दूहा रचना में राणा प्रताप री प्रशंसा में लिखै–

माई ! अेहा पूत जण जेहा राण प्रताप
अकबर सूतउ अउझकइ जाणि सिराणइ सांप।[2]

व्हारै इण कागद री तारीफ करता थकां कर्नल टॉड कैयो है कै 'इण कागद में दस हजार घोड़ा रौ बल है।' कर्नल टॉड आ बात घणी गुमेज सूं अंगेजी कै व्हारी बलवंती कविता रौ फगत अनुभव कर्यो जा सकै है। अनुवाद कोनी कियौ जा सकै।

पृथ्वीराज जी आपरै जीवण नै हर भांत सूं सिणगारी है वै फगत कवि अर–माया रा भोगी ही नीं भगत भी हा। भगती रै बारे में पृथ्वीराज आपरी बाली उमर में ही घणां चावां हुयग्या अर वै आपाणै देस रै नामी भगतां में गिणिजण लाग्या। इण रौ सबसूं लांठो प्रमाण कै नाभादास जी आपरी 'भगतमाल' री भगती रा 'रस बोधनी टीका', 'हरि भगती प्रकाशिका टीका',

अध्यक्ष
राजस्थानी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर

Scanned by CamScanner

राजस्थानी लोक देवी-देवता : परंपरा अर साहित्यिक दीठ

गजेसिंह राजपुरोहित

राजस्थानी ... जयनारायण व्यास वि... जोधपुर

Scanned by CamScanner

11. राजस्थानी लोकदेवी-देवता : सामाजिक परंपरा और विश्वास
-डॉ. धीरज कुमारी राठौड़ ... 100

12. लोकदेवता गोगाजी से सम्बन्धित रसावला एवं नीसांणी साहित्य
-डॉ. अनिल गारू ... 106

13. साम्प्रदायिक सद्भाव के प्रतीक : बाबा रामदेव
-डॉ. सोहनराम ... 109

14. दलितों के मसीहा बाबा रामदेव
-डॉ. रेहाना बेगम ... 112

15. राजस्थानी लोक देवी-देवताओं का सामाजिक समरसता में योगदान
-डॉ. इकबाल फातिमा ... 115

16. लोकदेवी भगवती श्री बिरवड़ी जी का इतिवृत्त
-महेन्द्रसिंह सिसोदिया ... 120

17. मेड़ता के इतिहास पुरुष वीर कल्लाजी राठौड़ : एक अनुशीलन
-कमल किशोर ... 123

खण्ड-ख

18. लोक आस्था रा परयाय : जूंझार गिरधर व्यास
-डॉ. चांदकौर जोशी ... 131

19. राजस्थान रा लोक देवी-देवतावां री लोक में मानता अर विस्वास
-डॉ. ज़ेबा रशीद ... 137

20. लोक आस्था री देवी : कैवाय माता
-श्रीमती बसंती पंवार ... 153

21. राजस्थानी साहित्य री भगती-सम्पदा : सगती-काव्य
-डॉ. प्रकाश अमरावत ... 158

22. प्रण रै पांण पूजीजै पाबू
-डॉ. गजादान चारण 'शक्तिसुत' ... 173

23. राजस्थानी लोक साहित्य अर लोक देवी-देवता
-डॉ. सुरेश सालवी ... 178

24. लोक साहित्य मांय लोक देवी-देवतावां रौ लोक कल्याणकारी रूप
-किशोर कुमार निर्वाण ... 199

25. लोक गाथावां में लोक देवतावां रौ सरूप
-डॉ. मीनाक्षी बोराणा ... 194

26. वीर तेजाजी : जीवन मूल्य अर लोकसाहित्य
-डॉ. रामरतन लटियाल ... 199

27. आखै मानखै सारू जांभोजी रा उपदेश
-डॉ. हरिराम बिश्नोई ... 207

28. राजस्थान रा लोकदेवता अर लोक-कल्याण
-डॉ. गौरीशंकर प्रजापत ... 212

29. जांभोजी अर जंभ वाणी : अेक दीठ
-डॉ. इन्द्रदान चारण ... 220

30. इस्लाम अर लोक देवता री अवधारणा
-वाजिद हसन काज़ी ... 228

31. सांस्कृतिक समरसता रा प्रणेता : लोकदेवता पाबूजी
-डॉ. भंवरसिंह भाटी ... 233

32. गवर (गणगौर) : धारमिक, अैतिहासिक अर सांस्कृतिक दीठ
-डॉ. नमामीशंकर आचार्य ... 241

33. राजस्थान रा लोक देवी देवता अर रोग निवारण मांय उणां रौ योगदान
-भागीरथदान ... 250

34. गोगाजी री लोकगाथा मांय चित्रित समाज अर संस्कृति : अेक दीठ
-डॉ. रणजीतसिंह चौहान ... 255

35. आई माता रै अलोप हुयां बाद रा परचा
-डॉ. मनोजसिंह ... 261

36. प्रणवीर पाबू राठौड़ : अेक दीठ
-डॉ. किरण आर. व्यास ... 267

अध्यक्ष
राजस्थानी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर

Scanned by CamScanner

अध्यक्ष
राजस्थानी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर

Scanned by CamScanner

हथाई
राजस्थानी री तिमाही

अक्टूबर-दिसंबर, 2021
बरस : छह, अंक : तीन

ISSN 2456-2440
Hathayi

गांधी विशेषांक-2

संपादक
भरतसिंह ओळा

प्रबंध संपादक
लक्ष्मीनारायण कस्वां
जयदीप डूडी
देवकीनंदन जाजू
सत्यपाल शर्मा
ओमप्रकाश कारेला

उप संपादक
शंकरसिंह राजपुरोहित

बतळावण
पूर्ण शर्मा 'पूरण'
रामेसर गोदारा 'ग्रामीण'

आवरण
रमेश शर्मा, बीकानेर

प्रकाशक
राजस्थानी लोक संस्थान
37, सेक्टर नं. 5, नोहर
(हनुमानगढ़) राजस्थान-335523
दूरभाष : 01555-221893
email: editorhathai@gmail.com

सालीणा : 200 रुपिया
पांच सालीणा : 1000 रुपिया
(डाक सूं पत्रिका प्राप्त करण सारू कम सूं कम पांच साल री सैयोग राशि जरूरी)

बिणज-विहूणौ छापौ
सगळा पद बिना पगार

हथाई री विगत

□जोगलिखी

म्हैं गांधी बोलूं	*भरत ओळा*	2

□सिद्धश्री

सरबगुणी राजस्थानी भासा तिरस्कार री सिकार	*डी. एन. जाजू*	3

□आलेख

गांधीजी री अनूठी जीवण-कथा 'साच रा प्रयोग'	*नन्द भारद्वाज*	6
सात समंदर धज सूं बोल्या...	*डॉ. आईदानसिंह भाटी*	10
सदावरती महात्मा गांधी अर उपवास	*डॉ. अनुश्री राठौड़*	12
महात्मा गांधी रै चिंतन री प्रासंगिकता	*किशोर कुमार निर्वाण*	14
गांधी बाबा रौ त्याग अर बलिदान	*प्रो. जी.अेस. राठौड़*	16
मायड़ भासा अर महात्मा गांधी : अेक दीठ	*डॉ. मीनाक्षी बोराणा*	19
राजस्थानी साहित्य में गांधी-गाथा	*जेठनाथ गोस्वामी*	21

□उल्थालेख

नीं संत, नीं पापी *(मूळ : महात्मा गांधी)*	*उल्थौ : डॉ. चेतन स्वामी*	23
साच री जड़ *(मूळ : मोहनदास करमचंद गांधी)*	*उल्थौ : दुलाराम सहारण*	26
म्हारै सुपनां रौ भारत *(मूळ : महात्मा गांधी)*	*उल्थौ : रमेश बोराणा*	31

□कविता

अहिंसा / जीत / अेकर पाछा / करां कांई	*चन्द्रप्रकास देवल*	34
बापू होवता तो... (छह कवितावां)	*ओम नागर*	35
गांधी	*अर्चना राठौड़*	36

□व्यंग्य

गांधीजी री बेहोसी	*डॉ. मंगत बादल*	37
बाबै री सरणां	*छत्र छाजेड़ 'फक्कड़'*	43
गांधी-सीर	*पूर्ण शर्मा 'पूरण'*	45

□कूंत

राजस्थानी कवियां री वाणी मांय 'आजादी रा भागीरथ : गांधी'	*डॉ. मदन सैनी*	47

सगळा भुगतान **'हथाई'** रै नांव सूं करीजै।
भारतीय स्टेट बैंक, नोहर
ऑन लाइन खाता सं. 36960100223 IFSC कोड SBIN 0032270

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक राजस्थानी लोक संस्थान, 37, सेक्टर नं. 5, नोहर (हनुमानगढ़) राजस्थान-335523 सारू अध्यक्ष राजस्थानी लोक संस्थान अर संपादक भरतसिंह ओळा कानी सूं छपाईजी अर खत्री ऑफसेट, वार्ड-15, पुराणै गुरुद्वारै रै कनै, नोहर सूं छपी।

'हथाई' में आया विचार लेखकां रा निजू। संपादक री हामळ जरूरी नीं। किणी पण विवाद रौ न्याय-खेत्र नोहर (हनुमानगढ़) हुसी।

Scanned by CamScanner

म्हैं गांधी बोलूं

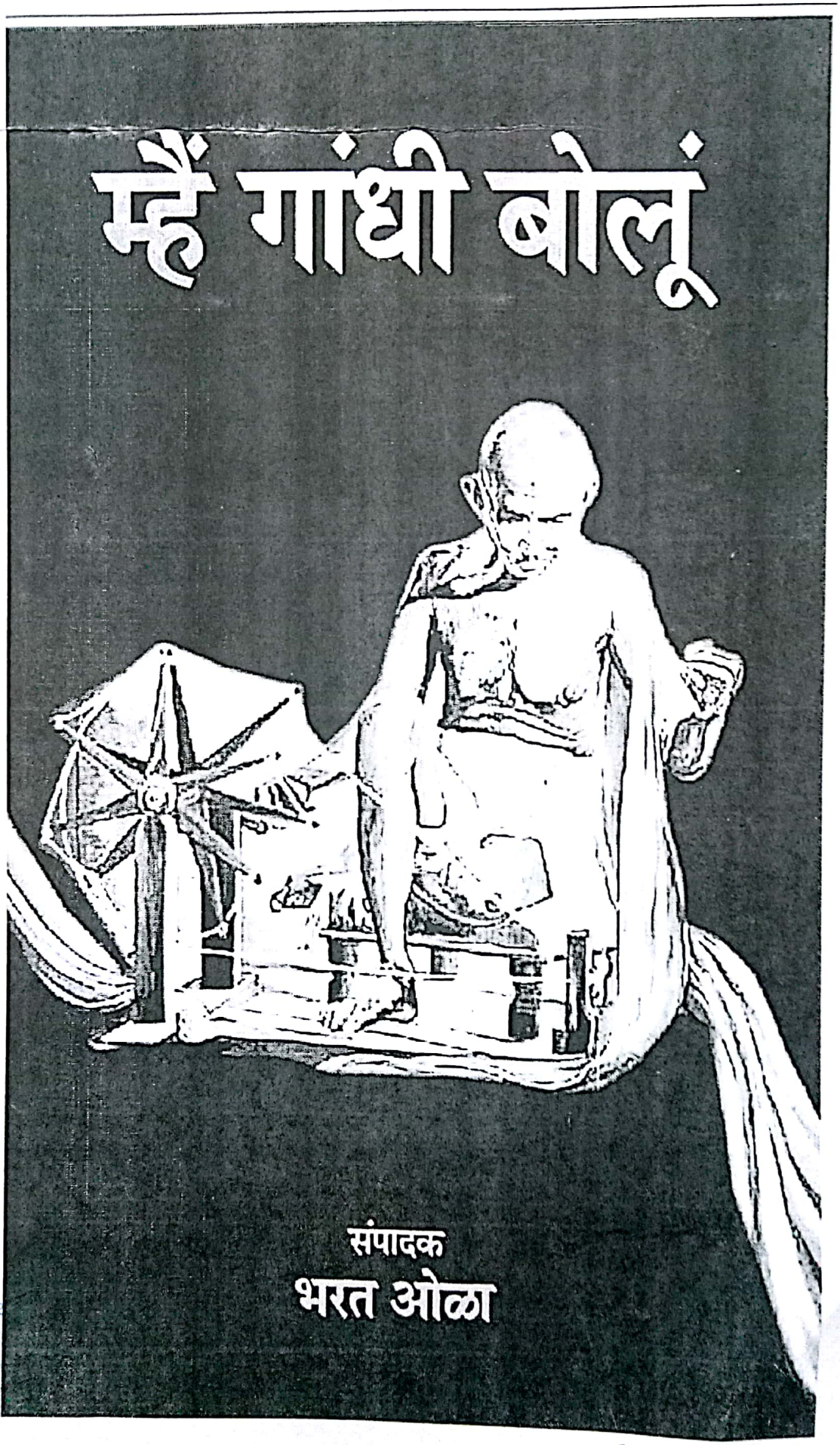

संपादक

भरत ओळा

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

5/178

ISBN : 978-81-946065-2-9

© डॉ. भरतसिंह ओला

प्रकाशक :

राजस्थानी लोक संस्थान

37, सेक्टर नं. 5, नोहर

(हनुमानगढ़) राजस्थान-335523

दूरभाष : 01555-221893

email: editorhathai@gmail.com

पैलौ फाळ : 2021

मोल : दो सौ रुपिया

आखरसाज : शंकरसिंह राजपुरोहित

पूठै रो चित्राम : राधेश्याम कोटी

राजस्थानी लोक संस्थान, नोहर (हनुमानगढ़) सारू कल्याणी प्रिंटर्स, बीकानेर रै छापाखानै मांय छपी।

Mhen Gandhi Bolun (Rajasthani)

Edited by **Bharat Ola**

अध्यक्ष
राजस्थानी विभाग
जनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर

Publisher : Rajasthani Lok Sansthan, Nohar (Hanumangarh) Rajasthan 335523

First Edition 2021 • **Price : 200.00**

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

16. अेम. के. गांधी — भूपेन महापात्र (ओड़िया) — उल्थौ : मनोहर सिंह राठौड़ — 84
17. आज भी प्रासंगिक है गांधीजी रौ शिक्षा-दर्शन — ममता परिहार — 89
18. महात्मा गांधी : अेक सबदांजळी — माणक तुलसीराम गौड़ — 92
19. गांधी : साहस, सापेक्ष साच अर विरोधाभास — माधव नागदा — 97
20. महात्मा गांधी रा कीं प्रसंग — डॉ. राम मनोहर लोहिया — उल्थौ : मालचंद तिवाड़ी — 102
21. गांधी अर पर्यावरण नै परोटण री अवधारणा — डॉ. मीना कुमारी जांगीड़ — 111
22. मायड़ भासा अर महात्मा गांधी : अेक दीठ — डॉ. मीनाक्षी बोराणा — 115
23. म्हारै सुपनां रौ भारत — महात्मा गांधी — उल्थौ : रमेश बोराणा — 118
24. अेक धरम रौ नांव है—महात्मा गांधी — राजेन्द्र शर्मा 'मुसाफ़िर' — 121
25. राजस्थानी काव्य अर महात्मा गांधी — डॉ. लक्ष्मीकांत व्यास — 128
26. गांधी मानवाधिकारां को शिलालेख — डॉ. लीला मोदी — 134
27. काया रौ कुदरती उपचार : गांधीजी रा प्रयोग — डॉ. विजय कुमार पटीर — 141
28. महात्मा गांधी अर महिला-उत्थान — ले. (डॉ.) विजयलक्ष्मी शर्मा — 149
29. महात्मा गांधी री बेजोड़ आगीवाणी — पास्कल अेलन नाज़रेथ — उल्थौ : शंकरसिंह राजपुरोहित — 153
30. महात्मा गांधी री नारीवादी दीठ — डॉ. शारदा कृष्ण — 160
31. बापू नै देस री बेटी रौ कागद — संतोष चौधरी — 165
32. अेक अेकलौ दीवलौ, जग्यौ समूळी रात — सुनीता बिश्नोलिया — 171
33. मातृभासा में भणाई रा हिमायती गांधीजी — सुरेन्द्र कुमार — 173

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

Jijñāsā जिज्ञासा

A *Journal of the History of Ideas and Culture*

UGC Care Listed Journal
A Peer-reviewed/ Refereed National Journal
ISSN: 0377-743-X

Vol. XXVII-XXVIII 2020-2021

Chief Editor
Dr. Pramila Poonia
Head, Department of History and Indian Culture
University of Rajasthan, Jaipur

Associate Editor
Dr. Sangeeta Sharma
Dr. Neekee Chaturvedi
Associate Professor
Mr. Mahesh Kumar Dayma
Assistant Professor

Assistant Editor
Dr. Anil Aaniket
Dr. Ritu Punia
Assistant Professor

Department of History and Indian Culture
University of Rajasthan, Jaipur, India

अध्यक्ष
राजस्थानी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर

Scanned by CamScanner

22	बुद्धकालीन समाज में विवाह एवं विवाह विच्छेद : एक ऐतिहासिक अध्ययन डॉ. निर्मला कुमारी मीणा	154-160
23	पश्चिमी राजस्थान में दुर्भिक्षों *(काळों)* की पीड़ा : *'लोकगीतों'* एवं *'अखाणों'* के विशेष संन्दर्भ में डॉ. तमेघ पंवार	161-169
24	किराडू मन्दिर समूह के मूर्तिशिल्प में उमा-माहेश्वर डॉ. महेन्द्र चौधरी	170-174
25	मराठी भक्ति-आन्दोलन में स्त्री संतों की ऐतिहासिक भूमिका डॉ. जगदीश गिरी	175-183
26	राजस्थानी लोक साहित्य की नये स्थानीय इतिहास लेखन में उपादेयता : एक अनुशीलन रामदेव जाट	184-190
27	'उत्तराध्ययन-सूत्र' की सचित्र पाण्डुलिपियों में इतिहास आमेलन डॉ. राजेन्द्र प्रसाद	191-194
28	राजस्थानी काव्य में गांधीवादी चिंतन डॉ. मीनाक्षी बोराणा	195-199
29	भारत में संसदीय समितियों का इतिहास एवं वर्तमान में भूमिका डॉ. मुकेश कुमार वर्मा	200-212
30	हिन्दी नवजागरण और राष्ट्रवाद डॉ. विशाल विक्रम सिंह	213-217
31	भारत में पंचायती राज व्यवस्था का ऐतिहासिक दृष्टि से अवलोकन डॉ. अमित कुमार यादव	218-221
32	ऐतिहासिक ज्ञान का एक स्रोतः कला डॉ. रीतिका गर्ग	222-225
33	कुल देवी श्री करणी माता : बीकानेर राजवंश की धार्मिक आस्था का प्रतीक डॉ. अर्चना शर्मा	226-230

अध्यक्ष राजस्थानी विभाग जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर

Scanned by CamScanner

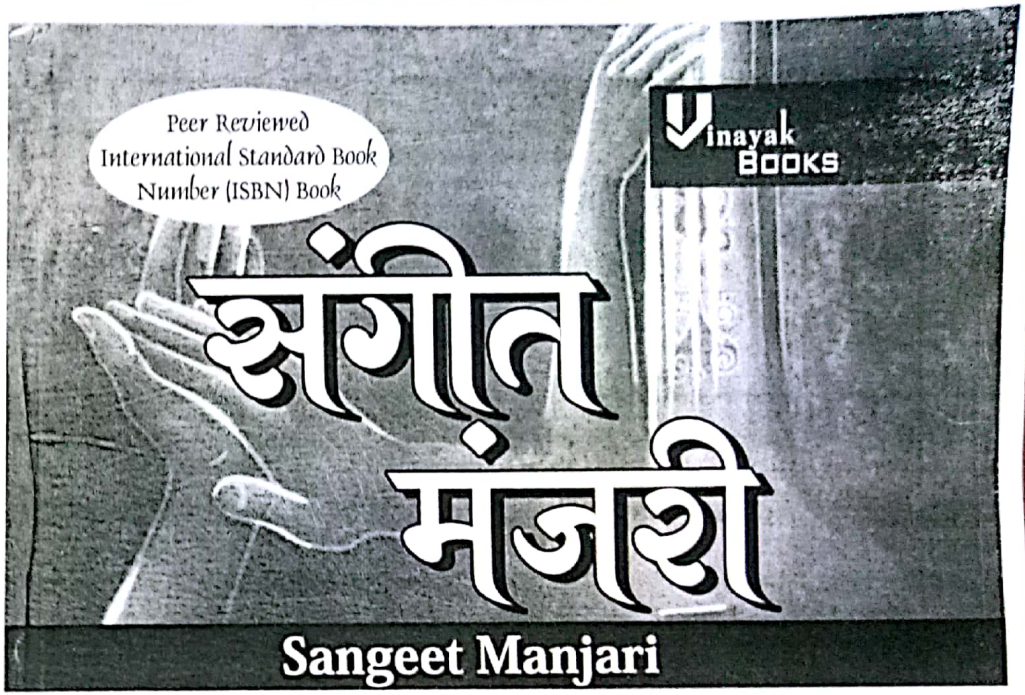

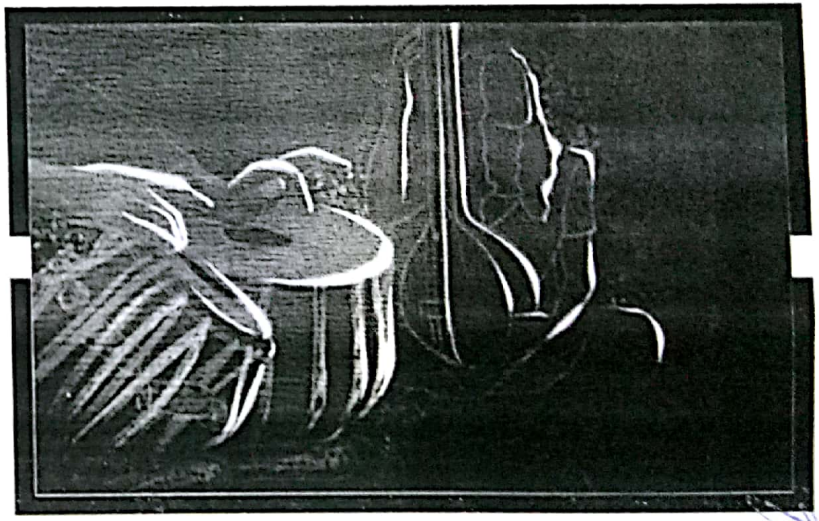

Vinayak BOOKS

Peer Reviewed
International Standard Book
Number (ISBN) Book

संगीत मंजरी

Sangeet Manjari

डॉ. गौरव शुक्ल
डॉ. स्वाति शर्मा

श्री विनायक पब्लिकेशन, आगरा

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

क्रं.	अध्याय नाम	पृष्ठ संख्या
1.	वर्तमान समय में संगीत शिक्षण के प्रभावशाली आयाम	13
2.	वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में संगीत-शिक्षण का स्वरूप	18
3.	नाद विमर्श (संगीतशास्त्र एवं योगदर्शन के विशेष संदर्भ में)	22
4.	नाद साधना	27
5.	वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में संगीत शिक्षण का स्वरूप	31
6.	डॉ. सत्यभान शर्मा जी की दृष्टि से : पुष्टिमार्गीय शिक्षण पद्धति और आधुनिक शिक्षण पद्धति का विश्लेषणात्मक अध्ययन	36
7.	वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में संगीत शिक्षण का स्वरूप	40
8.	वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में संगीत शिक्षण का स्वरूप	44
9.	वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में संगीत शिक्षण का स्वरूप	47
10.	राग-रागिनीयों का चित्रों से संबंध	51
11.	वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में संगीत शिक्षण का स्वरूप	59
12.	वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में संगीत शिक्षण का बदलता स्वरूप और संभावनायें	62
13.	वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में संगीत शिक्षण का स्वरूप	68
14.	वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संगीत व्यवसाय के दृष्टव्य होते विभिन्न आयाम	71
15.	वर्तमान समय में संगीत शिक्षण का बदलता स्वरूप	82
16.	वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में संगीत शिक्षण का स्वरूप	86
17.	प्राचीन एवं आधुनिक संगीत शिक्षण पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन	90
18.	वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में संगीत शिक्षण का स्वरूप	98
19.	वर्तमान में शास्त्रीय संगीत शिक्षा का स्वरूप (ख्याल के विशेष सन्दर्भ में)	101
20.	लोकदेवता पाबूजी की फड़ और उसकी गेयता	105
21.	अष्टांग योग साधना एवं संगीत साधना का अंतः सम्बन्ध	112
22.	वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में संगीत शिक्षण का स्वरूप	118
23.	आधुनिक सन्दर्भ में संगीत की परिभाषा	123
24.	महाराष्ट्र के विभिन्न भक्तिसम्प्रदाय की परम्परा एवं शैली	125
25.	Aspects of Online Music Education System in Present Perspective	131
26.	Master's Presence and the Garment of Tradition	137
27.	Music Teaching Techniques	143
28.	Efficiancy of Music in Education	146
29.	Is known for the ages for its performing arts-whether it may be dance, music, and theatre or modern art form. Indians are transcending Music and Musical instruments depicted in Indian Sculpture and Iconography	149
30.	डिजिटल प्रौद्योगिकी के दौर में भारतीय शास्त्रीय संगीत : एक विश्लेषण	159
31.	हिन्दी फिल्म संगीत में शास्त्रीय संगीत की भूमिका	166
32.	वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में शिक्षण का स्वरूप	175

Scanned by CamScanner

2. ऋषितोष डॉ. कुमार, संगीत शिक्षण के विविध आयाम, पृ. 20, कनिष्क पब्लिशर्स, नई, दिल्ली, 2010।

3. उत्तर भारतीय संगीत का संक्षिप्त इतिहास, भातखण्डे पृ. 25, संगीत कार्यालय, हाथरस, उ. प्र. जुलाई, 1954।

4. ग्वालियर के तोमर, लेखक हरिहर निवास द्विवेदी पृ. 302, विद्या मन्दिर प्रकाशन ग्वालियर।

5. म. प्र. जिला गजेटियर ग्वालियर लेखक—व. सु. कृष्णन, पृ. सं. 378 जिला गजेटियर विभाग, म. प्र. 1968।

6. भारतीय संगीत एक ऐतिहासिक विश्लेषण, डॉ. स्वतंत्र शर्मा पृ. 108, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1988।

7. संगीत बोध—श्री श्रीधर शरच्चंद्र परांजपे पृ. 115, म. प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, चतुर्थ संस्करण 1992।

8. भारतीय संगीत का इतिहास उमेश जोशी पृ. 348, मानसरोवर प्रकाशन महल फिरोजाबाद, आगरा उ. प्र. चतुर्थ संस्करण 1984।

9. घरानों की चर्चा, डॉ. सुशील कुमार चौबे पृ. 19, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, उ. प्र. 1977।

10. महान मुगल अकबर, विनसेंट ए स्मिथ पृ. 456।

20

लोकदेवता पाबूजी की फड़ और उसकी गेयता

डॉ. मीनाक्षी बोराणा

सहायक आचार्य व अध्यक्ष, (राजस्थानी विभाग)

जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

भारतीय वाङ्मय में कला एवं साहित्य को दो रूपों में विभाजित किया गया है एक शास्त्रीय रूप तथा दूसरा लोक रूप राजस्थानी लोक साहित्य की अपनी समृद्ध परम्परा रही है। अनादि काल से ही इसके माध्यम से राजस्थानी समाज जहाँ स्वयं को अभिव्यक्त करता रहा है वहीं उससे प्रेरणा भी लेता रहा है। राजस्थानी समाज और संस्कृति में व्याप्त जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा इस साहित्व का ध्येय रहा है। लोक गीत, लोक कथा एवं लोक नाट्य की अलग-अलग विधाओं में इस समाज की सांसों की सुगन्ध प्रवाहित होती है। राजस्थान के जनजीवन का कोई कार्य बिना लोकगीतों के सम्पन्न नहीं हो सकता तथा उसी समाज के अनुभव ने लोककथाओं को अभिव्यक्ति दी है। वस्तुतः लोक साहित्य यहाँ के मनुष्य को प्रेरणा देता आया है और इसी कड़ी में सबसे प्रमुख स्वरूप जिस विधा का प्रकट होता है वह है लोकनाटय। अपनी प्रस्तुतिपरकता के कारण वे समाज का मनोरंजन भी करते रहे और उसकी अभिव्यक्ति का साधन भी बने रहे। राजस्थान में लोकनाट्यों के कई रूप प्रचलित हैं। ख्याल, गवरी, पड़, रम्मत, तुर्रा कलंगी एवं कठपुतली इनमें प्रमुख हैं। इनमें से कुछ नाट्य अपने आनुष्ठानिक स्वरूप के कारण तो कुछ विशुद्ध मनोरंजनात्मक पहलू के कारण लोगों के आकर्षण का केन्द्र बने रहे हैं। हम कह सकते हैं कि लोकनाट्य सामाजिक चेतना की रचनात्मक अभिव्यक्ति का प्रदर्शनात्मक रूप हैं। साहित्य की अन्य विधाओं की तुलना में इसमें

Scanned by CamScanner

₹20

जागती जोत

बरस : 48 *अंक : 4-5 * जुलाई-अगस्त, 2020
राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी री मासिक पत्रिका

गुरु जांभोजी विशेषांक

www.rbssa.artandculture.rajasthan.gov.in ISSN : 2319-3603
डाक पंजीयन संख्या : बीकानेर/161/2019-21

15 YEARS OF

Scanned by CamScanner

विगत

संदेश 3

अध्यक्ष री कलम सूं 4

सम्पादक री बात 6

आलेख

गुरु जांभोजी अर प्रवृत्ति दरसण
• डॉ. मदन केवलिया 09

इतिहास री दीठ सूं गुरु जांभोजी
• डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई 16

मिनख, जिनावर, रूंखां रा रखवाला गुरु जांभोजी
• रामनिवास शर्मा 27

जांभोजी रो सहज जीवण दर्शन
• चेतन स्वामी 30

लोककल्याण अर जांभोजी री वाणी
• डॉ. मदन सैनी 34

जांभोजी अर सबद-वाणी
• डॉ. रमेश मयंक 40

मुरधर री जिगमिग जोत- जांभोजी
• शंकर लाल विश्नोई 44

सतगुरु जांभोजी अलख जगायो
• हरमन चौहान 49

डिंगळ काव्य में जंभेसर जस
• गिरधरदान रतनू दासोड़ी 52

जीवण मूल्य अर जांभोजी री वाणी
• डॉ. विजयलक्ष्मी शर्मा 59

आधुनिक जुगबोध अर जांभोजी
• डॉ. मीनाक्षी बोराणा 62

भगती आंदोलन अर गुरु जांभोजी रो साहित्य
• नरपतसिंह सांखला 66

देवां रा देव अर पीरां रा पीर : गुरु जांभोजी
• कमला बिश्नोई 71

गुरु चिन्हो : गुरु चिन्ह पुरोहित
• प्रमोद कुमार शर्मा 76

गुरु जम्भेश्वर अर विश्नोई पंथ री मूल मान्यतावां
• डॉ. गौरीशंकर प्रजापत 79

आत्मसंबळ बढ़ावण वाळी जम्भेश्वर जी री वाणी
• डॉ. हरिराम बिश्नोई 84

जाम्भाणी काव्य परंपरा रै मांय दार्शनिक चेतना
• डॉ. मनमोहन लटियाल 87

गुरु जांभैसर महाराज रो विसन जप रो संदेश
• मोईनुदीन कोहरी 94

गुरु जांभोजी : संत भी, कवि भी
• शीला मिश्रा 96

पाखंड-विरोध अर जांभोजी
• हरिप्रसाद पारीक 100

गुरु जांभोजी, बिश्नोई पंथ अर इतिहास रा कीं खास ग्रंथ
• अभिनव बिश्नोई 103

विष्णु अवतार सद्गुरु जंभेश्वर भगवान
• दीपसिंह भाटी 106

आत्म सूँ परमात्म री दीठ रौ नाम है जम्भ वाणी
• डॉ. प्रकाश दान चारण 109

समराथल रौ सांवरौ
• महेन्द्र कुमार जांगिड 111

गुरु जांभोजी : परियावरण री दीठ सूं
• शिवशंकर जोशी 113

कविता

गुरु जांभोजी
• डॉ. विनोद सोमानी 'हंस' 115

दी सीखां जांभोजी
• गोपीनाथ पारीक 'गोपेश' 116

तीन सौ तिरसठ दियो बलिदान
• जयप्रकाश 117

दो कवितावां
• राजेन्द्र स्वर्णकार 118

धरती ने स्वर्ग बणायो है
• लीलाधर सोनी ''सिंजगुरु'' 120

दूहा

आया विसन भगवान
• पवन पहाड़िया 122

दूहा
• इन्द्र कुमार छंगाणी 125

जम्भ पच्चीसी
• शिवराज भारतीय 127

हाईकू

विश्नोई नियमावळी रा हाईकू
• रमेश मिर्धा 'रसिक' 129

गीत

सुण सुण रे धरती रा मानव
• मांगीलाल अग्रवाल 130

राजस्थानी समाचार 132

 ISSN : 2319-3603

आलेख

गुरु जांभोजी अर प्रवृत्ति दरसण

डॉ. मदन केवलिया

विश्नोई पंथ रा संस्थापक, पर्यावरण अभियान रा प्रेरक, *'सबद वाणी'* रा स्रष्टा, मिनखाचारे रा समर्थक, जीवण री अबखायां रा समाधानकर्ता गुरु जांभोजी रौ अवतरण 1451 ई. में नागौर परगना (अनेकूं गांवां रा भू-भाग) रै पीपासर गाँव में लोहट जी-हांसादेवी रै घर में हुयो। वांरौ अवतरण भी भगवान श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (भादो बदी आठम) नै हुयो।

राजनीति री दीठ सूं 14वीं-15वीं शती घणी कलाळा हूंकळ री ही। लोदी वंश (बहलोल, सिकंदर, इब्राहिम) दिल्ली रा शासक हा। सिकंदर लोदी सूं गुरु जांभोजी री भेंट भी हुवी ही अर सिकंदर नै जीव हत्या ना करणै रौ उपदेश भी गुरु जांभोजी दियो हो। नागौर रै सूबेदार मुहम्मद खां नागौरी नै भी उपदेस दियो। बीकानेर रै राव लूणकरण नै भी बीं बखत उपदेश दियो हो।

जांभो जी सूं मिलण नै जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, कन्नौज आद रा राजा-महाराजा भी पधार्या हा। मारवाड़ री थरपणा राव जोधाजी 1458 ई. अर बां रै पुत्र बीकाजी बीकानेर री थरपणा 1488 ई. में करी। हिंसा रोकणै सारू गुरु जांभोजी बरोबर प्रयास कर्यो -

सुण रे काजी, सुण रे मुल्ला, सुण रे बकर कसाई।
किण री थरपी छाळी रोसो, किण री गाडर गाई।

(सबद-8)

भाई नाऊं बलद पियारो, ताकै गले करद क्यूं सारो।

(सबद-9)

'सबद वाणी' में जागा-जागा हिंसा रौ विरोध है अर अहिंसा रौ समर्थण।

समाजू थिति चोखी नीं ही। समाज जाति, उपजाति आद में बंट्योड़ो हो। जातिप्रथा तो इण देस री दुर्गति रौ कारण आज भी है। समाज में शासक वर्ग अर शासित वर्ग हा। शासक (उच्च) वर्ग में सुलतान, महाराजा-राजा, महाराणा-राणा, राव, जमींदार, सूबेदार इत्याद लोग हा, जदकै शासित (मध्यम-निम्न) वर्ग में व्यापारी, दुकानदार, किसान, मजदूर स्सै जणा आय जावै। स्सै वर्गा रो उल्लेख *'सबद वाणी'* में हुयो है।

बीं बखत बाल विवाह, अंधविश्वास, रूढियां आद घणी ही। मरद अर लुगाई में भी भेद कर्यो जावतो हो। गुरु जांभो जी कैयो है - ***'उत्तम मध्यम क्यों जाणीजे, विवरस देखो लोई।'*** (रंग, गुण, लोई में दोन्यू बरोबर है, फेर उत्तम मध्यम रौ भेद क्यूं?)

धार्मिक थिति- बीं बखत हिन्दू, मुस्लिम, जैन लोग हा अर घणां मत-मतांतर हा। सनातन धरम सारू गुरु जांभोजी कैयो- *'थे चानणे थके अंधेरे क्यों*

ISSN : 2319-3603

अध्यक्ष राजस्थानी विभाग ... विश्वविद्यालय

Scanned by CamScanner

IMPACT FACTOR-SJIF-6.424, GIF-2.2042, ISSN-2454-6283 16 अगस्त, 2020

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

तिमाही शोध-पत्रिका PEER Reviewed JOURNAL

Special International webinar ISSUE

राम तुम्हारा चरित्र स्वयं काव्य हैं ....!

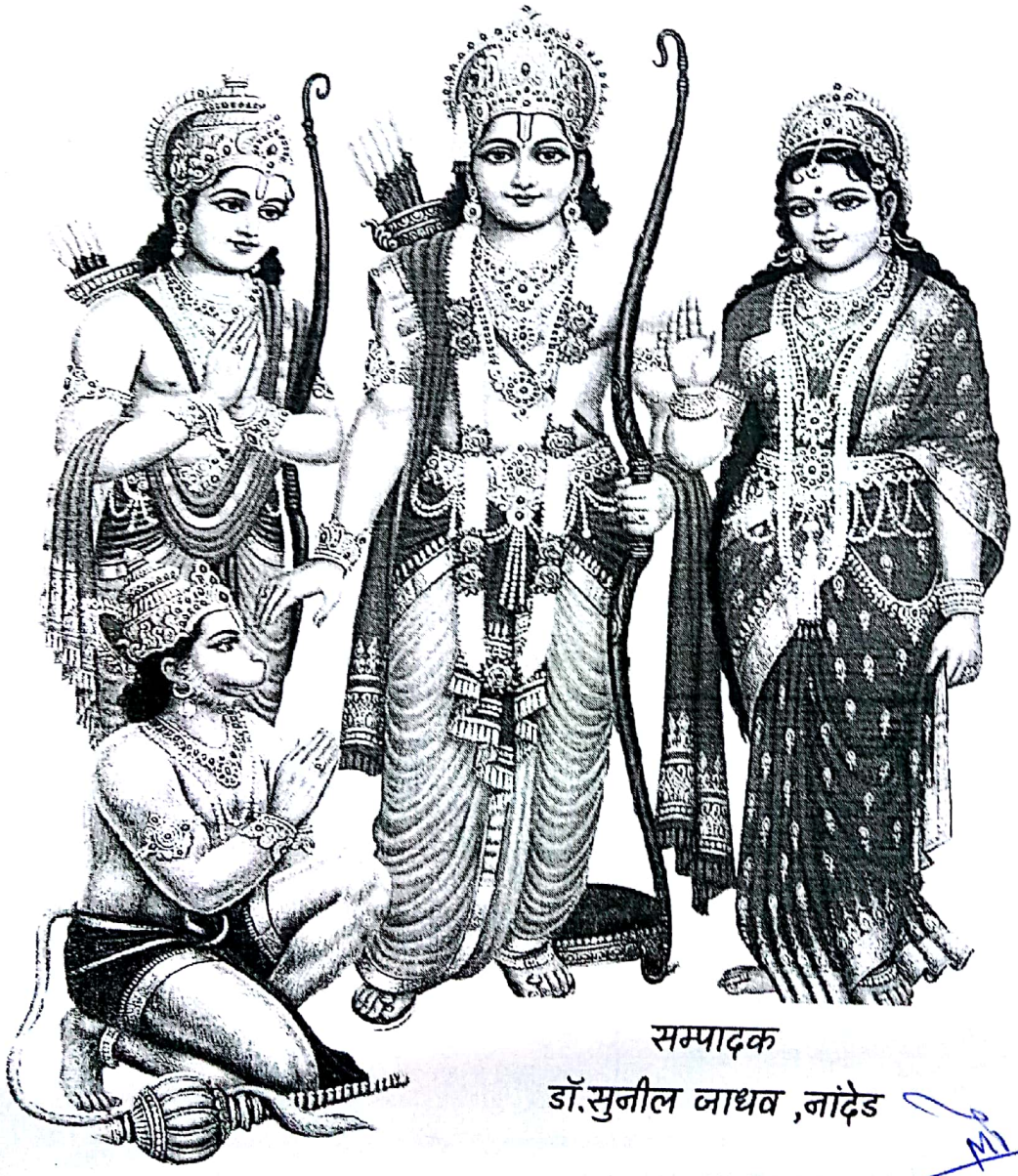

शोध-ऋतु Shodh-Ritu

सम्पादक

डॉ.सुनील जाधव ,नांदेड

अध्यक्ष
राजस्थानी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर

Scanned by CamScanner

18.राजस्थानी भक्त कवि ईसरदास बारहठ और उनका हरिरस (राम भक्ति के विशेष संदर्भ में)

डॉ. मीनाक्षी बोराणा
सहायक आचार्य व अध्यक्ष, राजस्थानी विभाग,
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)

भक्ति' शब्द की व्युत्पत्ति 'भज्' धातु से हुई है जिसका अभिप्राय 'भजना' है। इसका दूसरा अर्थ 'भय युक्त आसक्ति' भी है। भक्ति ही वह शक्ति है जो भगवान और भक्त के बीच रागात्मक संबंध स्थापित करती है। बिना किसी सामग्री का आश्रय लिए ब्रह्म द्वारा 'एको बहुस्याम' कहते ही सृष्टि का सृजन हो जाता है। विश्व के सभी धार्मिक ग्रंथों में परब्रह्म की इस अव्यक्त सत्ता का किसी न किसी रूप में उल्लेख अवश्य मिलता है। भारतीय भक्ति–संप्रदाय का आदि स्रोत ऋग्वेद है। यहाँ कुछ मंत्रों में आदमी और देवता के बीच गाढ़े प्रेम व मित्रता की कल्पना की गई है।

भारत में शताब्दियों से ब्रह्मा, विष्णु और महेश इन त्रिदेवों की कल्पना करके भक्ति का उदय हुआ था। यह भक्ति भागीरथी सगुण तथा निर्गुण दोनों भक्ति धाराओं में अद्यावधि प्रवाहित होती रही है। भक्ति की इस त्रिवेणी में भगवान विष्णु और उनके अवतार सर्वाधिक लोकप्रिय हुए, जिसमें मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम तथा नीति–प्रणेता श्रीकृष्ण ने भी भारतीय साहित्य तथा इतिहास को ही नहीं अपितु संपूर्ण वाङ्मय को सर्वाधिक प्रभावित किया है। साहित्यिक दृष्टि से राम का प्राचीनतम उल्लेख शोधकर्त्ताओं ने वाल्मीकि रामायण में ही माना है, महाभारत के प्राचीनतम अंशों में भी राम का उल्लेख मिलता है। भारतीय संस्कृति के उज्ज्वलतम प्रतीक है राम। वे मर्यादा पुरुषोत्तम रहे है। गीता में भी कृष्ण ने अपने को राम का अवतार माना है। कृष्ण का अवतार गो, ब्राह्मण, देवताओं की रक्षा के उद्देश्य से माना गया है।

वि. सं. 833 तक आधुनिक राजस्थानी भाषा प्राचीन मरुभाषा के रूप में प्रसिद्ध हो चुकी थी। तब से लेकर अब तक लगभग 1200 वर्षों में राजस्थानी भाषा में विविध विधाओं में बहुत साहित्य लिखा गया है। यह साहित्य रामकथा साहित्य से भी प्रभावित हुआ। डॉ. कल्याणसिंह शेखावत के अनुसार–"राजस्थानी रो कवि या साहित्यकार इण महान चरित गाथा रै प्रभाव सूं कियां अछूतो रैवतो आ ही वजै है के राजस्थानी भाषा अर उणांरा साहित्य में श्रीराम रे जस रो गान सैकडां पोथ्यां में हुयो है।"

रुक्मिणी को सीता का अवतार माना गया है। भक्त कवि पृथ्वीराज राठौड़ ने अपनी कृति 'वेलि क्रिसन रुक्मणी री' में रुक्मिणी को लक्ष्मी का अवतार मान कर 'रामावतार नाम ताई रुक्मिणी' कह कर संबोधित किया है।[1]

राजस्थानी में रामकथा साहित्य–

अन्य भारतीय भाषा की भांति राजस्थानी भाषा में भी विपुल मात्रा में रामकथा साहित्य की अमृतधारा प्रवाहमान है। राजस्थानी साहित्यकारों ने भी गद्य तथा पद्य की विविध विधाओं में रामकथा साहित्य का सृजन किया है। लोक कथाओं में, बातों, गाथाओं, मुहावरों, लोकगीतों में राम साहित्य विद्यमान है। राजस्थानी का राम साहित्य रामायण से प्रभावित है। भारतीयों ने राम राज्य को सुराज्य का पर्यायवाची माना है। रामायणकाल को अपने समाज का स्वर्णयुग माना जाता है। यह समय आचार–विचार, ज्ञान–विज्ञान और प्रज्ञा–प्रतिभा का विलक्षण भंडार है। मानव जीवन का ऐसा कोई पक्ष नहीं जिसकी झांकी राम काव्य या रामकथा में न मिलती हो।

राजस्थानी में रामकथा साहित्य जैन परम्परा में भी देखी जा सकती है, जैसे ब्रह्मजिनदास की रचना 'रामचरित्र', समयसुंदर की 'सीताराम चौपाई', कुशललाभ की 'पिंगळ सिरोमणि', ब्रह्म जयसागर का 'सीताहरण', ब्रह्म रायमल का 'हनुमान चरित्र', रघुनाथ मुंहता की 'रूघरास'। चारण कवियों ने भी राम भक्ति काव्य लिखे है जिनमें माधोदास दधवाड़िया का 'राम रासो', नरहरिदास बारठ का 'अवतार चरित्र', किशना आढ़ा का 'रघुवरजस प्रकास' आदि। इसके अलावा अन्य कवियों की रचनाएं जिनमें महेशदास राव का 'रघुनाथ चरित्र', पृथ्वीराज राठौड़ का 'दशरथ रावउत रा दूहा', मंछाराम सेवक का 'रघुनाथ

अध्यक्ष
राजस्थानी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर

Scanned by CamScanner

1983

जागती जोत

राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति
अकादमी, बीकानेर री मासिक पत्रिका

(यू.जी.सी. सूं मान्यता प्राप्त)

बरस : 49, अंक : 1-4, अप्रैल-जुलाई, 2021

प्रधान संपादक
भंवर लाल मेहरा
आई.ए.एस.
अध्यक्ष एवं संभागीय आयुक्त

संपादक
शिवराज छंगाणी

प्रबंध संपादक
शरद केवलिया
सचिव
राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी
बीकानेर

ISSN : 2319-3603

Scanned by CamScanner

अनुवाद (व्यंग्य)

बजार मांय क्यांताई ऊभो कबीरो! — मूळ (हिंदी)- प्रेम जनमेजय; राजस्थानी उल्थौ-कृष्णकुमार 'आशु' — 73

अनुवाद (लघुकथा)

तीन लघुकथावां — मूळ (बांग्ला)- रवीन्द्रनाथ ठाकुर; राजस्थानी उल्थौ- सावित्री चौधरी — 77

व्यंग्य

स्मार्टनैस रो चस्को — -दीनदयाल शर्मा — 79

अजगर करे नीं चाकरी — -डॉ. अजय जोशी — 85

कविता

दस कवितावां — -विजय सिंह नाहटा — 87

दो कवितावां — -रवि पुरोहित — 91

कोरोना केन्द्रित छः कवितावां — -डॉ. रमेश 'मयंक' — 93

सात कवितावां — -निशांत — 98

सात कवितावां — -डॉ. कृष्णा आचार्य — 101

दो कवितावां — -राजाराम स्वर्णकार — 104

दो कवितावां — - ऋतुप्रिया — 108

गीत

पांच गीत — -मोहन पुरी — 110

हाइकू

कोविड रा हाइकू — -डॉ. शंकर लाल स्वामी — 116

पोथी परख

समकालीन चेतना की आधुनिक कहाण्याँ- 'कफन को पजामो अर दूजी कथावां' — -सी. एल. सांखला — 118

अंतस रै सबदां नै उकेरती कवितावां — -डॉ. मीनाक्षी बोराणा — 120

टाबरां रे मनगत रा चितराम 'मन री खुसी' — -पूर्णिमा मित्रा — 123

राजस्थानी समाचार — 125

कागद मिळ्यो — 135

ISSN : 2319-3603

आलेख

राजस्थ

नागौर

रै रावळै 2 अप्रै

रसवंत री शुरुअ

राजस्थान विश्ववि

राजस्थानी साहि

करियौ। वे अध्य

'राजस्थान के व

सामळ है। वांरी

"रसाळ" शीर्षक

री ई रचना करी।

राजस्थानी

लक्ष्मणसिंह 'रस

उण बखत हुई ज

जोधपुर रा मुख

संपादन सहायक

री काम देखतौ

म्हारी र

अनुसंधान खात

पूरसर कद अर

वरणौ नैण-नक्स

सूं भरपूर हो। अे

कोई कल्पना नीं

ISSN : 2319-3

अध्यक्ष
राजस्थानी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर

Scanned by CamScanner

राजस्थानी महिला लेखन

राजस्थली

लोक चेतना री राजस्थानी तिमाही

अंक 1 जुलाई-सितम्बर, 2021

अध्य... विभाग
राजस्था... विश्वविद्यालय
जयनारायण ...
जोधपुर

Scanned by CamScanner

135	पूत भलांई लख कमाया होसी	*भावना शर्मा*	183
141	छाला / हरियल पान	*मधु वैष्णव 'मान्या '*	184
146	आंगणियै री चिड़कलियां	*मधुर परिहार*	185
	वीरां रो वीर	*मयूरा मेहता*	186
	सोच	*मानसी शर्मा*	187
153	महामारी रै दौर मांय / अब थे ईज	*मीनाक्षी आहुजा*	188
154	बस! इत्तो ईज चावै नारी	*मीनाक्षी पारीक*	189
155	आथण / बंधण / मानवी	*डॉ. मीनाक्षी बोराणा*	190
156	मरुनार	*मोनिका राज 'गोपा'*	191
157	लापसी / भतूळियो अर मिनख	*राजोल राजपुरोहित 'मुक्ता'*	192
158	म्हैं पाणी में ऊभी	*डॉ. लीला दीवान*	193
159	ठाडी चिंत्या / नैणां	*विमला महरिया 'मौज'*	194
160	हर आवै छै / भरम / जिंदगाणी	*श्यामा शर्मा*	195
161	पिछाण / करतूत	*डॉ. संजू श्रीमाली*	196
162	खसेरणी / त्यौंहारी अर भीख	*सपना वर्मा*	197
163	मां / कथावां	*सरोज देवल बीठू*	198
164	पीड़ / सूखती जड़ां / राजस्थान रो धीणो	*सुंदर पारख*	199
165	रिवाज री बुगची	*सुमन पड़िहार*	200
166	सवां बीच राजी हूं म्हैं	*डॉ. सुषमा सिंघवी*	201
167			
168	**गीत**		
169	औ जीवण जीणो पड़सी	*अवन्तिका तूनवाल*	202
170	सीख रो गीत	*आशा रानी जैन 'आशु'*	203
171	क्यूं गुणगुणायो रे भंवरा / पाणी में चांद दिखावै	*चंदा पाराशर*	204
ंवराणी' 172	मन में ले लूं सार / बिरछां रो प्रेम	*नगेंद्र बाला बारेठ*	205
173	ओळ्यूं	*प्रमिला शर्मा सनाढ्य*	206
174	अखबारां में	*प्रीतिमा 'पुलक'*	207
175	भ्रूणहत्या	*पुष्पा शर्मा*	208
176	घणो निराळो राजस्थान	*मंजु महिमा*	209
177	चिड़कली उडबो चावै	*डॉ. रानी तंवर*	210
178	मारवाड़ी ओळमो	*रानी सोनी 'परी'*	211
179	आयो बुढापो	*डॉ. रेनू सिरोया 'कुमुदिनी'*	212
180	परिवार नियोजन / बचपन री यादां	*लता पुरोहित*	213
181	गीत कस्यां गाऊंला	*विजयलक्ष्मी देथा*	214
182	तूं क्यांनै तरसावै रे!	*डॉ. विजयलक्ष्मी शर्मा*	215

अध्यक्ष
राजस्थानी विभाग
...व्यास विश्वविद्यालय

Scanned by CamScanner

ISSN 2581-9623

राजस्थानी भाषा, साहित्य, इतिहास अर संस्कृति री मासिक पत्रिका

रूड़ौ राजस्थान

बरस 03 • अंक 10 • अक्टूबर 2021 | मोल : 20 रिपिया

आवरण कथा

राजस्थानी साहित्य में सिणगार रस

अध्यक्ष
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर

Scanned by CamScanner

पोथी-परख

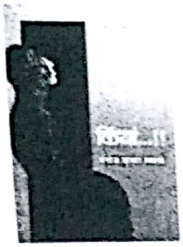

मानखै रै अंतस री गांठा खोलतो निरवाळी भांत रौ कहाणी संग्रै 'किंयां'

पोथी : किंयां लेखक: मनोज कुमार स्वामी
प्रकाशक-बोधि प्रकाशक, जयपुर
मोल : 70/संस्करण : 2014, पेज : 87/
भाषा : राजस्थानी/विधा : कहाणी

मायड़ भासा नै संवैधानिक मान्यता अर कन्या भरूण हत्या रोकण सारु संकळपित मनोज जी नै न्हानैं कलेवर मांय आजरै जुग सूं बाथड़ा करता मीनख अर लुगाई रै पीड़ अर हौसले नै उकेरणै मांय महारत हासल है। कूपमंडूक अर सोसक प्रवृति रै मीनखां रै जाळ मांय पज्योडा मीनख अर लुगाईयां री पीड रौ परतख चितराम इयांरी सगळी रचनावां मांय परकटावै। 'किंयां' मांय मनोजजी री पन्द्रा कहाण्यां भैळी है। संग्रै री पैली कहाणी ''अट्टो -सट्टो'' मांय इण साव माडी रीत री सिकार छोरया री दुरदसा रौ मरमिलौ चितराम है। सिरोनांव कहाणी 'किंयां' में हडखोरी रै बाण रै पांण आपरी करणी रा फळ भोगणिया मीनख री व्यंग्यात्मक कथा है। गुमडियो मांय मामूली सो गुमडियो री वजै सूं फोडा भुगतता मीनख री अर उणरी लाडेसर बेट्या रै स्नैव रौ मनमोवणो दरसाव है। भायला मांय भायलाचारी रौ दम भरणियां मीनखां री मनगत नै चवडै कर लेखक कैवे हर साथी साथ निभावै आ जरुरी कोनी। कैदी मांय आपरै समाज मांय गिरहस्थ अधखड मीनख री दुरदसा रौ सोळा आना सांचो चितराम है। लुगाईयां री थिति माथै घडयाळी आंसू टळकावंता मीनख अर लुगाई नै निम्न मध्यम वरग रै मैणतकस मीनखां री आपरी लुगाई टाबरा रै हाथां कैदी दांई रैवणियै कानी भी आपरी दीठ घालण री अरज करती आ कहाणी लखावै। च्यार टाबरां री मां मांय लेखक अबखायां मांय पज्योडी लुगाईयां नैं आतमहत्या करणै री जिंग्या मुकाबलो करणै री हूंस जगावण मांय सक्षम है। सुवाल मांय दायजै रै दानव री सिकार छोरियां अर उणरै माइतां री पीड नै उकेरयो गयो है। कागोळ मांय लेखक आज रै जुग मांय लकीर रै फकीरां माथै सांतरो व्यंग्य करयो है। बेटा बहू मांय आज रै बुजरंगा नै अंधविस्वास नीं करणै री सलाह दीवी गयी है। छेकडली कहाणी झाडागर मांय आपरै समाज मांय कलजुगी बाबा, भोपा , झाडागर री पोल खोली गयी है। इण कहाणी मांय इयांरै जाळ मांय पज्योडी डील रै सोसण री सिकार लुगाईयां रौ मरमीलो दरसाव है। लेखक अंफडी बाबाओं री किरयाकलाप अर उणरै समाज मांय चौधर रौ असर रौ रुगंटा खडया हुयजावै इसो चितराम करयो है के आ कहाणी पढया पछै कोई झाडागर रै चक्कर मांय नी पजोला। टुकै मांय आपां कैय सकां कै इसी सामाजू चेतना जागरत करणै वाळी कहाणियां पढेसरी री परम्परागत सोच नैं ग्यान रै उजास खनै लेय जावै है। इसी सारथक पोथी रै रचाव सारु मनोजजी नैं घणा घणा रंग।

समीक्षक - पूर्णिमा मित्रा, बीकानेर

पोथी-परख

विरह री पीड़ ने दीठ देवती : अणबोली टीस

पोथी : अणबोली टीस/विधा: खण्ड काव्य/
लेखक : तरूण कुमार दाधीच/पोथी पानां : 90/
प्रकाशक : संजय प्रिंटर्स, उदयपुर
पैलौ संस्करण : 2019/मोल : 100 रिपिया

''अणबोली टीस'' राम रै छोटे भाई लिछमण री वनवास काल री मनोदशा रौ वरणाव घणै ही सातरै ढंग सूं व्हियोडौ है। राम अर सीता साथै हा, पण लिछमण अर उरमिला रौ बिछोह लेखक रै इण खंड काव्य रौ आधार है। इण पौथी रा सगळा पद्या में लिछमण री मनोदशा, उण री भावनावां, विरह री पीड़, मन री उथळ पुथल रौ घणौ लूंठौ दस्तावेज है। इण पौथी री सुरूवात मंगळाचरण सूं कवि करै पछै राम लिछमण रै ब्याह रौ वरणाव करता थका कवि लिखै कै-

लखन कनखियां ऊं देख रिया, घरवाळी रौ गात
ही नुवीं लाड़ी लाज्यां भरी, हृदय मांय सकुचात

औ लखन अर उरमिला री प्रीत रौ पैलौ पांवडौ हो पण मिळण सूं पैला विरह री दाझरौ समचौ अर दोनू ने विलग होवण री मनोदशा रौ वरणाव लेखक घणै मारमिक रूप सूं करै। वनवास गमन री बखत जद सीताजी रामजी सागै जावै तद उरमिला रै भी लिछमण सागै जावण री मन मै आवै अर वे कै उठै -

नाथ म्हारा जठै भी रैवै, वौ है म्हारो मूल
एक पतिव्रता रा धर्म नै म्हूं, कियान जाऊं भूल

तरूण जी छंदा रै मारफत लिछमण रै कर्तव्य बोध अर मन पीड नै शब्दा में ढाळी है। पूरे वनवास काल में लिछमण राम अर सीता जी री सेवा में कोई कसर नीं राखै। पण आपरी मरवण उरमिला ने अेक छिण नीं बिसरावै -

उरमिला ने याद कर लखन, होवण लाग्या विभोर
उंडी फिकर में खोवण लग्या, ज्यूं स्वाति अर चकोर

लेखक इण खंड काव्य में प्रकृति रौ घणौ सोवणौ वरणाव करियौ है। वन रौ फुटरापौ चारू खूंट हरियाळी रौ पसराव पंछी पखेरूआ रौ कलरव, नदीयां अर झरणा री कळ कळाहट जीव, जिनावरा,भांत भांत रा बिरख आद रौ घणौ सावठौ अर मन मोवणौ दरसाव सामी लावै -

ये रूंख म्हांणा परम मित्र हैं, करता सुख संचार
चारूं तरफ हरियाळी करै, बरखा हुवै अपार

''अणबोली टीस'' में लेखक लिछमण रै चरित्र नै गरिमा प्रदान करी है अर लिछमण रै चरित्र नै उरमिला रै नजरिये सूं परखण रौ प्रयास करियौ है। म्हैं तरूण कुमार जो नै इण भांत री काव्य रचना पाठका सामी राखण सारू घणैमान धन्यवाद देउं। आ पौथी अेक नवी दीठ लिछमण बाबत् सगळा रै हिये में उपजावैला अेड़ी उम्मीद है।

समीक्षक - डॉ. मीनाक्षी बोराणा
अध्यक्ष, राजस्थानी विभाग, जोधपुर

अध्यक्ष
राजस्थानी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर

Scanned by CamScanner

डॉ. मीनाक्षी बोराणा

जलम : 19 फरवरी, 1976

शिक्षा : जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर सूं अेम. अे. राजस्थानी (स्वर्ण पदक), लोकप्रशासन में ई अेम अे.।

छप्योड़ी पोथ्यां : 'जनकवि रेवतदान चारण', 'राजस्थानी हरजस अर वाणियां'

शोध-कारज : पचास सूं बेसी शोधपत्र अर आलेख राष्ट्रीय अर अंतरराष्ट्रीय पत्र-पत्रिकावां में छप्योड़ा। आपरै शोध निरदेसन मांय केई शोधार्थी शोधकार्य कर रैया है। राजस्थानी भासा, साहित्य अर संस्कृति सूं संबंधित वार्तावां, चर्चावां समै-समै माथै आकासवाणी सूं प्रसारित व्हैती रैवै। केई विधावां मांय लगोलग लेखन।

संयोजन : केई राष्ट्रीय अर अंतरराष्ट्रीय सेमिनारां / वेबिनारां अर व्याख्यानमाळावां संयोजित करी।

सम्मान : राजस्थानी भासा, साहित्य अर संस्कृति रै विगसाव में योगदान देवण सारू केई संस्थावां कानी सूं सम्मानित।

सदस्य : राजस्थानी भासा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर री कार्यकारिणी में सदस्य। केई बीजी संस्थावां सूं ई जुड़ाव।

अबार : जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर रै राजस्थानी विभाग रा अध्यक्ष अर सहायक आचार्य।

ठावौ ठिकाणौ : 'मंगल प्रांगण', मानजी रौ हत्थौ, राजस्थान पत्रिका ऑफिस रै कनै, पावटा बी-2 रोड, जोधपुर (राज.)

मो. 9509477255

ई-मेल : boranadrmeenakshi@gmail.com

ISBN 978-81-94897-99-6 ₹ 300

शोधेसर

संपादक डॉ. मीनाक्षी बोराणा

शोधेसर

संपादक
डॉ. मीनाक्षी बोराणा

जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर रै
राजस्थानी विभाग रौ शोध आलेख-संग्रै

छापणहार

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति

संस्कृति भवन, अेन.अेच.11, श्रीडूंगरगढ़-331803
बीकानेर (राजस्थान)
E-mail : hindipracharsamiti@gmail.com
www.rbhpsdungargarh.com

ISBN 978-81-94897-99-6

© डॉ. मीनाक्षी बोराणा

संस्करण : 2021
आवरण : रमेश शर्मा
आखरसाज : रोहित राजपुरोहित
मोल : तीन सौ रुपिया
छापाखानौ : कल्याणी प्रिंटर्स, बीकानेर

SHODHESAR (Rajasthani Research Paper Collection)
Edited by Dr. Meenakshi Borana

₹ 300

सत्यमेव जयते

मुख्य मंत्री
राजस्थान

मुम./सन्देश/ओएसडीएफ/2021
जयपुर, 10 फरवरी, 2021

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के राजस्थानी विभाग द्वारा एक शोध पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

राजस्थानी भाषा और साहित्य की शोध पत्रिका का प्रकाशन अपने आप में महत्वपूर्ण है। इससे राजस्थानी भाषा में किए जा रहे शोध के साथ साहित्य की विभिन्न विधाओं पर विद्वानों, शिक्षकों एवं शोधार्थियों के विचारों को प्रकाशमान किया जा सकेगा।

आशा है विश्वविद्यालय के राजस्थानी विभाग का यह अभिनव प्रकाशन प्रदेश, देश एवं विदेश में राजस्थानी भाषा, साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में किए जा रहे शोध एवं अनुसंधान की गतिविधियों को सामने लाने की दृष्टि से सार्थक सिद्ध होगा।

मैं जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के राजस्थानी विभाग की शोध पत्रिका के प्रकाशन की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

(अशोक गहलोत)

डॉ. मीनाक्षी बोराणा,
विभागाध्यक्ष, राजस्थानी विभाग,
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय,
जोधपुर (राजस्थान)

अध्यक्ष
राजस्थानी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर

Scanned by CamScanner

9. कन्हैयालाल सेठिया रै साहित्य में दार्शनिक दीठ
-डॉ. मीनाक्षी बोराणा 64

10. प्रगतिशील कवि श्याम महर्षि री कवितावां में गांव री चितार
-मोनिका गौड़ 71

11. राजस्थानी काव्य में रितु वरणाव : अेक दीठ
-डॉ. रणजीतसिंह चौहान 78

12. राजस्थानी भासा में नीति काव्य
-डॉ. रामरतन लटियाल 84

13. ठावौ गद्यकार : मुहणोत नैणसी
-डॉ. लक्ष्मीकांत व्यास 90

14. लोकसाहित्य अर लाखीणा लोकगीतां री अंवेर
-डॉ. शारदा कृष्ण 95

15. साख रौ प्रतीक—साखियौ
-डॉ. सुखदेव राव 101

16. राजस्थानी जनकाव्य में पाबूजी रा पवाड़ा
-डॉ. सुरेश सालवी 109

डॉ. गजादान चारण 'शक्तिसुत'

संस्कारां बिन रिश्ता सूना

अेकर अेक दाखां सूं भरेड़ै बाग में गधेड़ा बड़ग्या। आपरै जलमजात सभाव रै मुजब गधा उण बाग में मनमरजी सूं दाख खावै अर खुला विचरण करै। बाग रै अेक छेड़ै आम गेलौ हो। कवि समन किणी काम सूं गेलै-गेलै आगै जावै हो। कवि री निजर दाख रै बाग में चरता बिचूरता गधां पर पड़ी तो उणनैं पीड़ा हुई अर कवि हाथ में लाठी लेय गधां नैं बाग सूं बारै काढ्या। गेलै चालतै दूजै मिनख पूछ्यौ, ''कविराज! औ बाग आपरौ है काई?'' समन बोल्यो, ''ना भाई। ना तो बाग म्हारौ अर ना ई गधा म्हारा, पण दाख जियांकली चीज नैं गधा चरै तो आ अजोगती बात है जकी म्हारै सूं सहण नीं हुई, इण कारण म्हैं तो आं गधां रै लारै लट्ठ लेय'र भाज्यौ अर आंनै बाग सूं बारै घेरया है—

समन पराए बाग में, दाख तोड़ खर खाय।
अपना कुछ बिगरे नहीं, (पर) असही सही न जाय।।

जिण भांत समन कवि री वेदना ही, उणी भांत री वेदना सूं लारलै दिनां म्हारौ पालौ पड़्यौ। शेखवाटी रै अेक गांव री घटना है। चौधरी री भरी-पूरी गवाड़ी। चार बेटा। च्यारूं परणायोड़ा। पोता-पोत्यां सूं बाखळ भरेड़ी। गायां-भैस्यां, रेवड़, खेती-बाड़ी हर दीठ सूं सात थोक। रामजी राजी। गांव में चौधरी री चोखी पूछ। भाई-भाई घणा राजी-बाजी पण देराण्यां-जेठाण्यां री मूंछ्यां अड़णी सरू हुई। बात चौधरी कनै पूगी तो बण कोई नैं समझाई तो कोई धमकाई अर कोई घणी बीफरी उणनैं पंपोळ'र ठंडा छांटा देय घर नैं बंध्यौ राखण री जुगत करी। बडेरां साची कैयी है—रोग, अगनी, विष अर राड़ नैं तो बधण सूं पैली ही बुझावणी ठीक रैवै, बध्यां पछै तो बिगाड़ ई बिगाड़ हुवै। उणनैं रोकणौ बस रौ सौदौ नीं रैवै। राजिया नैं संबोधित करतां कवि कृपारामजी खिड़िया लिख्यौ—

रोग अगन विष राड़, ज्यांरा धुर कीजे जतन।
बधियां पछै बिगाड़, रोक्यो रुकै न राजिया।।

बापड़ौ चौधरी कदै कोई सी बीनणी नैं समझावै तो कदै कोई सी नैं, पण समझणी चावै जद समझ असर करै। सूत्यां नैं जगायौ जा सकै पण जागतां थकां सोवण रौ सांग करै, वांनै कियां जगाईजै। बीनण्यां हरेक बात में कुतरकां पर उतरगी। बीनण्यां रै सागै-सागै बेटा-पोतां में ई औ रोग जड़ां घालण लागग्यौ। अेक दिन तो हद ई होगी। छोटकड़ी

Scanned by CamScanner

Kavya Kaumudi

Certificate of Appreciation

This certificate of appreciation is awarded to

Dr. Meenakshi Borana

For your highly esteemed contribution from November 2020 to March 2021 in poetry and recitation.

In recognition of your continuing excellence in literature and poetry

Awarded by Kavya Kaumudi International Multilingual Poets' Group in association with Telangana Sahitya Academy, Telangana

(Dr. Mamidi Harikrishna) (Director) Languages and Cultural Dept. Govt. of Telangana & Secretary of Telangana Sahitya Academy)	26 / 5 / 2021 Date	(Dr. Kumud Bala) President (Kavya Kaumudi International Multilingual Poets' Group)

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

WORLD LITERARY FORUM FOR PEACE AND HUMAN RIGHTS

Registered with Sustainable Development Goals (UN DESA) Ref # 213500, UN ECOSOC SCS SDC Reg. No. 0466 250420 and
World International Organization Committee - World United Nations (WIOC WUN) Reg. No. 21219/20,
Affiliated to: Bolivarian Republic of Venezuela, Bolivarian School of Human Rights and Chaplains of Venezuela, and
The World People's Forum - TWPF@BTYA (Political Talents Institutions), Bangladesh
https://www.facebook.com/groups/840989816303484/

This is to Certify that

Dr.Meenakshi Borana
Jodhpur-India

has successfully agreed with the covenant approved by the "World Literary Forum for Peace and Human Rights - WLFPH" in support of the

Sustainable Development Goals (SDGs) and WLFPH Goals

in creating awareness to promote global, economic and political stability through the promotion of universal moral values, tolerance education, interfaith harmony education, the establishment of the culture of peace and safety and all the Sustainable Development Goals around the world, and is therefore awarded status as

INTERNATIONAL AMBASSADOR OF PEACE

(Committed to Serve the World for Peace & Safety)

February 2021

अध्यक्ष
राजस्थानी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर

President/Founder
H.E. Duke Dr. Santosh Kumar Biswa
WLFPH

IN ASSOCIATION WITH

Scanned by CamScanner

11:32 81%

Search

पळकती प्... See more

पळकती प्रीतः नारी रै सद्गुणां री सौरम

-डॉ. मीनाक्षी बोराणा
अध्यक्ष, राजस्थानी विभाग,
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

राजस्थान री धरा अर इतिहास री भांत राजस्थानी भासा घणी लूठी अर लिमतावान है। इणरौ गद्य अर पद्य घणो गुमेजजोग है। हालिया छपी डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित री पोथी 'पळकती प्रीत' मांय राजस्थानी भासा रै आखरां संस्कृति, परंपरावां, जनजीवण रा सांतरा चितराम मंड्योड़ा है। लोक साहित्य री थाती अै लोक वातां (कथावां) नव रसां री मेळ लियोड़ी आज ई मानखै री रंजण करै।

राजस्थानी लौकिक साहित्य री ओळखाण है प्रेमाख्यान या प्रेम कथावां, जिणमें मध्यकाल रै समाज रा दरसाव निगै आवै। आं कथावां में प्रेम महताऊ है, उणी प्रेम नै लेयनै औ प्रबंध काव्य 'पळकती प्रीत' आधुनिक भाव बोध सागै लौकिक सबदावळी री पुट लियोड़ी अेक नवै सांचै ढळियोड़ी साम्ही आवै।

पोथी परख

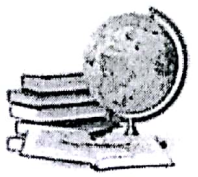

राजस्थानी कविता खेतर में डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित रौ नाव घणौ चावौ-ठावौ है। आप लारला बीस बरस सूं कवितावां लिखण रै सागै कवि सम्मेलणा रा चावा मंचीय कवि ई है। 'पळकती प्रीत' आपरो दूजो काव्य संग्रै है। जिणमें आप प्रेम कथावां रा चावा चरित्रां नै परोटनै प्रेम री ग्यारह कवितावां रै मारफत करी है। प्रेम प्रकृति री सै सूं लूठी तागत है अर उणी प्रेम में पागीड़ा नायक-नायिकावां नै नवा बिंबां, नवा भाव, नवा अरथ देवतां काव्य में परोटणी अबखी है, पण आप इण काव्य पोथी रै पाण पाठकां नै अेक-अेक सबद रै समंदर मांय गोता लगावता उणी लोक में लेय जावै जठै अेक चलचित्र री भांत कथा में पाठक आणद री अनुभूति करै। 'पळकती प्रीत' काव्य पोथी में ग्यारह प्रेमाख्याना नै 'गागर में सागर' री भांत कवि आपरी कलम री कोरणी सूं कोरी है। ऊजळी, भरमल, सोरठ, सैणी, नागवंती, बुचना, केहर, मारू, सुपियार, मूमल, आभलदे सगळी नायिकावां नै नवी दीठ सागै साम्ही लावै- 'पळकती प्रीत' इण पोथी री गरज आज रै नारी विमर्श रै संदर्भ मांय करां तो अै कवितावां उण विमर्श मांथै खरी साबत हुवै। असल में कवि नायिकावां रै मारफत आज रै महिला सशक्तिकरण नै आपरै सटीक सबदां सूं समाज साम्ही सवाल रै रूप में ऊभी करै। अठै सै सूं महताऊ बात आ कै अै कवितावां नारी रै त्याग, समरपण, मान-सनमान, छळविहूणी प्रेम, अपणायत, हिम्मत अर मानवीय सद्गुणां री महकती सौरम सूं सराबोर निगै आवै, जिणसूं राजस्थानी संस्कृति री साख सवाई हुवै। मानवीय मूल्य अर संवेदना सूं ओतप्रोत अै कवितावां अेक नवै जुगबोध री थरपणा करै। अै कवितावां नारी स्वाभिमान, अस्तित्व, ओळखाण री साख भरै। ज्यूं- 'केहर! कळ्वजियै री कोर' में केहर आपरी मां सूं पूछै- ''मा/ मत रोक म्हनै/ औ जरूरी है कांई/ कै पातर री बेटी/ पातर इज बणै/ औ कठै

''म्हारौ/तन-मन-जीवण अरपण/म्हारी प्रीत नै/म्हारा मनमीत नै'' प्रीत री खातर जेठवा नै आपरै सद्भाव सूं माफ करता थकां ऊजळी कैवै- ''किया देऊं सराप/ म्हारी प्रीत लाजै।''

'पळकती प्रीत' पोथी में कवि 'सुपियार! झिलमिल आरती उतार' कविता मांय नारी रै दोय रूपां री बरणाव करै- ''धण/हर सगै/हर दौड़/खुद जाण'र हारै/फाल इण साख/कै उणरी धणी जीत सकै।'' दूजी कानी जद उणी नार री धीजौ खूटै तद वा विकराळ रूप आंगै अर पौरस रै अहंकार नै तोड़ती, उणरै झूठ बंधणां सूं मुगत हुवण रा जतन करती निगै आवै- ''पण/ आज इणीज गाभै/ मगसो पड़गो/ धणी रो धणियाप/ खूटै बप'र/ कद तांई खातो/ कुमाणस रै हाथ/ हलकाट/कोरड़ा।''

डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित री कवि राणी उमादे री प्रीत नै जीवण सारू राजा नै समझावै कै नारी मन नै जीतणौ अर जुद्ध जीतणौ दोनूं न्यारा है- ''जुद्ध जीत सको/ परणेतण री प्रीत नीं/ परणेतण रौ मन जीतण/ गुमेज त्यागणो पड़ै/ खुद नै खुद सूं हारणी पड़ै/ इणीज हार में/ जीवण री जीत है।''

प्रीत करणी अर प्रेम में होमीजणो राजस्थान री नारियां री ओळखाण है। आद-जुगाद सूं अठै री नारी, खुदरिछपाळ, स्वाभिमान, मान-मरजाद सारू प्राण देवती आई है- ''इतिहास रा पाना कैवै/ जुगां जुगां सूं आज लग/ सकळ संसार में/ प्रीत री रीत निभावण/ पुरस नीं/ लुगाई इज प्राण देवै।'' कवि आपरी कवितावां मांय नारी सुलभ भावां अर वैवार री उल्लेख करता थकां 'मारू! पीव मिलण री जोग' में मालवणी रै भीतिया उर नै नवी सीख देवतां कैवै- ''मानेतण थूं छैल छबीली है/ पण/ साच रै झरोखै पून रै पसवाड़ै/ थारा मन सूं सोच/ वा दूजो नीं पैलो है।'' इण भांत कैय सकां कै 'पळकती प्रीत' री सगळी कवितावां में मरुधरा री पावन संस्कृति, परंपरावां, राग-विराग, सुख-दुख, आस-निरास आद सगळा रूप घणै मानै ढंग सूं साम्ही आया है। डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित री कवि मनां ऊंडी दीठ राखता थकां इण काव्य पोथी री सिरजण करियौ है। आज मानखौ कनै मोकळौ है पण वगत नीं है, आधुनिकीकरण री होड में वो साहित्य सूं विमुख व्हैग्यौ है। उणनै साहित्य सूं पाछौ जोड़ण में कवि री औ प्रयास 'थोड़ा सबदां में घणी बात कैवणी' अेक मजबूत थंब बणैला। 'पळकती प्रीत' पोथी आपरै नांव मुजब काव्य जगत में पळकती रैवै अर राजस्थानी काव्य नै नवी दीठ देवतां थकां ऊंची ठौड़ थरपै, इणी कामना सागै घणैमान बधाई।

पोथी एक निजर मांय

पोथी- पळकती प्रीत
विधा- राजस्थानी प्रबंध काव्य
रचनाकार- गजेसिंह राजपुरोहित
प्रकासक- एकता प्रकासन, चूरू-331001

28

11 comments • 2 shares

Like Comment Share

अध्यक्ष
राजस्थानी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर

Scanned by CamScanner

DKC00494

Dashmesh Khalsa College, Zirakpur

(Under the Management of Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar)
Affiliated to Punjabi University Patiala and P.S.E.B, Mohali
www.dashmeshkhalsacollege.org

Certificate of Participation

This certificate is awarded to DR. MEENAKSHI BORANA of JAI NARAYAN VYAS UNIVERSITY for participating in the Five Day Online Faculty Development Program on "New Pedagogies: Creative Learning & Creative Teaching – A Futuristic Approach" organised by Dashmesh Khalsa College, Zirakpur from 20/06/2020 to 24/06/2020.

Ms. Mala Malik	Ms. Aman Preet Kaur	Ms. Manveen Kaur	Dr. Karambir Singh
Technical Coordinator	Convenor, Research Cell	Dean Academics	Principal
Dashmesh Khalsa College, Zirakpur	Dashmesh Khalsa College, Zirakpur	Dashmesh Khalsa College, Zirakpur	Dashmesh Khalsa College, Zirakpur

अध्यक्ष
राजस्थानी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर

Scanned by CamScanner

Government of India
Ministry of Human Resource Development

Teaching Learning Centre
Ramanujan College
University of Delhi

Sponsored by
MINISTRY OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT
PANDIT MADAN MOHAN MALAVIYA
NATIONAL MISSION ON TEACHERS AND TEACHING

Certificate

This is to certify that

DR. MEENAKSHI BORANA

of

RAJASTHANI DEPARTMENT , JAI NARAYAN VYAS UNIVERSITY

successfully completed Two Week Online Workshop on
"Comprehensive e-Learning to e-Training guide for Administrative Work"
from May 25 - June 05, 2020.

Dr. S.P. AGGARWAL
(Principal)
Director, TLC
Ramanujan College

Dr. NIKHIL RAJPUT
(Convenor)
Assistant Director, TLC
Ramanujan College

अध्यक्ष
राजस्थानी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर

Scanned by CamScanner

Kamla Nehru College for Women

Jai Narain Vyas Univeristy, Jodhpur

Seven Days Interdisciplinary International Faculty Development Conclave

September 15- 21, 2020

CERTIFICATE

..................................Dr. Meenakshi Borana..................................

from........Jai Narain Vyas University, Jodhpur (Rajasthan).......

has successfully completed Seven Days Interdisciplinary International Faculty Development Conclave **organised by Kamla Nehru College for Women, Jai Narain Vyas University, Jodhpur from September 15-21, 2020 and has been awarded Grade** ...'A'...........

Dr. Rajshree Ranawat
Convenor

Prof.(Dr.) Sangeeta Loonkar
Director
K. N. College for Women
J.N.V.U., Jodhpur

अध्यक्ष
राजस्थानी विभाग
जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर

Prof. (Dr.) P. C. Trivedi
Vice Chancellor
J. N. V. U., Jodhpur

Scanned by CamScanner

CERTIFICATE NO : RC/E-CERT/FDP2609DEC-JAN-0094

GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT

Teaching Learning Centre

Ramanujan College (University of Delhi)

in collaboration with

Shyama Prasad Mukherjee College for women (Delhi University), Armapur PG College (Armapur Estate), Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University (Kanpur), Mount Carmel College (Autonomous), Bangalore

UNDER THE AEGIS OF

MINISTRY OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT
PANDIT MADAN MOHAN MALVIYA
NATIONAL MISSION ON TEACHERS AND TEACHING

Certificate

THIS IS TO CERTIFY THAT

DR. MEENAKSHI BORANA

OF

JAI NARAYAN VYAS UNIVERSITY, JODHPUR, RAJASTHAN

SUCCESSFULLY COMPLETED TWO WEEK INTERDISCIPLINARY FACULTY DEVELOPMENT PROGRAMME ON

SAHITYA, BHASHA, SAMAJ, RAJNITI AUR DARSHAN : ANTARVISHYAK SANDARBH

FROM 26TH DECEMBER 2020 TO 09TH JANUARY 2021 AND OBTAINED A GRADE " A "

DR. S.P. AGGARWAL
(PRINCIPAL)
DIRECTOR, TLC
RAMANUJAN COLLEGE

DR. SADHNA SHARMA
(PRINCIPAL)
PROGRAM DIRECTOR
SHYAMA PRASAD MUKHERJEE
COLLEGE FOR WOMEN

अध्यक्ष
राजस्थानी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर

Scanned by CamScanner

S.S. JAIN SUBODH P.G. (AUTONOMOUS) COLLEGE, JAIPUR, RAJASTHAN

3rd Cycle Re-Accredited A++ Grade (3.82 CGPA) by NAAC-UGC
NIRF-MHRD Ranks Among Top 200 Colleges of India
Awarded Status of "College of Excellence" by UGC
College with "Star Status" Recognised by DBT, Govt. of India

INTERNATIONAL FACULTY DEVELOPMENT PROGRAM
on
EMERGING ASPECTS OF RESEARCH METHODOLOGY

1st - 7th February 2021

Certificate of Participation

This is to certify that Prof./Dr./Mr./Ms. Dr.Meenakshi Borona *of* Srk Government Collega,Rajasamand *has successfully participated in One Week International Faculty Development Program on the topic "Emerging Aspects of Research Methodology" organized by Internal Quality Assurance Cell (IQAC) of Subodh College under the aegis of UGC Paramarsh Scheme.*

Prof. (Dr.) K.B. Sharma
Principal
Brand Ambassador
UGC Paramarsh Scheme
Rajasthan

Prof (Dr.) Rajesh Kumar Yadav
Dean Academics
(IQAC, Co-Ordinator)

Prof. (Dr). Manish Kaushik
Convener

Prof. (Dr.) Ripu Ranjan Sinha
Organising Secretary

राजस्थान सिंधी
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय

Scanned by CamScanner

राजस्थान राज्य भारत स्काउट्स व गाइड्स

स्काउटर/गाइडर प्रशिक्षण शिविर

संख्या J.D.R./21-22/RLBC/01/SHQ/08 दिनांक 01/08/2021

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती/सुश्री डॉ॰ मीनाक्षी बोराणा

स्थान कमला नेहरू महिला महाविद्यालय जिला जोधपुर

ने गर्ल गाइड हैड क्वाटर जोध॰ स्थान पर दिनांक 26.07.2021 से 01.08.2021

तक आयोजित रेंजर यूनिट लीडर बेसिक कोर्स में सम्मिलित होकर सफलता पूर्वक

प्रशिक्षण प्राप्त किया।

राज्य प्रशिक्षण आयुक्त
(स्काउट/गाइड)

सहायक/लीडर ट्रेनर

(यह प्रमाण पत्र विना नियुक्ति पत्र के ...

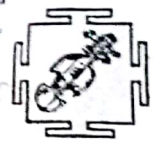

NĀTYAŚĀSTRA

नाट्यशास्त्र

कला एवं संस्कृति विभाग, राजस्थान
राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर
राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर
के संयुक्त तत्वावधान मे आयोजित

राष्ट्रीय नाट्यशास्त्र कार्यशाला

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती/सुश्री ...डॉ. मीनाक्षी बोराणा......... ने राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर तथा राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में जोधपुर में दिनांक 13.12.2021 से दिनांक 17.12.2021 तक आयोजित राष्ट्रीय नाट्यशास्त्र कार्यशाला में भाग लिया। कार्यशाला के समस्त कार्यक्रमों में इनकी सहभागिता सराहनीय रही।

संजय झाला
निदेशक
राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर

अनिल कुमार जैन, RAS
सचिव
राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर

अध्यक्ष
राजस्थानी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

प्रोफ़ेसर राधावल्लभ त्रिपाठी
पाठ्यक्रम निदेशक
राष्ट्रीय नाट्यशास्त्र कार्यशाला, जोधपुर

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

पाली पत्रिका

सुमेरपुर . सोजत . जैतारण . रोहट . मा. जंक्शन . बाली . रानी . फालना . सादड़ी . रायपुर मारवाड़

patrika.com | राजस्थान पत्रिका . पाली

पत्रिका डिजिटल कनेक्ट

आपके साथ चलेंगी खबरें

बड़ी सीख : मिनखपणा रै बगैर ई कोई प्राणी मिनख कोनी हुय सकै

चिंता रा आखर : कोरोना काळ में मरतौ मिनखपणौ

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

इतिहास इण बात री साख भरै के सृष्टि री सिरजणा सूं लेय र आज लग मानखा माथै कुदरती आफत आवती रैयी। कदैई जळ री जळजळो तो कदैई आग री लपटां मानखै नै बाळती रैयी। कदैई वायरै री बवंडर तो कदैई भूकंप सूं मानखो मरती रैयी। समै समै धरती अर आकास सूं ई मौत प्रगट व्हैती रैयी। दुनिया में जद जद कुदरत कोप कीनो तद तद मानखै री अपार नुकसाण हुयौ। पण महताऊ बात आ के उण समै मानखै नै कोई खास चिंता नीं हुयी क्यूंकै उण हरेक अबखी वेळा में मिनखपणौ जीवतौ रैयौ। इण वैश्विक महामारी कोरोना काळ में आज मिनखपणै नै मरतौ देखूं तद मिनखा माथै भरोसो टूटण लागै। आज आपां रै साम्ही अेक महताऊ सवाल ऊभो है के - मिनखपणा रै बगैर ई कोई प्राणी मिनख हुय सकै काईं? जे खूटग्यौ मिनखपणौ तो मिनख री कांई हवाल हुवैला?

डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित

आखो देस कोरोना महामारी सूं जूझ रैयो है। हरेक सैर, गांव अर गळी में मानखो बेमौत मर रैयो है। वैश्विक संकट री इण अबखी वेळा मांय केई नाजोगा लोग दवायां रै नांव सूं तो केई प्राणवायरी (ऑक्सिजन) रै नांव सूं लूट मचाय राखी है। आ लोगां री काळा बाजारी रै कारण बापड़ा जरूरतमंद गरीब अर असहाय तो बेमौत मारिया जावै। राज तो आपरो काम करै इज है पण आं लोगां री राम निसरग्यौ। म्हनै भरोसो है के आज री मानखो इतो कायर कोनी, आपरी हिम्मत अर हूंस रै पाण कोरोना सूं आ जंग अवस जीतैला। पण मैं सूं पैलां वां नाजोगा लोगां रै नाक में नकैल अर हाथ में हथकड़ियां पैरावणी जरूरी है जिका आपरो मिनखपणौ बिसराय र मानखा रै जीवण सागै खिलवाड़ कर रैया है। इण महताऊ काम सारू आपां सगळा नै सावचेती राखणी पड़ैला, संकट रै समै जिण किणी नै जठै कठै ई कोई इण गत रा लोग निजर आवै तो वांनै हाथोंहाथ पकड़ावणा चाहीजै। आपणै इण सकारात्मक कदम सूं अलेखूं लोगां रा प्राण बच सकैला। सकल मानस जात आपरो गुण-अहसान मानैला। मिनख हो तो मिनख री मरजाद राखो, मानखै नै बेमौत मत मारो।

इण मिनखमार महामारी कोरोना काळ में वां लोगां नै घणा रंग जको आपरै तन, मन, धन सूं जरूरतमंद लोगां री बै जैड़ी ई निस्वारथ भाव सूं सेवा कर मिनखपणा री मरजाद कायम राखी। कुमाणसां! आ सूं की तो सीख लो। मौत किणरी मरी? आज नीं तो काल ओ संसार छोड़ीर सगळा नै जावणो ई है। कुमाणसां! पछै क्यूं बांधो पाप रा पोटळा? की तो मिनखपणौ बचायर राखो। आज ओ इज है जीवण रो मूळ मंत्र के- सृष्टि नै बचावण सारू मिनख नै बचावणो जरूरी है अर मिनख बचैला फगत मिनखपणा सूं। जे मरग्यौ मिनखपणौ तो किया बचैला मिनख?

नवजीवण री आखातीज

पत्रिका गेस्ट राइटर

गजेसिंह राजपुरोहित
निदेशक, बाबा रामदेव शोधपीठ
जेएनवीयू, जोधपुर

आखातीज मतलब माणस रौ सौभाग। सृस्टि रै सिरजण रौ दिन। सतजुग अर त्रेताजुग रै सरुआत रौ दिन। श्रीनारायण रै नर रूप में अवतरण रौ दिन। धरमजुद्ध महाभारत रै खतम होवण रौ दिन। परम पुण्य, सुख, सफलता अर अकूत आणंद रौ दिन। खीच-गळ्वाणी जीमण अर टाबरां रै आंधळ -घोटो रमण रौ दिन। अबूझ सावौ, नर-नारी रै परणीजण रौ दिन। अरथात-मानखां रै नव जीवण रौ दिन। पण आज आ कैड़ी आखातीज? सरब सिद्ध जोग री धणियाणी रै घरै ई च्यारूंमेर पसरग्यौ रोग।

आज सकल मानव जाति वैश्विक महामारी कोरोना रै कारण जीवण अर मरण सूं जूझ रैयी। विणास री आ गत देख'र आपां सगळा दुखी मन सूं हर खिण आ इज सोच रेया के मानखां नैं बचावण सारू परमात्मा नूंवौ रूप कद धारण करैला? इण अदीठ कोरोना महामारी सूं जुद्ध करता थकां अजै मां रा किता लाडला लाडैसर आपरै प्राणां री आहुति देवैला? किती बैन- बेटियां अर मां वां अकाळ आपरा प्रांण गमावैला? इणरो कोई अंदाजौ लगाय सकै है कांई?

आज देस अर दुनिया री जकी हालत है उण सूं पाप अर पुण्य री परम्परा रा सैं सैनांण मिटता दीसै। सफलता अर आणंद फगत सपनां में निजर आवै। खीच-गळ्वाणी गळ्या सूं नीचे ई नीं उतरै। सैर, गांव-गळी सैं ठौड़ सुन्याड़ पसरगी, टाबर किंया रमै आंधळ-घोटो। कठै है नव जीवण?

आज रै समै जद मानखौ आपरी मरजाद भूलग्यौ तद कोरोना जैड़ी महामारी आखी दुनिया में पसरी। हे माणस! अजै ई समै है, चेतौ कर। सोच-समझ अर सावचेती सूं आगलौ पावंडौ धर। हे हिम्मत रा हेड़ाऊ! थूं कायर मत बण, हिम्मत मत हार, खुद सूं जुद्ध कर। खुद रै अंतस में जीत रौ भरोसौ राख। खुद सूं जीत्यां ई मिळैला मौत री महामारी माथै जीवण री जीत। नव जीवण रै पसराव सारू, मानखां री मरजाद सारू, सकल सृस्टि नैं बचावण सारू आज कोरोना सूं आ जंग जीतणी जरूरी है। सो बचाव सारुं मास्क बांध, वेक्सीन रो टीकौ लगा अर कीं दिन नैंहचौ कर'र घरै ई बैठ। जे कर सकै तो जरूरतमंद मिनखां री व्है जैहड़ी मदद कर। कोरोना करमवीरां री हूंस बधा अर सावचेती सूं पिरवार नैं संभाळ। आसा अमर धन हुवै, अंतस में भरोसौ राख। हे माणस! मनोमन मत खीज। .... आगली साल अवस आवैला, वां नव जीवण री आखातीज।

राजस्थान पत्रिका

पाली, रविवार, 21 फरवरी, 2021

विश्व मायड़ भाषा दिवस माथै खास आलेख

'मिनखपणां रै मरजाद री ओळखाण मायड़ भाषा सूं 'इज हुवै'

पत्रिका गेस्ट राइटर

डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित, निदेशक
राजस्थानी विभाग, जेएनवीयू जोधपुर

पाली. लोक में जिण शब्दां रै मारफत मिनख आपरा विचार अथवा मन रा भाव प्रगट करै अर सुणणियो उणरो वो इज अरथ समझै, वा भाषा कहीजे। अठै आ बात ई समझणी घणी जरूरी है' कै भाषा फगत भावां अर विचारां नै प्रगट करण रो माध्यम ई नीं है। की मैं समाज री संस्कृति, लोगां रा संस्कार, अेक पूरी जीवणपद्धति, अखण्ड -आस्थां अर प्रगाढ़ आत्म विश्वासई प्रगट हुवै। मानव रै जीवण मूल्यां री झणकार उणरी भाषा में सुणीजे। भाषा सूं समाज री पिछाण बणै अर उणरी संस्कृति आपरा सत-सरूप में साम्ही आवै। समाज री जुगां-जूनी मान्यतावां परम्परावां अर आदर्स भाषा रै माध्यम सूं पीढ़ियां लग तरोताजा रैवै। आपणै बडेरा रै इतियास रै उणियारै आतमा सूं जुड़ियोड़ी आ अखूट पूंजी भाषा रै पेटै सदैव सुरक्षित अर लगोलग चालती रैवै।

हरेक भाषा री आपरी न्यारी प्रकृति हुवै, जिणसूं उणरै बोलणवाळा री प्रकृति री ठापड़ै। हरेक भाषा रो आपरो लोक होवै, जिणमें उणरी कहावतां, ओखाणां-आडियां, गीत-गाळ, छंद-अलंकार, कलावां, रीति-रिवाज, लोककथावां, भजन, हरजस, अर परम्परागत अैतिहासिक वातां में हियै रै भावां रा दरसण हुवै। आ बात सोळै आनां सांची है कै आपरी भाषा सूं जुड़ियोड़ा लोग आपरी माटी अर मरजाद सूं गहरो जुड़ाव राखै। क्यूंकि भाषा में उण प्रदेस री माटी री सौरम स्वभाविक रूप सूं मौजूद रैवै।

जलम देवणवाळी मां, मायड़भौम अर मायड़ भाषा री होड़ कुण करै? मां रा दूध सूं काया अर मायड़ भाषा सूं आतमा पुष्ट हुवै। मिनखाजूण अर मिनखपणां रै मरजाद री ओळखाण मां, मायड़भौम अर मायड़ भाषा सूं 'इज हुवै। इमरत रै उनमान मां रो दूध अर उणी'ज भांत मायड़भाषा चेतन-अचेतन मन नै दिसा ग्यांन करावै। जिण समै पालणां में हालरियो गावै, वा चीज बाळक रै रगत में रम जावै। इणी'ज कारण मायड़भाषा बोलतां थकां मन में अंजस हुवै, गुमैज हुवै। इण ठौड़ ख्यातनाम राजस्थानी कवि कन्हैयालाल सेठिया रो अेक दोहो देखणजोग-

मायड़ भाषा बोलतां, आवै जिणनै लाज
इस्यां कपूतां सूं दु:खी आखौ देस समाज ।।
निजभाषा सूं अणमणां, परभाषा सूं प्रीत
इसड़ा गुरगां री करै, कुण जग में प्रतीत ।।

आपणो राजस्थान प्रदेस- सगती, भगती अर साहित्य री पावन त्रिवेणी कहीजे। जिणरी गौरवशाली संस्कृति आखी दुनियां में आपरी अणूठी ओळखाण राखै। आपणी मायड़भाषा-राजस्थानी, जिणरो जुगां-जूनो इतियास, विसाळ साहित्य भण्डार, दुनियां री सगळी भाषावां सूं सीरै सबद-कोष, छंद-अलंकार अर व्याकरण री कोरणी, बोलियां अर उपबोलियां री सखळीसाख, राजस्थान सहित सकल संसार में रैवण वाळा 10 करोड़ राजस्थानी लोगां रै अंतस री वाणी, आपरी खुदरी लिखावट अर खुद रो गौरवशाली लोक साहित्य। कैवण रो मतलब ओ कै भाषा वैग्यानिका री दीठ सूं मायड़ भाषा राजस्थानी अेक सुतंत्र अर सिमरथ भाषा है। इण वास्तै ओ भरोसो कर सका कै मायड़भाषा राजस्थानी नै संवैधानिक मान्यता मिलण रो सपनो बेगो-ई साकार हुवैला।

मायड़भाषा अर साहित्य रा साचा साधक जुगल परिहार

सरलमना अर सादगी रा परयाय जुगल परिहार असल में मायड़भाषा अर साहित्य रा साचा साधक हा जकौ जीवणभर निस्वारथ भाव सूं साहित्य सिरजण कर मायड़भाषा रौ मान बधायौ। असल में संघर्ष रौ दूजौ नांव जुगल परिहार कह्यौ जाय सकै। आखौ ठमर जीवण सूं जूझता रैया पण कदैई हार नीं मानी। मायड़भाषा अर साहित्य रै पेटै जुगलजी रा केई मैतावू काम है, इणनै सार रूप में कैय सकां के राजस्थानी भाषा नै मानक स्वरूप देवण में वां रौ घणौ योगदान रह्यौ। 'माणक' पत्रिका मांय चाळीस बरसां सूं सहायक संपादक रै रूप में सेवा देवणिया जुगलजी रौ निधन राजस्थानी साहित्यिक पत्रकारिता जगत में अेक जुग रौ अंत है।

डॉ. नृसिंह राजपुरोहित, ओंकारश्री पारसजी अरोड़ा रै साथै जुगलजी ई हा जिका 'माणक' नै नियमित अर घणचावी बणाय राखी ही। पारिवारिक राजस्थानी पत्रिका 'माणक' रै केई स्तंभां री पूरती करणिया जुगलजी परिहार केई नामां सूं लेखन करता जिणां में कंवल उणियार, पं. लीलाकमल शास्त्री, सीता सुरभि, अलाम जोधपुरी, जल्लौ जोधाणवी, कवि धुरपट, अेम. अेम. माडाणी इत्याद प्रमुख है। वांरै संपादन में माणक रौ कोई स्तंभ कदैई 'मिस' नीं हुवतौ। वै आं केई नामां सूं खुद लिखता अर साहित्य री सेवा करता रहया।

राजस्थानी भाषा में जुगलजी रा केई आलेख घणा महताऊ अर अनूठा है जकौ सदैव नुंवा शोध करणवाळा अर पढेसरां सारू मैतावू सिद्ध हुवै। राजस्थानी भाषा, साहित्य अर संस्कृति अकादमी वां नै राजस्थानी भाषा री अेकरूपता अर मानक स्वरूप सारू बरस २०१२ मांय 'भाषा सम्मान' सूं सम्मानित करियौ। माणक रै संपादक मंडळ रा दरजन भर सदस्यां मांय सूं वै अेकमात्र संपादक हा जका 'माणक' रै प्रवेसांक १९८१ सूं लेयनै जीवण रा आखरी छिण तांई बरीबर जुड़िया रैया। वां नै दैनिक भास्कर अर राजस्थान पत्रिका सूं ऑफर मिल्या, पण माणक सूं वां नै हदभांत लगाव हुयग्यौ हौ। वां रा पग बारै नीं पड़्या अर छेहलौ सांस तांई 'माणक' नै समरपित रैया।

लारला बीसेक दिनां पैला इज जलते दीप ऑफिस में आदरजोग जुगलजी अर श्री पदम मेहता सूं मिलणौ हुयौ। म्हैं वां नै म्हारी नवी पोथी 'पळकती प्रीत' भेंट करी तद वै घणा ई राजी हुया अर कीं टैम तांई साहित्य चरचा करी पण उण बगत म्हैं आ नीं सोची के औ छेलौ मिलण हुवैला। आदरजोग जुगलजी नै अश्रुपूरित श्रद्धांजळी अरपित करतां प्रभु सूं अरदास करूं के वां री आतमा नै शांति अर घरवाळां नै संबळ प्रदान करै। राजस्थानी साहित्य में जुगलजी परिहार रौ नांव सदैव अमर रैहसी।

—डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित, जोधपुर

जुगलजी री ऊंडी सांस्कृतिक दीठ, राजस्थानी परंपरावां री जड़ सूं जाणकारी अर भाषा माथै पूरी पकड़ निकेवळी इधकाई राखती

जोधपुर रै मन्झ कुम्हारियै कुअे री अेक साधारण लोहार गवाड़ी में जलम्योड़ा श्री जुगल परिहार साहित्य अर पत्रकारिता रै सीगै अलेखूं गिणावणजोग काम कर्‌या हा। पिताजी रै कड़ला बणावण री दुकान संस्कृत कॉलेज रै नैड़ी हुवण सूं बाळपणै में उणां नै संस्कृत कॉलेज में दाखली दिराईज्यौ। इण सूं उणां री वैदिक, पौराणिक अर महाकाव्यां री जाणकारी गजब ई निखरी। धकै आवतां विश्वविद्यालयां में संस्कृत, हिंदी अर अंगरेजी साहित्य सूं बीअे कर्‌यां पछै १९८१ में वै राजस्थानी पारिवारिक मासिक 'माणक' सूं जुड़्या। आ पौराणिक जाणकारी वां नै केई राजस्थानी रीत-पांत री जड़ां पौराणिक साहित्य में जोवण में मदद करी। बसंतोत्सव रै रूप में होळी रा पैला अेलाण कठै मिलै, अर इणीज गत केई राजस्थानी, सांस्कृतिक रीत रिवाज री सरूआत संस्कृत साहित्य में सोधण रौ मैतावू काम रौ जस सिरफ जुगल परिहार रै खंवै है।

जुगल जी नै न्यारा-न्यारा नांवां सूं लिखण री अेक अजब धुन ही। उणां मिरचूमल माडाणी, धुरपट कविराय, लीलाकमल शास्त्री, कंवल उणियार, अलाम जोधपुरी अर ठाह नीं कित्ता ई नांवां सूं साहित्य सिरजियौ हौ। जद कदैई किणी जड़ां जमायोड़ी रीत माथै धमीड़ धरणौ हुवतौ तद जुगल जी मिरचूमल, के धुरपट कविराय री आड़ लेवता। असल में जुगल परिहार अेक अैड़ी शख्सियत रौ नांव है जिकौ साहित्य जगत में 'ना किणी सूं दोस्ती ना किणी सूं बैर' री कैहणावत नै आपरी करणी सूं साची कर दीवी।

'माणक' सारू अणूतौ हेत अर राजस्थानी साहित्य री शोध-खोज करण वाळा नै पूरी मदद जुगल जी री दो खास गिणावणजोग बातां है। जुगल परिहार रौ लेखन न तौ किणी घेरै में बंध्यौ हौ अर न विसयां रै तालकै किणी सींव नै मानतौ। वै साहित्य री लगैटगै सगळी विधावां में रचनावां करी। आपरी ऊंडी सांस्कृतिक दीठ, राजस्थानी परंपरावां री जड़ सूं जाणकारी अर भाषा माथै पूरी पकड़ रै पाण वां रौ लेखन हरमेस कीं-न-कीं निकेवळी इधकाई राखतौ।

म्हारौ मानणौ है के राजस्थानी साहित्य जगत नै जुगल जी रै गयां सूं जित्तौ मोटौ घाटौ हुयौ है, उत्तौ ई 'माणक' परिवार नै ई हुयौ है अर वां रै परिवार नै तौ इण घाटै सूं हुयोड़ी अबखायां जीवण तांई झेलणी है।

—जहूर खां मेहर, जोधपुर

पारिवारिक राजस्थानी मासिक

अप्रेल-मई २०२० मोल २०₹

भाणक

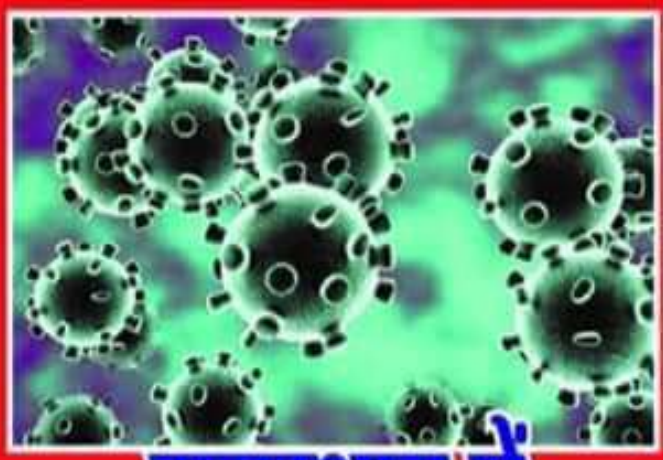

राजस्थान में कोरोना संक्रमण अर सरकार

मारवाड़ रा शासकां १८४ बरसां पैला करियौ हौ संक्रमण रौ मुकाबलौ,लोगां नै घरां मांय ई राख 'र

मारवाड़ रै राठौड़ राजवंश रौ साहित्यिक योगदान

मारवाड़ रै राठौड़ राजवंश रौ साहित्यिक योगदान

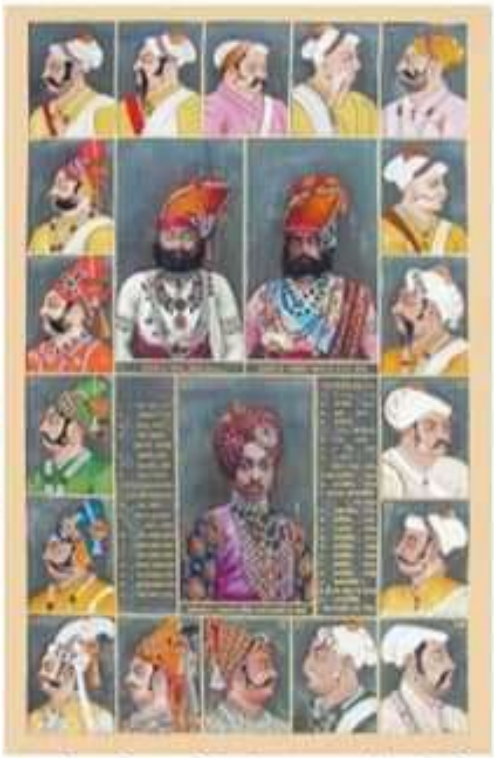

—डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित

मारवाड़ रै राठौड़ राजवंश रौ गौरवशाली इतिहास दुनिया मांय आपरी खास पिछाण राखै। वीरता अर स्वाभिमान रा पर्याय राव सीहा कन्नौज सूं मारवाड़ मांय आय'र राठौड़ राजवंश री थरपणा करी ही। इस संबंध में अेक दूहौ चावौ है—

बारह सौ बहरोतड़ै, पाली कियौ प्रवेस।
सीहा नै देपालदे, आया मुरधर देस॥

राव सीहा री १४वीं पीढी में राव जोधा हुया, उणां ई वि.सं. १५१५ में मेहराणगढ दुरग री थरपणा कर'र जोधपुर स्हैर बसायौ। लोक मांय इण बात रौ अेक दूहौ प्रचलित है—

पनरै सौ पनरोतड़ै,
जेठ मास में जाण।
सुद ग्यारस सनिवार रौ,
मंडियौ गढ महराण॥

मारवाड़ रै राठौड़ राजवंश रै वीरोचित अैतिहासिक उपलब्धियां रै कारण इणां नै 'रणबंका राठौड़' रै बिड़द सूं संबोधित कर्‌यौ जावै। पण अठै विचारणजोग बात आ है के इण उगती री ओट में इणां री दूजी मैतवपूरण उपलब्धियां उजागर नीं हुय सकी, जिणां में इणां री— साहित्य साधना, सांस्कृतिक गौरव, स्थापत्य कला, चित्रकला, मूरतीकला, मायड़भाषा प्रेम, कुसळ शासन प्रबंधन, लोक वैवार, लोक कल्याण रा काम, चिकित्सा पद्धति, पशु-पखी प्रेम रै अलावा अनेक विसय उल्लेखजोग है। मारवाड़ रै राठौड़ राजवंश रै मायड़भाषा संरक्षण अर साहित्यिक योगदान आज तांई समुचित रूप सूं उजागर नीं हुय सकियौ। सो इण विसय में शोध री महती दरकार है।

जोधपुर रै राठौड़ शासकां री साहित्य साधना

राजतंत्र में राजावां री घणकरी बगत जुद्ध रै कामां में बीतणी सुभाविक ही। इण द्रिस्टी सूं देख्यौ जावै तौ मध्यकालीन मारवाड़ री राजनीतिक उठा-पटक सूं अेक बात सामी आवै, या आ के जीवण सारू जुद्ध जरूरी ही। पण, इणी राजतंत्र मांय कीं अैड़ा राजा ई सामी आवै, जिका जीवण सारू जुद्ध री जगै साहित्य साधना नै बेसी मैतवपूरण मानता हा। मारवाड़ रा अनेक राठौड़ शासकां आपरी इणी सकारात्मक सोच रै कारण उल्लेखजोग साहित्य-सिरजण करियौ। इणां में कीं मैतव-पूरण राजावां री साहित्य-साधना इण भांत है—

महराजा जसवंतसिंह प्रथम
(१६३८-१६७५)

जोधपुर रै संस्थापक राव जोधा री ११वीं पीढी में महाराजा जसवंतसिंह प्रथम हुया। अै वीर, स्वाभिमानी अर नीति-निपुण हूवण रै साथै अेक कवि ई हा। संस्कृत, डिंगल अर पिंगल भाषावां रै अलावा उर्दू अर फारसी भाषा रा ई जाणकार हा। मध्यकालीन साहित्य रै इतिहास में इणां रौ ग्रंथ 'भाषा-भूषण' आपरौ मैतवपूरण स्थान राखै। इणां रै प्रमुख ग्रंथां में 'भाषा-भूषण', 'आनंद विलास' (पद्य), 'अनुभव प्रकाश' (पद्य), 'अपरोक्ष सिद्धांत (पद्य)'; 'सिद्धांत-बोध' (गद्य-पद्य), 'सिद्धांतसार' (पद्य), 'चंद्रबोध' (नाटक), 'फूली-जसवंत संवाद', 'इच्छा विवेक' (वेदांत ग्रंथ) उल्लेखजोग है।

महाराजा अजीतसिंह
(१७०७-१७२४)

वीर दुर्गादास राठौड़ री छत्तरछींया मांय नवौ जीवण प्राप्त करण वाळा महाराजा अजीतसिंह रौ जीवण बडौ संघरसमय रैयौ। महाराजा अजीतसिंह राजस्थानी रा बडा रचनाकार हा। अै डिंगल अर पिंगल दोनूं ई काव्य-शैलियां में साहित्य-सिरजण करियौ। इणां रै मैतवपूरण ग्रंथां में 'गुणसार', 'भावविरही', 'दुर्गापाठ भाषा', 'राजरूप रौ ख्याल', 'निर्वाणी दोहा', 'ठाकुरां रा दोहा', 'भवानी सहस्रनाम', 'गज उद्धार' मान्या जावै। मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य में 'गुणसार' अेक मैतवपूरण ग्रंथ मान्यौ जावै। इण संबंध में अेक दूहौ चावौ है—

प्रथम वरण शृंगार को, राजनीति निरधार।
जोग जुगति यां में सबै, ग्रंथ नाम गुणसार॥

महाराजा मानसिंह
(१८०३-१८४३)

महाराजा मानसिंह नाथ गुरु रा भगत हुवण रै साथै-साथै अेक साहित्य साधक रै रूप में ई आपरी खास पिछाण राखै। बहुभाषाविद्, काव्य-मर्मज्ञ, साहित्य-संरक्षक अर मायड़भाषा सपूत रै रूप में सामी आवै। आं संस्कृत, राजस्थानी अर ब्रजभाषा में ५० सूं बेसी ग्रंथां री रचना करी। इणां रा प्रमुख ग्रंथ है— 'जलंधर चरित', 'जलंधर ज्ञान सागर', 'जलंधर चंद्रोदय', 'नाथ चरित', 'नाथ पुराण', 'नाथ स्तोत्र', 'सिद्धगंगा', 'मुक्ताफल संप्रदाय', 'भागवत री मारवाड़ी भाषा टीका', 'शृंगार रस री कविता' , 'नाथाष्टक', 'तेजमंजरी', 'पंचावली', 'स्वरूपों के कवित्त', 'मान-विचार', 'सेवासार', 'उद्यान वर्णन', 'आराम रोशनी' इत्याद। लोक मांय 'रीझ अर खीज रा धणी' रै रूप में चावा रैयै महाराजा मानसिंह री गुणग्राहकता अद्भुत ही। इणां रै संबंध में अेक दूहौ लोक मांय प्रचलित है—

जोध बसायौ जोधपुर, ब्रज कीनौ ब्रिजपाल।
लखनेऊ कासी दिली, मान कियौ नेपाल॥

जोधपुर रै राठौड़ शासकां री साहित्यिक सेवा री द्रिस्टी सूं महाराजा अभयसिंह (१७२४-१७४९) अर महाराजा बखतसिंह (१७५१-१७५२) रा नांव ई उल्लेखजोग है, जिणां आपरी मायड़भाषा में केई भजन, स्तुतियां, छप्पय अर फुटकर कवित्त लिखिया।

जोधपुर राजवंश री राणियां री साहित्य साधना

जोधपुर राठौड़ राजवंश में राणियां री साहित्य साधना माथै निजर डालां तौ केई मैतवपूरण नांव सामी आवै, जिणां उण बगत री सामाजिक कुप्रथावां नै तोड़'र साहित्य जगत मांय आपरी इतिहास रचियौ।

भटियाणी राणी प्रतापकुंवरी

इण द्रिस्टी सूं सै सूं पैला नांव महाराजा मानसिंह री महाराणी भटियाणी राणी प्रतापकुंवरी रौ आवै। भटियाणी राणी प्रतापकुंवरी आपरी मायड़भाषा में लगैटगै १५ ग्रंथां री रचना करी।

डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित

इणां रै ग्रंथां रा नांव इण भांत है— 'ज्ञानप्रकाश', 'प्रताप पच्चीसी', 'प्रेमसागर', 'रामचंद्र नाम महिमा', 'राम गुण सागर', 'रघुवर स्नेह लीला', 'राम प्रेम सुख सागर', 'रामसुजस', 'रघुनाथजी के कवित्त', 'भजन पद हरिजस', 'प्रताप विनय', 'रामचंद्र विनय', 'हरिजस गायन', 'पत्रिका' आद। 'प्रतापकुंवरी पद रत्नावली' नांव सूं इणां री अेक भजन-संग्रै प्रकासित हुयौ।

महाराणी जाडेची प्रतापबाला

इणी कड़ी में दूजौ मैतवपूरण नांव है महाराजा तखतसिंह री महाराणी जाडेची प्रतापबाला। इणां रा दो मैतवपूरण ग्रंथ सामी आया है— 'हरि पदावली' अर 'राम पदावली'।

महाराणी बाघेली रणछोड़कुंवरी

महाराजा तखतसिंह री दूजी महाराणी बघेल राणी रणछोड़कुंवरी रा केई फुटकर भगती-पद मिलै।

अै दोनूं ई जाडेची अर बाघेली महाराणियां वैष्णव संप्रदाय सूं प्रभावित ही, सो अै आपरा भगती पगद भगवान् विष्णु री आराधना में लिखिया।

कविराजा बांकीदास आशिया

बघेल राणी विष्णुप्रसादकुंवरी

महाराजकुंवर किशोरसिंह री धरमपत्नी बघेल राणी विष्णुप्रसादकुंवरी रौ नाम साहित्य जगत मांय बौत मैतवपूरण मानीजै। 'अवध विलास', 'कृष्ण विलास' अर 'राधा रास विलास' नांव सूं इणां रा तीन ग्रंथ मिलै।

अठै इण बात री खास ध्यान राखण री बात है के आं महिला रचनाकारां री साहित्य-साधना रै लारै ओ री मूळ ध्येय भगवद्भगती ई रैयौ है।

जोधपुर रै राठौड़ शासकां रा राज्याश्रित कवि

जोधपुर रियासत रा राठौड़ शासक आपरी शूरवीरता रै साथै-साथै दानवीरता रै रूप में ई आपरी खास पिछाण राखै। इण रियासत रा राजावां आप-आप रै बगत मांय अनेक कवियां नै राज्याश्रय प्रदान कर'र उणां नै 'करोड़ पसाव', 'लाख पसाव', 'हाथी पसाव', 'पालकी पसाव' आद रै साथै-साथै गांवां री जागीरां तकात प्रदान करी। जोधपुर राजावां कानी सूं 'लाख पसाव' रै तौल पांच हजार रुपया सालाना री जागीर, हाथी या घोड़ौ, सोनै रा आभूषण , नगद राशि रै अलावा वस्त्र वगैरा देवण री परंपरा रैयी ही। मारवाड़ राजघराणै रा प्रमुख राज्याश्रित कवि अर उणां री रचनावां इण भांत है—

राव वीरम : कवि बादर ढाढी— 'वीरमायण'।

राव जोधा : कवि गाडण पसाइत— 'गुण जोधाण', 'राव रिड़मल री रूपक'।

राव मालदेव : कवि आसानंद बारहठ— 'उमादे रा कवित्त', 'बाघजी रा दूहा', 'राव चंद्रसेन री रूपक'। कवि बखता खिड़िया— 'राव मालदेव री कवित्त'।

सवाई राजा सूरसिंह : कवि माधोदास दधवाड़िया— 'रामरासौ', 'गजमोख', 'भाषा दसम स्कंद'।

महाराजा गजसिंह प्रथम : कवि केसवदास गाडण— 'गजगुण चरित', 'गुणरूपक बंध', 'राव अमरसिंह रा दूहा', 'निसाणी विवेक वारता'। कवि डूंगरसी रतनू— महाराजा गजसिंह

रौ गीत'। कवि हेम सामौर— 'गुणभाषा चरित्र'। कवि कल्याणदास मेहडू— 'राव रतनसी री वेलि'। कवि हरिदास बनावत— 'राजा गजसिंह री कविता'। कवि बारहठ राजसी— 'राजा गजसिंह रा झूलणा'। कवि नरहरिदास रोहड़िया— 'अवतार चरित', 'रामचरित कथा', 'दसम स्कंद', 'नरसिंह अवतार', 'अहिल्यापूर्व प्रसंग', 'अमरसिंह रा दूहा'।

ख्यात रै अनुसार महाराजा गजसिंह प्रथम चवदै कवियां नै 'लाख पसाव' देय'र सम्मानित करिया हा।

महाराजा जसवंतसिंह प्रथम : महाकवि वृंद— 'वृंद सतसई', 'समेत शिखर छंद'। कवि दलपत— 'जसवंत उद्योग'। मुहणोत नैणसी— 'नैणसी री ख्यात'। कवि धम्मवर्धन— 'जसवंतसिंह रा मरसिया'।

ख्यात रै अनुसार महाराजा जसवंतसिंह प्रथम आपरी लाहौर-जात्रा रै बगत अेक साथै चवदै कवियां नै पंदरै सौ पंदरै सौ रुपया देय'र सम्मानित करिया हा।

महाराजा अजीतसिंह : कवि दीक्षित बालकृष्ण— 'अजीत चरित्र'। कवि भट्ट जगजीवनराम— 'अजितोदय'। कवि द्वारकाप्रसाद दधवाड़िया— 'महाराजा अजीतसिंह री दवावैत'। कवि हरिदास भाट— 'अजीतसिंह चरित'। कवि पंडित श्यामराम— 'ब्रह्मांड वर्णन'।

महाराजा अभयसिंह : कवि करणीदान कविया— 'सूरज प्रकाश'। कवि खेतसी सांदू— 'भाषा भारत'। कवि सेवग प्रयाग— 'अभैगुण'। कवि वीरभाण रतनू— 'राजरूपक'। कवि पृथ्वीराज सांदू— 'अभय विलास'। कवि भट्ट जगजीवनराम— 'अभयोदय'।

ख्यात रै अनुसार महाराजा अभयसिंह चवदै कवियां नै 'लाख पसाव' देय'र सम्मानित करिया हा।

महाराजा विजयसिंह : कवि ओपाजी आढा— 'डिंगळ गीत'। कवि पहाड़खां आढा— 'गोगादे रूपक'। कवि किसन बारहठ— 'विजय विलास'। कवि भैरूदान बारहठ— 'गीत विजैसिंह राठौड़ री तलवार रौ'। कवि हुकमीचंद

मुंहता नैणसी

खिड़िया— 'राजस्थानी रूपक'।

महाराजा भीमसिंह : कवि रामकर्ण— 'अलंकार समुच्चय' (भाषा ग्रंथ)।

महाराजा मानसिंह : महाराजा मानसिंह आपरै शासनकाल मांय इकसठ कवियां नै राज्याश्रय देय'र उणां नै सम्मानित करिया। इण संबंध में कवि शक्तिदान कविया रौ अेक दूहौ देखणजोग है—

इगसठ सांसण आपिया,
सुकव्यां कर सममान।
गढपत सुतन गुमान रौ,
मुरधर राजा मान॥

महाराजा मानसिंह कवि बांकीदास आसिया नै

कविया करणीदान

'कविराजा' री उपाधि देय'र आपरा कविगुरु बणाया। कवि बांकीदास रा चाळीस सूं बेसी ग्रंथ राजस्थानी में मिलै, जिणां री रचना महाराजा मानसिंह रै सान्निध्य में हुयी। बांकीदास रै अलावा ई अनेक कवियां री जाणकारी मिलै जिका महाराजा मानसिंह रै बगत मांय साहित्य-सिरजण करियौ। इणां में खास इण भांत—

रामदान लालस— 'भीमप्रकास', 'करणी रूपक'। कवि मनसाराम सेवक (कवि मंछ)— 'रघुनाथ रूपक गीतां रौ'। कवि नवलदास लालस— 'आबू वरणन'। कवि उदयराम थबूकड़ा— 'कविकुल बोध'। कवि चैनाजी चारण— 'जलंधर स्तुति'। कवि शिवनाथ— 'जलंधर जस वरणन'। कवि मूलचंद यति— 'मानसागरो महिमा'। कवि मनोहरदास— 'जस आभूषण चंद्रिका', 'फूल चरित्र'। कवि दौलतराम सेवग— 'जलंधर गुण रूपक'। मीर हैदर अली— 'जलंधर स्तुति'। कवि सुकालनाथ— 'नाथ आरती'। कवि पन्नाजी सेवग— 'नाथ उत्सवमाला'। कवि सैणीदान— 'नाथ स्तुति'। कवि पीरचंद भंडारी— 'नाथ स्तुति'। कवि गुमानजी विप्र— 'दसम स्कंद भाषा'। कवि ताराचंद व्यास— 'नाथानंद प्रकासिका'। कवि गाडूराम— 'जलंधर जस भूषण'। कवि वागीराम— 'मानसिंह जस रूपक'। कवि शंभूदत्त— 'नाथ चंद्रोदय' राजकुमार प्रबोध'। पं. सदानंद त्रिपाठी— 'अवधूत गीता' (टीका), 'सिद्ध-तोषिकी' (टीका), 'आत्मदीप्ति' (टीका)। पं. विश्वरूप— 'गोरक्षसहस्रनाम', 'मेघमाला'। कवि भीम भट्ट— 'विवेक मार्तंड' री 'योगितोषिणी' टीका। कवि उत्तमचंद भंडारी— 'नाथचंद्रिका', 'तारक तत्त्व', 'अलंकार आशय', 'नीति री बात', 'रतना-हमीर री वारता', 'नाथपंथियों की महिमा'। कवि गोपाल— 'मानसिंह री कवित्त'। कवि बुधजी आशिया— 'मानसिंह री दवावैत'।

अठै अेक मैतवपूरण बतावणजोग बात आ है के 'महाराजा मानसिंह री ख्यात' अर 'मारवाड़ का इतिहास' (पं. विश्वेश्वरनाथ रेउ) रै अनुसार महाराजा मानसिंह २६ कवियां नै अेक-अेक

हाथी अर 'लाख पसाव' देय'र सम्मानित करिया हा।

'महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश शोध केन्द्र' सूं प्रकासित शोध-पत्रिका 'रसीलेराज' रै अंक १४-१५ मांय ई कवियां री जाणकारी दिरीजी है, जिकी इण भांत है—

—महाराजा तखतसिंह री बगत बाघा भाट नांव रौ कवि डिंगळ गीतां री रचना करी ही, जिणनै महाराजा समुचित मान-सम्मान प्रदान करियौ हौ।

—महाराजा जसवंतसिंह द्वितीय रै बगत कविराजा मुरारीदान री लिखियोड़ी काव्य-ग्रंथ 'जसवंत जसोभूषण' अेक बौत ई मैतवपूरण ग्रंथ है। कविराजा मुरारीदान नै महाराजा जसवंतसिंह द्वितीय रै अलावा महाराजा सरदारसिंह रै बगत पांच हजार रेख री चार गांवां री जागीर ई दिरीजी।

—इणां रै अलावा कवि लगराज सोजत रै लिखियोड़ी मैतवपूरण रचनावां में 'देव विलास', 'पाबूजी रा दूहा', 'कालिकाजी रा दूहा', 'महादेवजी री निसाणी', 'लधमल सतक', 'सीख बतीसी' अर 'रुकमांगद चरित' सामल है।

आजादी मिलियां रै बाद वरतमान में ई 'मेहरानगढ म्यूजियम ट्रस्ट' रै तहैत पूर्व नरेश महाराजा गजसिंहजी कानी सूं विभिन्न छेत्रां मांय उल्लेखजोग काम करण वाळै लोगां नै हर बरस 'मारवाड़ रत्न' अवार्ड सूं सम्मानित करियौ जाय रैयौ है। साहित्य रै छेत्र मांय ई उल्लेखजोग काम करण वाळै रचनाकारां नै औ अवार्ड दियौ जाय रैयौ। इणरै अलावा 'वीर दुर्गादास राठौड़ स्मृति समिति' कानी सूं ई मायड़भाषा रै रचनाकारां नै हर बरस सम्मानित करियौ जाय रैयौ है।

सो आ बात प्रामाणिक रूप सूं कैयी जाय सकै के जोधपुर रै राठौड़ शासकां कानी सूं कवियां अर साहित्यकारां नै राज्याश्रय देय'र उणां नै समुचित मान-सम्मान देवण री परंपरा रैयी है। औ इज कारण है के अठै डिंगळ अर पिंगळ शैलियां रा मैतवपूरण ग्रंथ बडी संख्या में उपलब्ध है।

मारवाड़ रै राठौड़ राजावां री विसाल साहित्य भंडार उपलब्ध है, जिण मांय महाराजा जसवंतसिंह प्रथम, महाराजा अजीतसिंह, महाराजा मानसिंह रा नांव मैतवपूरण है।

महाकवि सूंद

राठौड़ राजवंश रा शासकां सदीव कवियां अर साहित्यकारां नै राज्याश्रय देय'र उणां री साहित्य साधना नै मैतवपूरण सम्मान दियौ। इण दिस्टी सूं देखियौ जावै तौ कवियां नै गांवां री जागीर, करोड़ पसाव-लाख पसाव जैड़ा इनाम-इकरार देय'र उणां री संरक्षण करियौ।

राठौड़ राजवंश रा शासकां कवियां नै मान-सम्मान देवण रै साथै-साथै उणां री रचनवां नै सुरक्षित राखण सारू पोथीखाना (पुस्तकालय) री थरपणा कर'र उण मांय संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, ब्रजभाषा, हिंदी, उर्दू, फारसी अर दूजी भाषावां में लिखीजियै हस्तलिखित ग्रंथां नै सुरक्षित राखिया। इण दिस्टी

कविराजा मुरारीदान आशिया

सूं जोधपुर री 'पुस्तक प्रकाश', बीकानेर री 'अनूप संस्कृत पुस्तकालय' अर किशनगढ री 'सरस्वती भंडार' उल्लेखजोग है।

मारवाड़ रा राठौड़ शासकां आपरी मायड़भाषा नै मैतव देवता थकां बातां, ख्यातां, टीबा, टब्बा, वंशावली, बिड़दावली, विगत, गीत, अभिलेख, ताम्रपत्र, सिक्का, राजकाज री मोहर, जुद्ध वरणन अर दूजै राज्यां नै लिखीजण वाळै पत्रां सूं साहित्यिक विधावां नै सिमरिद्धता प्रदान करी। मारवाड़ राजवंश री रियासत री कोर्ट-कचैड़ी अर प्राथमिक स्कूलां मांय मायड़भाषा अनिवार्य करण सूं मायड़भाषा नै सदीव मैतव मिलती रैयी। आं सगळी बातां रै साथै अेक मैतवपूरण बात आ ई है के राजपरिवार कानी सूं मायड़भाषा रै सबदकोस अर व्याकरण निरमाण रै साथै-साथै दूजी भारतीय भाषावां में राजस्थानी भाषा रै ग्रंथां रै अनुवाद ई करवायी गयी। इण कारण राजस्थानी साहित्य री उल्लेखजोग प्रचार-प्रसार हुयी।

विश्व साहित्य जगत में राजस्थानी भाषा रै तहैत डिंगल अर पिंगल काव्य शैलियां री आपरी खास मैतव है। मारवाड़ रा राठौड़ शासकां आं दोन्यूं काव्य शैलियां मांय साहित्य सिरजण करण रै साथै-साथै आं शैलियां रै कवियां नै सरावणजोग सम्मान दियौ जिणसूं आं दोनूं ई काव्य शैलियां में लगौलग साहित्य सिरजण हुवती रैयी।

आं सगळी बातां रै अलावा अेक मैतवपूरण बात आ है के मारवाड़ री राठौड़ रियासत रा आश्रित कवियां नीं सिरफ शासकां रै वीरोचित कामां री गुणगान ई करियौ, बल्कै उणां रा अच्छा अर खुरा दोनूं तरै रै कामां नै उजागर कर'र आपरौ कवि-धरम निभायौ। कैवण रौ मतलब औ के आं कवियां अेक 'लोक प्रहरी' रै रूप में आपरी भूमिका निभायी अर राठौड़ शासकां आं कवियां नै मैतवपूरण संरक्षण प्रदान कर'र आपरी सहृदयता री परिचै दियौ। इण बात री गवाही में देवकरण बारहठ री अेक दूहौ प्रस्तुत है—

कूड़ौ-सांचौ कैवणौ,
है नहिं म्हारै हात।
कवि-समै री कैमरो,
विश्व बात विख्यात॥

आजादी रा भागीरथ : गांधी

संपादक
वेद व्यास • श्याम महर्षि

विगत

1. अतुल कनक	*गांधी बाबा सूं बात*	13
2. अनिता जैन 'विपुला'	*राष्ट्रपिता री जय-हुंकार*	15
3. अक्षयसिंह रत्नू	*भळै महात्मा भेज दो!*	16
4. आईदान सिंह भाटी	*औ कुण आयो, औ कुण आयो?*	17
5. इकराम राजस्थानी	*बापूजी!*	21
6. उदयराज उज्ज्वल	*भारत गांधी भानिया*	22
7. उदयवीर शर्मा	*नमस्कार!*	23
8. ओम नागर	*खादी अेक बच्यार*	25
9. कन्हैयालाल सेठिया	*बापू*	26
10. कमल रंगा	*निवण*	28
11. करणीदान बारहठ	*जद मिनखपणो हिड़कायो हो*	30
12. कल्याण सिंह राजावत	*खुद बणग्यो इतिहास रे*	34
13. कान्ह महर्षि	*भारत रै कण-कण में गांधी*	35
14. किरण राजपुरोहित 'नितिला'	*वै अमर है भारत में*	36
15. केशव 'पथिक'	*जलम्यो जद बापू गांधी*	37
16. कैलासदान उज्ज्वल	*गांधी गीत*	38
17. गजादान चारण 'शक्तिसुत'	*बदळ गयो है धारो बापू*	39
18. गजेसिंह राजपुरोहित	*मन रो महात्मा*	42
19. गणपतलाल डांगी	*संदेसो बापू रो सुणलो*	44
20. गणपतसिंह 'मुग्धेश'	*गांधी रै नाम चिट्ठी*	45
21. गिरधरदान रतनू दासोड़ी	*सबसूं है मोहन सिरमोड़*	47

दैनिक भास्कर
02-Apr-2020
जोधपुर Page 11

आखर जोत • संकट रा बादळ छंटसी, सुकून बरसेलो, बस घरां में रैवो

(वैश्विक कोरोना संकट को देखते हुए देश में लॉकडाउन है। सभी लोग घरों में दुबके हैं। पूरी मानवता पर आफत है। सभी प्रार्थना कर रहे हैं कि यह संकट जल्द टले। ऐसे ही माहौल में कवि-लेखक-साहित्यकार क्या कर रहे हैं। उनका समय कैसे कट रहा है। वे इन परिस्थितियों को किस तरह लेते हैं। ऐसे ही समय में राजस्थानी के कवि-कथाकार डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित का राजस्थानी भाषा में यह आलेख हमें जंग जीतने को ऊर्जा प्रदान करता है। यहां प्रस्तुत हैं संपादित अंश।)

मानखां री हिम्मत अर सावचेती रो वकत

डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित

आज आखी दुनियां जिण कोरोना वायरस सूं जूझ रैयी है, उण सूं आपाणो देस ई अछूतो नीं रैयो। आ महामारी देस रै घणकरां राज्यां मांय पसरती थकी राजस्थान में ई अठी-उठी छापळियोड़ी बैठी है। आज इण अबखी वेळा में सकळ मानव समाज माथै संकट रा बादळ मंडरायोड़ा है। पण आपां नै हिम्मत राखणी है। इण महामारी सूं डरण री नीं, फगत सावचेती राखण री जरूत है। घर छोड़ कठैई भाजण री नीं, फगत जागण री दरकार है। आज रै समै सरकार रै निरदेसां रो साचा मन सूं पालण करतां थकां खुद नै सावचेती सूं संभाळणी है। आपां भागसाली हां जको चेतण रो मोको मिळियो। अबै जे खुद नै बचाय लेवाला तो इण समाज अर राष्ट्र नै बचाय सकालां। आज जिण भांत चीन, अमेरिका, इटली अर दुनियां रा दूजा घणकरा देसां मांय कोरोना वायरस री चपेट में आय मिनखां री मौत हुय रैयी है वा विचारणजोग बात है। उठै लासां रा ढिगला लाग्योड़ा है, वांनै दाग देवणियो तो छोड़ो कोई पाणी देवणियो नीं है। उण आपाधापी कोरोना वायरस रा सिकार हुयोड़ा कौ लोग आपरै अठै ई आवणा, जिण सूं अठै ई खतरो बणग्यो। पण आपारी सरकार आपानै टैमसर जगाय दीना, देस रै मानखां नै बचावण सारू युद्ध स्तर माथै सकारात्मक प्रयास हुय रह्या है। ए प्रयास तद इज सफल हुय सकै जद आपां सगळा साचा मन सूं सैयोग करां, आपारै सैयोग रै बिना एकली सरकार ई कांई करसी? आज आखा देस में ताळो लाग्योड़ो है पण आपारा देवरूप-डाकधर अर वांरो स्टाफ रात-दिन एक कर मरीजां रो इलाज करै। पुळिसवाळा सुव्यवस्था बणावण रा सै जतन करै, समाजसेवी आठपौर गरीब लोगां री सेवा में लाग्योड़ा है, भामासाह जनकल्याण सारू आपरी तीजोरिया खोल राखी है। इण वास्तै देस रै हरेक आदमी रो ओ फरज है कै वो सरकार रै आदेस री पालणा साचा मन सूं करै। इणी में खुद री, समाज री अर देस री भलाई है। आपारी एक छोटी सी लापरवाही पूरा समाज नै संकट में नांखै, एड़ो काम करणो ई क्यूं? कोरोना वायरस छूत री एक घणी मांदगी है जको आगै सूं आगै बधती चालै। दुनियां रा डाकधरां नै अजै तांई इणरो कोई इलाज नीं मिळियो पण इणरो एक सटीक इलाज है के आप दूजां लोगां रै सम्पर्क मांय नीं आवो। आपारी सावचेती अर एकांत इज सटीक इलाज है। इणीज सारू सरकार सामाजिक-अळगाव अर खुद नै घर में राखण री सीख दीनी है। इण सीख रो आपानै कड़ाई सूं पालण करणो है। कोरोना वायरस नाम री इण महामारी सूं पैला ई आपारै देस-प्रदेस में कैई मोटी-मोटी बीमारियां आयी पण अठै रै मानखां री हिम्मत अर सावचेती रै आगै वांनै हारणो पड़ियो। क्यूं कै अठा रो मानखो खुद सारू नीं, मिनखपणां री मरजाद राखण सारू जीवै। इण अबकी वेळा में एकर आपां सगळा नै मिनखपणा री मरजाद राखणी है अर इण भयंकर महामारी सूं खुद नै, समाज नै अर देस नै बचाणो है। म्हनै पक्को भरोसो है के आपारो देस इण भयंकर कोरोना वायरस सूं अवस मुगत हुवैला।

पळकती प्रीत

गजेसिंह राजपुरोहित

Scanned with CamScanner

ISBN : 978-93-83148-49-3 ₹ 300
9789383148493 00300
www.ektaprakashan.com

❑ प्रकाशक :
एकता प्रकाशन
चूरू-331001 राजस्थान
website : www.ekataprakashan.com
email : ekataprakashan@gmail.com

❑ © सगळा इधकार लेखक रा

❑ आवरण चितराम : प्रवेश सोनी, कोटा

❑ पैलौ संस्करण : अगस्त 2020

❑ मोल : 300/- रिपिया

❑ ISBN : 978-93-83148-49-3

❑ कंप्यूटरीकरण :
जांगिड़ कंप्यूटर्स, जोधपुर

❑ छापणहार :
नागणेचियां ऑफसेट प्रिण्टर्स, जोधपुर

PALAKATI PREET (Rajasthani Poetry)
by Dr. Gaje Singh Rajpurohit

First edition : 2020 Price : 300/-

Scanned with CamScanner

डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित

जलम : 14 जून, 1974, निम्बोल, जिला-पाली (राज.)

पढाई : अेम.अे., पीअेच.डी. (राजस्थानी साहित्य)

छपी पोथ्यां : जस रा आखर (राज. काव्य) 2006
राजहंस (साहित्य शोध ग्रंथ) 2008
आत्मदर्शन (स्मृति ग्रंथ) 2010
राजपुरोहित : आदिकाल से आज लग 2018

संपादन : सुजा शतक (वीरांगना सुजा) 2007
अंजस (राजस्थानी शोध) 2015
साहित्य-सुजस (12वीं मा.शि. बोर्ड राजस्थान) 2017
अंजस रा आखर (10वीं राज.स्टेट ओ. स्कूल) 2017
वीर दुर्गादास राठौड़ (ओळखाण) 2018
परिसर (ज.ना.वि.वि. समाचार पत्र) 2018

साहित्यिक-संगोष्ठी : आजलग 7 अंतरराष्ट्रीय अर 35 राष्ट्रीय संगोष्ठियां मांय न्यारा-न्यारा साहित्यिक विषयां माथै शोध-पत्र प्रस्तुत। अै शोध-पत्र राजस्थानी भाषा-साहित्य री पत्रिकावां मांय लगोलग प्रकाशित हुया।

- राजस्थानी डी.डी. दूरदर्शन जयपुर अर आकासवाणी केन्द्र, जोधपुर सूं लारला केई बरसां सूं राजस्थानी काव्यपाठ, परिचरचा अर विसिष्ठ आलेखां रौ प्रसारण।
- केई सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक अर शैक्षणिक संस्थावां सूं सक्रिय जुड़ाव।
- ज.ना.वि.वि. री केई अकादमिक, साहित्यिक अर सांस्कृतिक समितियां मांय सक्रिय भागीदारी।
- वीर दुर्गादास राठौड़ अवार्ड-2004, सिरोपाव सम्मान-2008 अर राजस्थानी भाषा साहित्य सेवा सम्मान-2019 द्वारा-महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश, मेहरानगढ, दुर्ग, जोधपुर।
- स्वामी आत्मानन्द सरस्वती साहित्य पुरस्कार-2008 द्वारा-श्री आत्मानन्द ट्रस्ट, बाड़वा, पाली (राज.)

विश्वविद्यालय सेवा : **असिस्टेंट प्रोफेसर अर पूर्व विभागाध्यक्ष,**
राजस्थानी विभाग, ज.ना. व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर
: **निदेशक**
बाबा रामदेव शोधपीठ, ज.ना. व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

रैवास : III E / 2, विश्वविद्यालय स्टाफ कॉलोनी
ज.ना. व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर-342 011 (राज.)

मोबाइल : 9928418822

ई-मेल : gsnimbol@gmail.com

एकता प्रकाशन

ISBN : 978-93-83148-49-3 ₹ 300

9 789383 148493 00300

www.ektaprakashan.com

Scanned with CamScanner

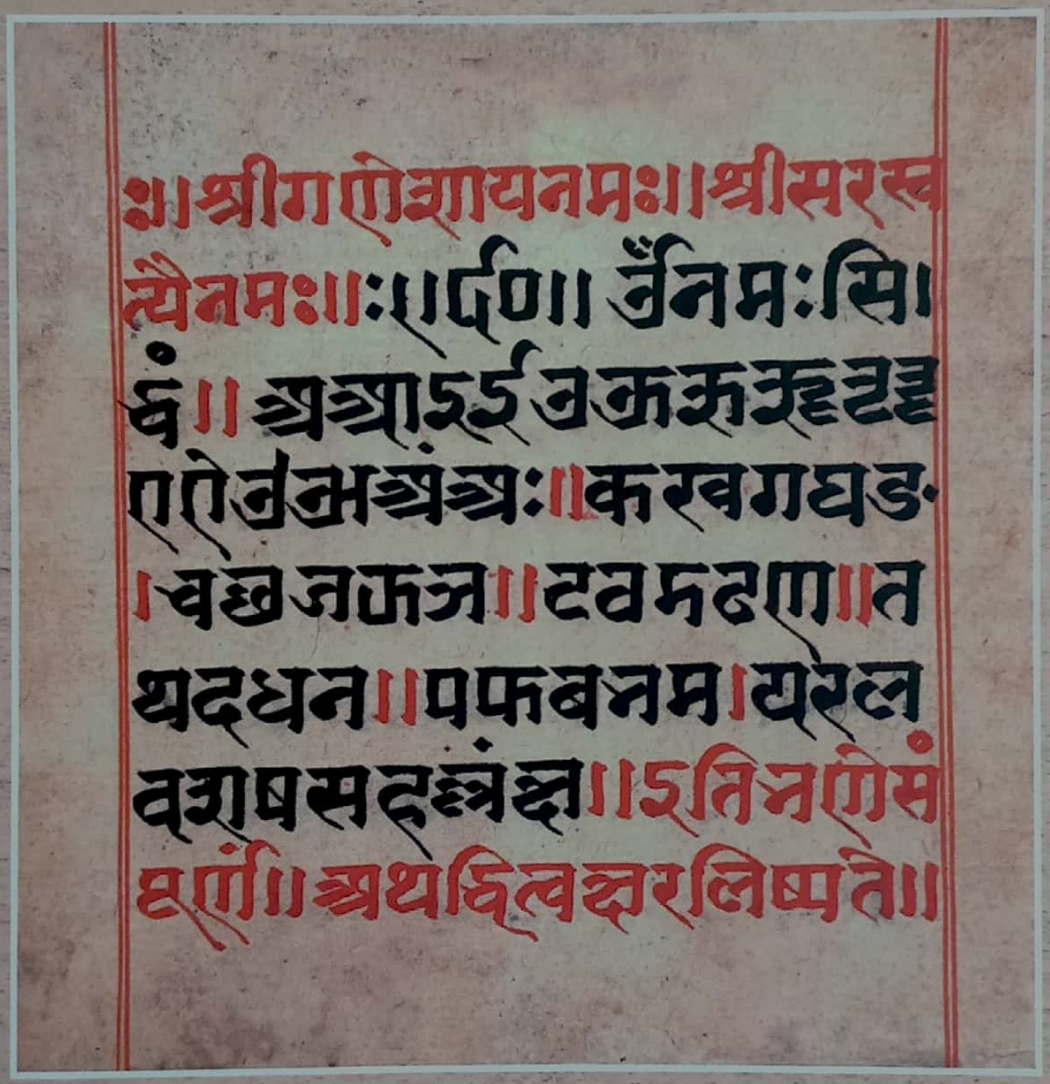

राजस्थानी साहित्य री सौरम

गजेसिंह राजपुरोहित

Scanned with CamScanner

❋ प्रकाशक

राजस्थानी ग्रन्थागार

प्रकाशक एवं वितरक

पेलौ माळौ, गणेश मन्दिर रै सांम्ही
सोजती गेट, जोधपुर (राजस्थान)
0291–2657531, 2623933 (O)
E-mail : info@rgbooks.net
Website : www.rgbooks.net

❋ ISBN : 978-93-90179-14-5

❋ © सगळा इधकार लेखक रा

❋ पैलौ संस्करण : 2020

❋ मोल : दो सौ पचास रिपिया मात्र (₹ 250.00)

❋ आवरण चितराम : राजस्थानी कक्कापाटी

❋ कंप्यूटरीकरण : जांगिड़ कंप्यूटरर्स, जोधपुर

❋ छापणहार : नागणेचिया ऑफसेट प्रिण्टर्स, जोधपुर

Rajasthan Sahitya Ri Souram (Rajasthani Aalekh)

by : **Dr. Gaje Singh Rajpurohit**

Published by : **Rajasthani Granthagar,** Jodhpur

First Edition : 2020 ❖ Price ₹ 250.00

Scanned with CamScanner

डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित

जलम : 14 जून, 1974, निम्बोल, जिला-पाली (राज.)

पढाई : अेम.अे., पीअेच.डी. (राजस्थानी साहित्य)

छपी पोथ्यां :
जस रा आखर (राजस्थानी काव्य) 2006
राजहंस (साहित्य शोध ग्रंथ) 2008
आत्मदर्शन (स्मृति ग्रंथ) 2010
राजपुरोहित : आदिकाल से आज लग 2018
पळकती प्रीत (राजस्थानी काव्य) 2020

संपादन :
सुजा शतक (वीरांगना सुजा) 2007
अंजस (राजस्थानी शोध) 2015
साहित्य-सुजस (12वीं मा.शि. बोर्ड राजस्थान) 2017
अंजस रा आखर (10वीं राज.स्टेट ओ. स्कूल) 2017
वीर दुर्गादास राठौड़ (ओळखाण) 2018
परिसर (ज.ना.वि.वि. समाचार पत्र) 2018

साहित्यिक-संगोष्ठी : आजलग 7 अंतरराष्ट्रीय अर 35 राष्ट्रीय संगोष्ठियां मांय न्यारा-न्यारा साहित्यिक विषयां माथै शोध-पत्र प्रस्तुत। अै शोध-पत्र राजस्थानी भाषा-साहित्य री पत्र-पत्रिकावां मांय लगोलग प्रकाशित हुया।

- राजस्थानी डी.डी. दूरदर्शन जयपुर अर आकासवाणी केन्द्र, जोधपुर सूं लारला केई बरसां सूं राजस्थानी काव्यपाठ, परिचरचा अर विसिष्ठ आलेखां रौ प्रसारण।
- केई सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक अर शैक्षणिक संस्थावां सूं सक्रिय जुड़ाव।
- ज.ना.वि.वि. री केई अकादमिक, साहित्यिक अर सांस्कृतिक समितियां मांय सक्रिय भागीदारी।
- वीर दुर्गादास राठौड़ अवार्ड-2004, वीर दुर्गादास राठौड़ स्मृति समिति जोधपुर।
- सिरोपाव सम्मान-2008, राजमाता साहिबा श्रीमती कृष्णाकुमारीजी, मारवाड़-जोधपुर।
- स्वामी आत्मानन्द सरस्वती साहित्य पुरस्कार-2008 -श्री आत्मानन्द ट्रस्ट, बाड़वा, पाली (राज.)
- राजस्थानी भाषा साहित्य सेवा सम्मान-2019, महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश, मेहरानगढ, जोधपुर।
- डॉ. नृसिंह राजपुरोहित राजस्थानी साहित्य पुरस्कार, सिटिजन्स सोसायटी फॉर एज्यूकेशन, जोधपुर।

विश्वविद्यालय सेवा : **असिस्टेंट प्रोफेसर अर पूर्व विभागाध्यक्ष,**
राजस्थानी विभाग, ज.ना. व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

: **निदेशक**
बाबा रामदेव शोधपीठ, ज.ना. व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

रैवास : III E / 2, विश्वविद्यालय स्टाफ कॉलोनी
ज.ना. व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर-342 011 (राज.)

ई-मेल : gsnimbol@gmail.com

राजस्थानी ग्रन्थागार

www.rgbooks.net

ISBN : 978-93-90179-13-8

9 789390 179138

₹ 250.00

Scanned with CamScanner

भारतीय साहित्य रा निरमाता

ऊमरदान लाळस

गजेसिंह राजपुरोहित

Scanned with CamScanner

Umar Dan Lalas: A monograph in Rajasthani by Gaje Singh Rajpurohit on the eminent Rajasthani writer, Umar Dan Lalas. Sahitya Akademi, New Delhi 2021, ₹50.

Copyright © Sahitya Akademi 2021
Gaje Singh Rajpurohit (1974) : Author

Genre : monograph
Published by Sahitya Akademi

First Edition : 2021
Price : Rs. 50/-

ISBN 978-93-90866-93-9

कॉपीराइट © साहित्य अकादेमी 2021
गजेसिंह राजपुरोहित (1974) : लेखक

विधा : विनिबंध
साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित

प्रथम संस्करण : 2021
मूल्य : 50 रुपये

सगळा हक सुरक्षित। साहित्य अकादेमी री इजाजत रै बिना फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग का किणी दूजी भांत सूं सूचना-भंडारण अर पाछी पावण री विधि समेत किणी ई इलेक्ट्रॉनिक का मैकेनिकल माध्यम सूं इण पोथी रै किणी अंश रो पुनरुत्पादन अर उपयोग कोनी करयो जा सकै।

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय : रवींद्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मारग, नवी दिल्ली-110 001
secretary@sahitya-akademi.gov.in | 011-23386626/27/28
विक्रय विभाग : स्वाति, मंदिर मारग, नवी दिल्ली-110 001
sales@sahitya-akademi.gov.in | 011-23745297
कोलकाता : 4, देवेंद्रलाल ख़ान रोड, कोलकाता-700 025
rs.rok@sahitya-akademi.gov.in | 033-24191683/24191706
चेन्नई : मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग (द्वितीय तल) 443(304) अन्नासालइ तेनामपेट, चेन्नई-600 018
chennaioffice@sahitya-akademi.gov.in | 044-24311741
मुंबई : 172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मारग, दादर, मुंबई-400 014
rs.rom@sahitya-akademi.gov.in | 022-24135744/24131948
बेंगळूरु : सेंट्रल कॉलेज परिसर, डॉ. बी. आर. आंबेडकर वीथी, बेंगळूरु-560 001
rs.rom@sahitya-akademi.gov.in | 080-22245152/22130870

शब्द संयोजन : क्विक ऑफसेट, दिल्ली-110032

मुद्रक : जी.एस. ऑफसेट, दिल्ली - 32

वेबसाइट : http://www.sahitya-akademi.gov.in

Scanned with CamScanner

ऊमरदान लाळस रो जलम वि.स. 1908, वैसाख सुदी बीज, सनिवार रै मुजब 3 मई 1851 नै मारवाड़–जोधपुर रै ढाढरवाळा गांव में हुयौ। बाळपणां में मांयता रो सुरगवास हुयां पच्छै जीवणभर इणांनै अणूतो'ई जूंझणौ पड़यौ। कीं समैं तांई रामस्नेही-सम्प्रदाय में संत बण'र रहया पण उठे कथनी अर करणी में अंतर देख'र अे संत-भेख छोड़'र ग्रहस्थ जीवण अपणायौ। स्वामी दयानंद सरस्वती रै जीवण दरसण सूं अे धणा प्रभावित हुआ अर जीवणभर वां रै सिद्धांता नै अपणाया। साचा अरथां में कवि ऊमरदान लाळस एक निडर, सतवादी जनकवि हां, जकौ आपरै काव्य में आमजन री पीड नै सबळता सूं उजागर कर समैं अर समाज री सच्चाई नै दरसायी। समाज में पसरयौड़ी कुरीतियां, कुप्रथावां, अंधविश्वास, विभचार, भ्रष्टाचार, इन्याव अर आतंक रै खिलाफ आवाज उठाय'र आम जन में चेतना भरण रौ अणूठौ महताऊ काम करयौ। आमजन रै बौलचाल री राजस्थानी भाषा में इणां री काव्य-रचनावां रो संग्रह 'ऊमर-काव्य' अर 'ऊमरदान-ग्रंथावली' रै नाम सूं प्रकासित हुयौ। आधुनिक राजस्थानी काव्य में कवि ऊमरदान पैलो कवि है जकौ राजस्थानी कविता नै रंग महलां रा सिणागार अर खागां री पळकार सूं बारै निकाळ'र आमजन रै मन री पीड़ नै उजागर करण री ताकत बणायी, समाज अर देस में समाज सुधार कर नव-जागरण री चेतना जगाई।

गजेसिंह राजपुरोहित रो जलम 14 जून 1974 नै राजस्थान रै पाली जिला अन्तरगत गांव निम्बोल में हुयौ। राजस्थानी भाषा-साहित्य में जोधपुर रै जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय सूं अेम.अे., पीअेच-डी. री डिग्री प्राप्त करी। राजस्थानी भाषा रा युवाकवि, आलोचक रै रूप में आपरी पहचाण राखणवाळा डॉ. राजपुरोहित री आज तांई शोध अर साहित्य री पांच पौथ्यां प्रकासित होय चुकी है अर लगै टगै सात पौथ्यां रौ संपादन ई करयौ। देस मांय कैई राष्ट्रीय अर अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठियां मांय शोध-पत्र प्रस्तुत करया, जिणरौ प्रकासन लगौलग साहित्यिक पत्र-पत्रिकावां में हुवतौ रहयौ। लारला बीस बरसां सूं राजस्थानी भाषा मान्यता आन्दोलन सूं हदभांत जुड़ाव। आप कैई साहित्यिक, शैक्षणिक अर सामाजिक संस्थावां सूं जुड़ाव राखै। अबार जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर रै राजस्थानी विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर; पूर्व विभागाध्यक्ष अर इणी'ज विश्वविद्यालय रै बाबा रामदेव शोधपीठ में निदेशक रै रूप में आपरी महताऊ सेवा देय रहया है।

ऊमरदान लाळस (*राजस्थानी*)
₹ 50/-
http://www.sahitya-akademi.gov.in
ISBN 978-93-90866-93-9
9 789390 866939

Scanned with CamScanner

राजस्थानी लोक देवी-देवता : परंपरा अर साहित्यिक दीठ

गजेसिंह राजपुरोहित

Scanned with CamScanner

❑ प्रकाशक :

बाबा रामदेव शोधपीठ

जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

अर

राजस्थानी ग्रंथागार

प्रकाशक एवं वितरक

पैलौ माळौ, गणेश मंदिर रै सांम्ही

सोजती गेट, जोधपुर (राजस्थान)

फोन : 0291-2657531, 2623933 (का.)

E-mail : info@rgbooks.net

Website : www.rgbooks.net

❑ ISBN : 978-93-91446-75-8

❑ © सगळा इधकार संपादक रा

❑ पैलौ संस्करण : 2021

❑ मोल : ₹ 300/- (तीन सौ रिपिया)

❑ आवरण चितराम : राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी, जोधपुर में संग्रहीत
श्री हिमतरामजी व्यास, पोकरण रौ बणायोड़ौ लोक देवता
बाबा रामदेवजी रौ चितराम

❑ छापणहार :
जांगिड़ कंप्यूटर्स, जोधपुर 6376545732

RAJASTHANI LOK DEVI-DEVTA : PARMPARA AR SAHITYIK DEETH

Edited by Dr. Gaje Singh Rajpurohit

First edition : 2021

Price : 300/-

Scanned with CamScanner

डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित

जलम : 14 जून, 1974, निम्बोल, जिला-पाली (राज.)

पढाई : अेम.अे., पीअेच.डी. (राजस्थानी साहित्य)

छपी पोथ्यां : जस रा आखर (राजस्थानी काव्य) 2006
राजहंस (साहित्य शोध ग्रंथ) 2008
आत्मदर्शन (स्मृति ग्रंथ) 2010
राजपुरोहित : आदिकाल से आज लग 2018
पळकती प्रीत (राजस्थानी काव्य) 2020
राजस्थानी साहित्य री सौरम (आलोचना) 2020
ऊमरदान लाळस (राजस्थानी विनिबंध) 2021

संपादन : सुजा शतक (वीरांगना सुजा) 2007
अंजस (राजस्थानी शोध) 2015
साहित्य-सुजस (12वीं मा. शि. बोर्ड राजस्थान) 2017
अंजस रा आखर (10वीं राज. स्टेट ओ. स्कूल) 2017
वीर दुर्गादास राठौड़ (ओळखाण) 2018
परिसर (ज.ना.वि.वि. समाचार पत्र) 2018
राजस्थानी लोक देवी-देवता : परंपरा अर साहित्यिक दीठ, 2021

साहित्यिक-संगोष्ठी : आजलग 7 अंतरराष्ट्रीय अर 35 राष्ट्रीय संगोष्ठियां मांय न्यारा-न्यारा साहित्यिक विषयां माथै शोध-पत्र प्रस्तुत। अै शोध-पत्र राजस्थानी भाषा-साहित्य री पत्र-पत्रिकावां मांय लगोलग प्रकाशित हुया।

- राजस्थानी डी.डी. दूरदर्शन जयपुर अर आकासवाणी केन्द्र, जोधपुर सूं लारला केई बरसां सूं राजस्थानी काव्यपाठ, परिचरचा अर विसिष्ठ आलेखां री प्रसारण।
- केई सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक अर शैक्षणिक संस्थावां सूं सक्रिय जुड़ाव।
- ज.ना.वि.वि. री केई अकादमिक, साहित्यिक अर सांस्कृतिक समितियां मांय सक्रिय भागीदारी।
- वीर दुर्गादास राठौड़ अवार्ड-2004, वीर दुर्गादास राठौड़ स्मृति समिति जोधपुर।
- सिरोपाव सम्मान-2008, राजमाता साहिबा श्रीमती कृष्णाकुमारीजी, मारवाड़-जोधपुर।
- स्वामी आत्मानन्द सरस्वती साहित्य पुरस्कार-2008 - श्री आत्मानन्द ट्रस्ट, बाड़वा, पाली (राज.)
- राजस्थानी भाषा साहित्य सेवा सम्मान-2019, महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश, मेहरानगढ, जोधपुर।
- डॉ. नृसिंह राजपुरोहित राजस्थानी साहित्य पुरस्कार, सिटिजन्स सोसायटी फॉर एज्यूकेशन, जोधपुर।

विश्वविद्यालय सेवा : **असिस्टेंट प्रोफेसर अर पूर्व विभागाध्यक्ष,**
राजस्थानी विभाग, ज.ना. व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

: **निदेशक**
बाबा रामदेव शोधपीठ, ज.ना. व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

रैवास : III E / 2, विश्वविद्यालय स्टाफ कॉलोनी
ज.ना. व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर-342 011 (राज.)

ई-मेल : gsnimbol@gmail.com

ISBN : 978-93-91446-75-8

Baba Ramdev Shodhpeeth, Jodhpur
Rajasthani Granthagar, Jodhpur

₹ 300.00

Scanned with CamScanner

Vol. XXIII

ISSN 2347-7873

हमारी लोक परम्परायें

पंचनद शोध पत्रिका 2020

संप्रेरकः-
डॉ. कृष्ण सिंह आर्य
प्रो.बृज किशोर कुठियाला

संपादकः-
पार्थ सारथि थपलियाल
डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डेय

पंचनद शोध संस्थान
कार्यालय 743 / 12 A पंचकुला
Website : www.panchnad.in E-mail -panchnadri@gmail.com
Telephone No.: 011-42141426-27, Mob.: 9810373278

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

	अध्यक्षीय		(i)
	निदेशक की लेखनी से		(iv)
	संपादकीय		(viii)
1.	अवधी लोकधारोहर : लोकगीतों से अलंकृत जीवन	डॉ. अनामिका श्रीवास्तव	1
2.	कार्तिक माह में ब्रज की लोक-परम्पराएं	यतीन्द्र चतुर्वेदी	8
3.	बनारस अंचल की लोक परम्पराएं	पंकजपति पाठक	12
4.	कुमांऊ की पारंपरिक लोककला 'ऐपण'	सी. एम. पपनै	17
5.	कुमाऊनी संस्कृति की पहचान पिछोड़ा	ललिता जोशी	21
6.	उत्तराखण्ड की विलुप्त होती परम्परायें	श्री महावीर सिंह पटवाल	25
7.	लोक-परंपरा के आईने में जौनसार बावर	मनोज इष्टवाल	31
8.	ओड़िशा के त्योहार और ग्रामीण परंपराएं	युगलकिशोर पंडा	36
9.	गुजरात की चुनिंदा लोक परम्पराएं	जोरावर सिंह यादव	45
10.	छतीसगढ़ की अनमोल परम्परा - पंडवानी	डॉ. संगीता ठाकुर	51
11.	कश्मीरी पंडितो की लोक परम्पराएँ	बिंद्राबन शेर	56
12.	गुजर बकरवालों का बेघर संसार	अनिल कुमार सिंह	61
13.	झारखंड के आदिवासी समाज की लोक परंपराएं	प्रोफेसर देवव्रत सिंह	64
14.	तमिलनाडु-विभिन्न संस्कार और उनके अर्थ	डॉ. एस विजया	71
15.	बिहार के प्रमुख पर्व : रोचक और अनूठी परम्पराएं	डॉ. अजीत कुमार शर्मा	75
16.	स्मृति में ही हैं वे दिन, जो देखे थे गाँव में-	अरुण कुमार पासवान	81
17.	बिहार की कुछ लोक परम्पराएँ	अमरेन्द्र कुमार आर्य	86
18.	भोजपुरी : लोक संस्कृति की एक खास बुनावट	डॉ. राकेश कुमार दूबे	94
19.	मालवा : आधुनिकता की आंधी में भी धूसर नहीं हुए जिस अंचल के लोक पारम्परिक रंग	शरद जोशी 'शलभ'	100

Scanned with CamScanner

20. लोक परम्पराओं से आत्मनिर्भर बने मध्य प्रदेश के आदिवासी	डॉ. रामदीन त्यागी	107
21. महाराष्ट्र : परम्परा, संस्कृति और लोक	डॉ. सुनील देवधर	111
22. खासियों की सांस्कृतिक पहचान	डॉ. डायफिरा खारसाती	117
23. राजस्थानी लोक कला - सांझी चितरावण	डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित	121
24. मारवाड़ में राजपूत समाज विवाह में परम्पराएं	डॉ. रतन सिंह चांपावत	127
25. मारवाड़ और मेवाड़ की संस्कार परम्पराएं	डॉ. शिवदान सिंह जोलावास	136
26. सिंधी लोकनाट्य कला : भगत	घनश्याम दास देवनानी	146
27. सिंधी लोक परम्परा में रामायण	डॉ. रवि टेकचन्दानी	150
28. सामाजिक सरोकारों से पूर्ण हरियाणा की दिलचस्प लोक-परम्पराएं	डॉ. महासिंह पूनिया	160
29. लुप्त होती परम्पराएं: कपास के फाहे, मोरपंख के पटूवे, और पचगंडे।	अजीत सिंह	172
30. हरियाणा की लोक परम्पराएँ	डॉ. दयानंद काद्यान	175
31. हिमाचल की लोक परंपरा-करियाला	डॉ. देवव्रत शर्मा	183
32. परम्पराओं के आईने में हमारा समाज	डॉ. प्रियंका शर्मा	187
33. पंजाब की लोक परंपरा	डॉ. मनजिंदर सिंह, रजनी हंस	189
34. ब्रज : जीवन की संपूर्ण संस्कृति	डॉ. माला मिश्र	201
35. A Tapestry Folk Arts of Karnataka	Prof-Narsimhamurhty N	206
36. A Few Folk Traditions of Mizoram	Ruth Puii	215
37. A symbol which has been Adored for Centuries in India	Dr. Dipendra Kumar Mazumder,	221
38. An Overview of the Folk Traditions of Bengal	Dr. Malayshankar Bhattacharya	228
39. Folk Tradition of Kerala	Parakode Unnikrishnan	235
40. Tripura: A State of Rising Pride	Shubhrangshu Chakraborty	238
41. Lok Sangeet of Bengal	Sumanta Ghosh	251
42. Lineage of Tamil Traditions in Culture & Practice, with specific reference to Rites of Passage	Dr. P. Sasikala	255

Scanned with CamScanner

मैं गांधी बोलूं

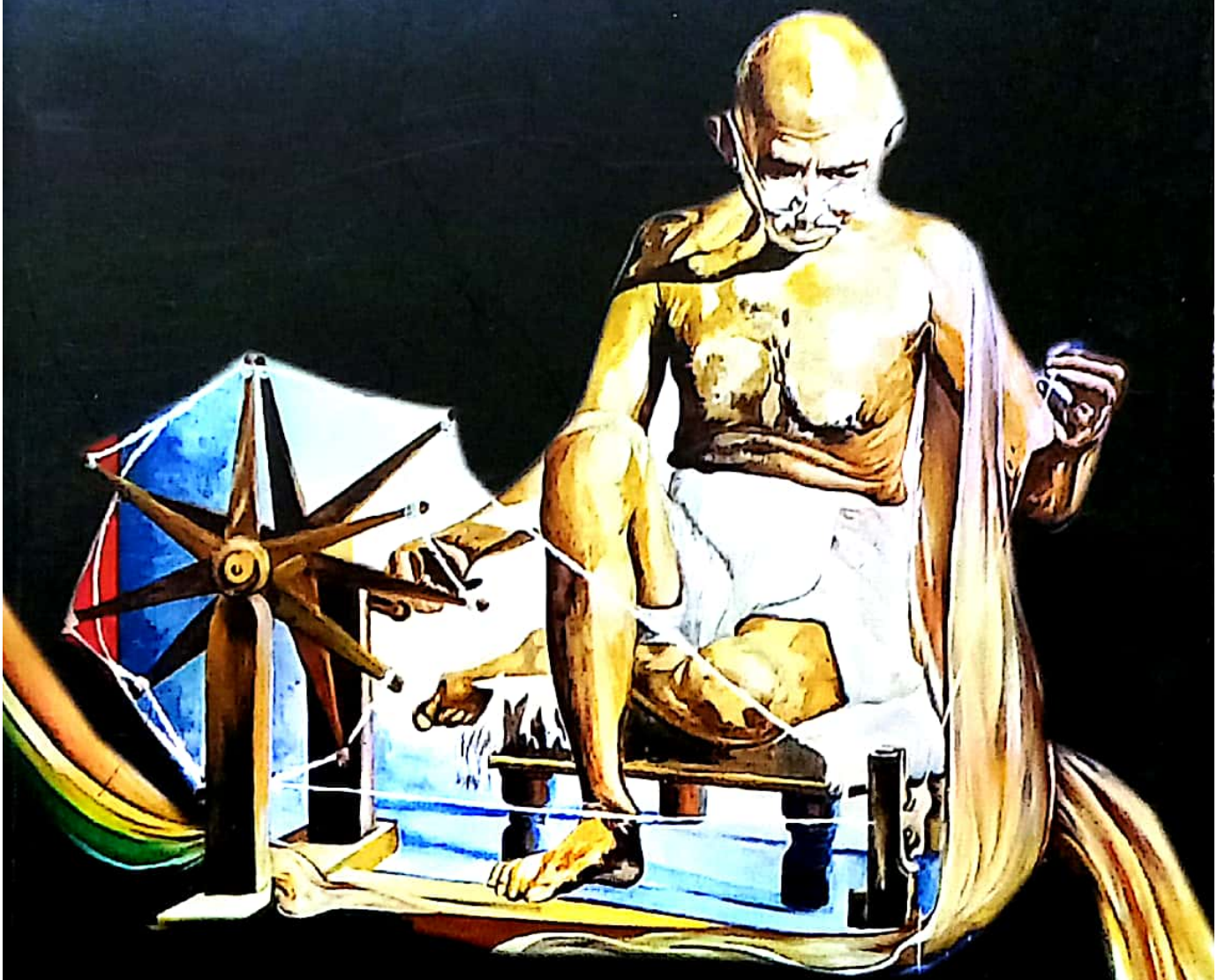

संपादक

भरत ओळा

Scanned with CamScanner

आलेखां रा आगीवाण

1. सदावरती महात्मा गांधी अर उपवास	*डॉ. अनुश्री राठौड़*	13
2. मोहनदास करमचंद गांधी बनाम महात्मा गांधी	*अरविंदसिंह आशिया*	17
3. सात समंदर धज सूं बोल्या...	*डॉ. आईदानसिंह भाटी*	20
4. महात्मा गांधी रै चिंतन री प्रासंगिकता	*किशोर कुमार निर्वाण*	24
5. राजस्थानी काव्य में महात्मा गांधी	*डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित*	28
6. गांधी : साच रौ सारथी	*गोपाल झा*	36
7. गांधी बाबा रौ त्याग-बलिदान	*प्रो. जी. अेस. राठौड़*	38
8. सींवां सूं पार जावणौ ई गांधी होवणौ है *—डॉ. संदेश त्यागी*	*उल्थौ : डॉ. गौरीशंकर निमिवाळ*	42
9. नीं संत, नीं पापी *—महात्मा गांधी*	*उल्थौ : चेतन स्वामी*	46
10. राजस्थानी साहित्य में गांधी-गाथा	*जेठनाथ गोस्वामी*	50
11. साच री जड़ (पोथी 'सर्वोदय' सूं अेक पाठ) *—मोहनदास करमचंद गांधी*	*उल्थौ : दुलाराम सहारण*	54
12. गांधीजी री अनूठी जीवण-कथा 'साच रा प्रयोग'	*नन्द भारद्वाज*	63
13. ऊजळ गांधी	*पूर्ण शर्मा 'पूरण'*	70
14. दूबळां रै दुखां सूं दुखी : महात्मा गांधी	*डॉ. मदन सैनी*	76
15. शिक्षा सारू गांधीजी रा विचार	*मनीषा शर्मा*	81

Scanned with CamScanner

16. अेम. के. गांधी — भूपेन महापात्र (ओड़िया) — उल्थौ : मनोहर सिंह राठौड़ — 84
17. आज भी प्रासंगिक है गांधीजी रौ शिक्षा-दर्शन — ममता परिहार — 89
18. महात्मा गांधी : अेक सबदांजळी — माणक तुलसीराम गौड़ — 92
19. गांधी : साहस, सापेक्ष साच अर विरोधाभास — माधव नागदा — 97
20. महात्मा गांधी रा कीं प्रसंग — डॉ. राम मनोहर लोहिया — उल्थौ : मालचंद तिवाड़ी — 102
21. गांधी अर पर्यावरण नै परोटण री अवधारणा — डॉ. मीना कुमारी जांगीड़ — 111
22. मायड़ भासा अर महात्मा गांधी : अेक दीठ — डॉ. मीनाक्षी बोराणा — 115
23. म्हारै सुपनां रौ भारत — महात्मा गांधी — उल्थौ : रमेश बोराणा — 118
24. अेक धरम रौ नांव है—महात्मा गांधी — राजेन्द्र शर्मा 'मुसाफ़िर' — 121
25. राजस्थानी काव्य अर महात्मा गांधी — डॉ. लक्ष्मीकांत व्यास — 128
26. गांधी मानवाधिकारां को शिलालेख — डॉ. लीला मोदी — 134
27. काया रौ कुदरती उपचार : गांधीजी रा प्रयोग — डॉ. विजय कुमार पटीर — 141
28. महात्मा गांधी अर महिला-उत्थान — ले. (डॉ.) विजयलक्ष्मी शर्मा — 149
29. महात्मा गांधी री बेजोड़ आगीवाणी — पास्कल अेलन नाज़रेथ — उल्थौ : शंकरसिंह राजपुरोहित — 153
30. महात्मा गांधी री नारीवादी दीठ — डॉ. शारदा कृष्ण — 160
31. बापू नै देस री बेटी रौ कागद — संतोष चौधरी — 165
32. अेक अेकलौ दीवलौ, जग्यौ समूळी रात — सुनीता बिश्नोलिया — 171
33. मातृभासा में भणाई रा हिमायती गांधीजी — सुरेन्द्र कुमार — 173

Scanned with CamScanner

आजादी रा भागीरथ : गांधी

संपादक

वेद व्यास • श्याम महर्षि

Scanned with CamScanner

ISBN : 81-86958-31-2

छापणहार

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति

संस्कृति भवन, एन.एच. 11,

श्रीडूंगरगढ़-331 803 (बीकानेर) राजस्थान

email : hindipracharsamiti@gmail.com

पैलो फाळ

2020

मोल

तीन सौ पचास रिपिया

आवरण

गौरीशंकर आचार्य

आखरसाज

जुगल किशोर सेवग

छापाखानो

कल्याणी प्रिंटर्स, बीकानेर (राज.)

AAJADEE RAA BHAGEERATH GANDHI 350/-

Scanned with CamScanner

विगत

1. अतुल कनक	*गांधी बाबा सूं बात*	13
2. अनिता जैन 'विपुला'	*राष्ट्रपिता री जय-हुंकार*	15
3. अक्षयसिंह रत्नू	*भळै महात्मा भेज दो!*	16
4. आईदान सिंह भाटी	*औ कुण आयो, औ कुण आयो?*	17
5. इकराम राजस्थानी	*बापूजी!*	21
6. उदयराज उज्ज्वल	*भारत गांधी भानिया*	22
7. उदयवीर शर्मा	*नमस्कार!*	23
8. ओम नागर	*खादी अेक बच्यार*	25
9. कन्हैयालाल सेठिया	*बापू*	26
10. कमल रंगा	*निवण*	28
11. करणीदान बारहठ	*जद मिनखपणो हिड़कायो हो*	30
12. कल्याण सिंह राजावत	*खुद बणग्यो इतिहास रे*	34
13. कान्ह महर्षि	*भारत रै कण-कण में गांधी*	35
14. किरण राजपुरोहित 'नितिला'	*वै अमर है भारत में*	36
15. केशव 'पथिक'	*जलम्यो जद बापू गांधी*	37
16. कैलासदान उज्ज्वल	*गांधी गीत*	38
17. गजादान चारण 'शक्तिसुत'	*बदळ गयो है धारो बापू*	39
18. गजेसिंह राजपुरोहित	*मन रो महात्मा*	42
19. गणपतलाल डांगी	*संदेसो बापू रो सुणलो*	44
20. गणपतसिंह 'मुग्धेश'	*गांधी रै नाम चिट्ठी*	45
21. गिरधरदान रतनू दासोड़ी	*सबसूं है मोहन सिरमोड़*	47

Scanned with CamScanner

ISSN 2455-3042

पारिवारिक राजस्थानी मासिक

सितंबर २०२० मोल २० ₹

माणक

पुण्य स्मरण अंक

'कोविड लीलग्यौ आसमां कैड़ा-कैड़ा ?'

पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी समेत केई ख्यातिनांव हस्तियां नीं रैयी

अ ल वि दा

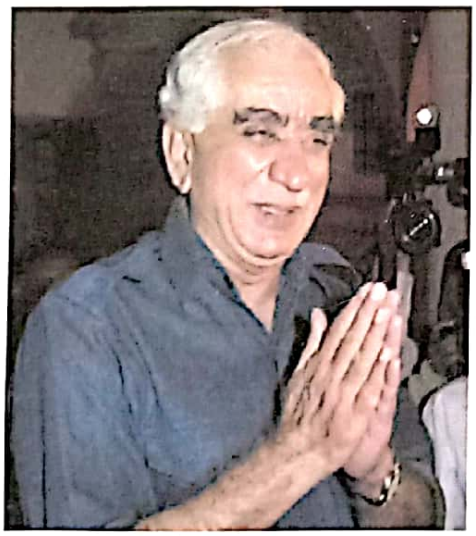

नीं रैया मारवाड़ रा लाडला जसवंत सिंह जी जसोल

'माणक' रा सहायक संपादक अर वरिष्ठ साहित्यकार जुगल परिहार रौ निधन

'माणक-जुगल राजस्थानी शोधपीठ' री थरपणा करीजैला

Scanned with CamScanner

मायड़भाषा अर साहित्य रा साचा साधक जुगल परिहार

सरलमना अर सादगी रा परयाय जुगल परिहार असल में मायड़भाषा अर साहित्य रा साचा साधक हा जकौ जीवणभर निस्वारथ भाव सूं साहित्य सिरजण कर मायड़भाषा रौ मान बधायौ। असल में संघर्ष रौ दूजौ नांव जुगल परिहार कह्यौ जाय सकै। आखी उमर जीवण सूं जूझता रैया पण कदैई हार नीं मानी। मायड़भाषा अर साहित्य रै पेटै जुगलजी रा केई मैतावू काम है, इणनै सार रूप में कैय सकां के राजस्थानी भाषा नै मानक स्वरूप देवण में वां रौ घणौ योगदान रह्यौ। 'माणक' पत्रिका मांय चाळीस बरसां सूं सहायक संपादक रै रूप में सेवा देवणिया जुगलजी रौ निधन राजस्थानी साहित्यिक पत्रकारिता जगत में अेक जुग रौ अंत है।

डॉ. नृसिंह राजपुरोहित, ओंकारश्री पारसजी अरोड़ा रै साथै जुगलजी ई हा जिका 'माणक' नै नियमित अर घणचावी बणाय राखी ही। पारिवारिक राजस्थानी पत्रिका 'माणक' रै केई स्तंभां री पूरती करणिया जुगलजी परिहार केई नामां सूं लेखन करता जिणां में कंवल उणियार, पं. लीलाकमल शास्त्री, सीता सुरभि, अलाम जोधपुरी, जल्लौ जोधाणवी, कवि धुरपट, अेम. अेम. माडाणी इत्याद प्रमुख है। वांरै संपादन में माणक रौ कोई स्तंभ कदैई 'मिस' नीं हुवतौ। वै आं केई नामां सूं खुद लिखता अर साहित्य री सेवा करता रहया।

राजस्थानी भाषा में जुगलजी रा केई आलेख घणा महताऊ अर अनूठा है जकौ सदैव नुंवा शोध करणवाळा अर पढेसरां सारू मैतावू सिद्ध हुवै। राजस्थानी भाषा, साहित्य अर संस्कृति अकादमी वां नै राजस्थानी भाषा री अेकरूपता अर मानक स्वरूप सारू बरस २०१२ मांय 'भाषा सम्मान' सूं सम्मानित करियौ। माणक रै संपादक मंडळ रा दरजन भर सदस्यां मांय सूं वै अेकमात्र संपादक हा जका 'माणक' रै प्रवेसांक १९८१ सूं लेयनै जीवण रा आखरी छिण तांई बरौबर जुड़िया रैया। वां नै दैनिक भास्कर अर राजस्थान पत्रिका सूं ऑफर मिल्या, पण माणक सूं वां नै हदभांत लगाव हुयग्यौ हौ। वां रा पग बारै नीं पड़्या अर छेहली सांस तांई 'माणक' नै समरपित रैया।

लारला बीसेक दिनां पैला इज जलते दीप ऑफिस में आदरजोग जुगलजी अर श्री पदम मेहता सूं मिलणौ हुयौ। म्हैं वां नै म्हारी नवी पौथी 'पळकती प्रीत' भेंट करी तद वै घणा ई राजी हुया अर कीं टैम तांई साहित्य चरचा करी पण उण बगत म्हैं आ नीं सोची के औ छेलौ मिलण हुवैला। आदरजोग जुगलजी नै अश्रुपूरित श्रद्धांजळी अरपित करतां प्रभु सूं अरदास करूं के वां री आतमा नै शांति अर घरवाळां नै संबळ प्रदान करै। राजस्थानी साहित्य में जुगलजी परिहार रौ नांव सदैव अमर रैहसी।

—डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित, जोधपुर

जुगलजी री ऊंडी सांस्कृतिक दीठ, राजस्थानी परंपरावां री जड़ सूं जाणकारी अर भाषा माथै पूरी पकड़ निकेवळी इधकाई राखती

जोधपुर रै मज्झ कुम्हारियै कुअे री अेक साधारण लोहार गवाड़ी में जलम्योड़ा श्री जुगल परिहार साहित्य अर पत्रकारिता रै सीगै अलेखूं गिणावणजोग काम कर्‌या हा। पिताजी रै कड़ला वणावण री दुकान संस्कृत कॉलेज रै नैड़ी हुवण सूं बाळपणै में उणां नै संस्कृत कॉलेज में दाखलौ दिराईज्यौ। इण सूं उणां री वैदिक, पौराणिक अर महाकाव्यां री जाणकारी गजब ई निखरी। धकै आवतां विश्वविद्यालयां में संस्कृत, हिंदी अर अंगरेजी साहित्य सूं बीअे कर्‌यां पछै १९८१ में वै राजस्थानी पारिवारिक मासिक 'माणक' सूं जुड़्या। आ पौराणिक जाणकारी वां नै केई राजस्थानी रीत-पांत री जड़ां पौराणिक साहित्य में जोवण में मदद करी। बसंतोत्सव रै रूप में होळी रा पैला अेलाण कठै मिलै, अर इणीज गत केई राजस्थानी, सांस्कृतिक रीत रिवाज री सरूआत संस्कृत साहित्य में सोधण रौ मैतावू काम रौ जस सिरफ जुगल परिहार रै खंवै है।

जुगल जी नै न्यारा-न्यारा नांवां सूं लिखण री अेक अजब धुन ही। उणां मिरचूमल माडाणी, धुरपट कविराय, लीलाकमल शास्त्री, कंवल उणियार, अलाम जोधपुरी अर ठाह नीं कित्ता ई नांवां सूं साहित्य सिरजियौ हौ। जद कदैई किणी जड़ां जमायोड़ी रीत माथै धमीड़ धरणौ हुवतौ तद जुगल जी मिरचूमल, के धुरपट कविराय री आड़ लेवता। असल में जुगल परिहार अेक अैड़ी शख्सियत रौ नांव है जिकौ साहित्य जगत में 'ना किणी सूं दोस्ती ना किणी सूं बैर' री कैहणावत नै आपरी करणी सूं साची कर दीवी।

'माणक' सारू अणूतौ हेत अर राजस्थानी साहित्य री शोध-खोज करण वाळा नै पूरी मदद जुगल जी री दो खास गिणावणजोग बातां है। जुगल परिहार रौ लेखन न तौ किणी घेरै में बंध्यौ हौ अर न विसयां रै तालकै किणी सींव नै मानतौ। वै साहित्य री लगैटगै सगळी विधावां में रचनावां करी। आपरी ऊंडी सांस्कृतिक दीठ, राजस्थानी परंपरावां री जड़ सूं जाणकारी अर भाषा माथै पूरी पकड़ रै पाण वां रौ लेखन हरमेस कीं-न-कीं निकेवळी इधकाई राखतौ।

म्हारौ मानणौ है के राजस्थानी साहित्य जगत नै जुगल जी रै गयां सूं जित्तौ मोटौ घाटौ हुयौ है, उत्तौ ई 'माणक' परिवार नै ई हुयौ है अर वां रै परिवार नै तौ इण घाटै सूं हुयोड़ी अबखायां जीवण तांई झेलणी है।

—जहूर खां मेहर, जोधपुर

Scanned with CamScanner

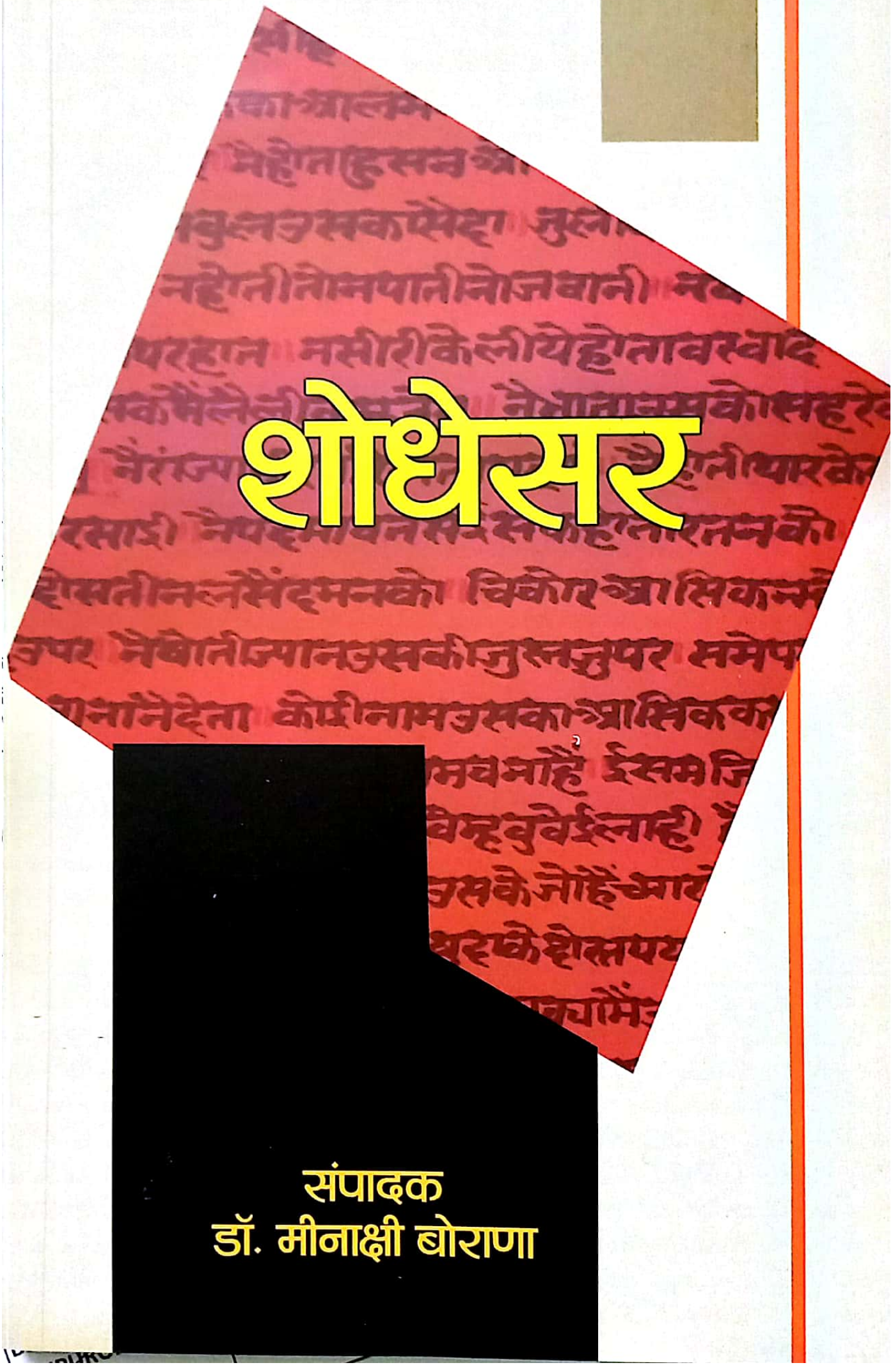

Scanned with CamScanner

जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर रै
राजस्थानी विभाग रौ शोध आलेख-संग्रै

छापणहार

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति

संस्कृति भवन, अेन.अेच.11, श्रीडूंगरगढ़-331803

बीकानेर (राजस्थान)

E-mail : hindipracharsamiti@gmail.com

www.rbhpsdungargarh.com

ISBN 978-81-94897-99-6

© डॉ. मीनाक्षी बोराणा

संस्करण : 2021

आवरण : रमेश शर्मा

आखरसाज : रोहित राजपुरोहित

मोल : तीन सौ रुपिया

छापाखानौ : कल्याणी प्रिंटर्स, बीकानेर

SHODHESAR (Rajasthani Research Paper Collection)
Edited by Dr. Meenakshi Borana

₹ 300

Scanned with CamScanner

अनुक्रम

1. संस्कारां बिन रिश्ता सून

–डॉ. गजादान चारण 'शक्तिसुत' 9

2. राजस्थानी सबदकोस परंपरा अर विगसाव

–डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित 15

3. जूंझार गिरधर व्यास

–डॉ. चांदकौर जोशी 24

4. राजस्थानी लोककथावां में नारी चित्रण

–जेबा रशीद 30

5. आजादी पछै री राजस्थानी साहित्यिक पत्रकारिता : च्यार पत्रिकावां री फिरोळ

–दुलाराम सहारण 33

6. 'भड़खाणी' कृति रा कृतिकार : वीररसावतार सूर्यमल्ल मीसण

–डॉ. धनंजया अमरावत 45

7. उपन्यास-विकास : कथ्य अर बुणगट

–डॉ. नीरज दइया 50

8. राजस्थानी काव्य में गांधीवादी विचारां रौ असर

–डॉ. प्रकाश अमरावत 57

Scanned with CamScanner

डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित

राजस्थानी सबदकोस परंपरा अर विगसाव

माणस आपरी बुध-बळ अर भासा रै पांण ईज संसार रा सगळा जीवां मांय सैं सूं सिरै अर सिमरथ मानीजै। स्रिस्टी री सिरजणा सूं लेय'र आज लग माणस री विकासजात्रा अपणै आप में अनूठी रैयी। असल में जुगां-जुग जंगळी जीवण जीवता थकां ई अेक दूजा रै मन रा भावां नै सबदां नै मारफत बोल'र समझण-समझावण सारू माणस आपरी बुध-बळ अर हूंस रै पांण भासा रौ विकास करियौ हौ। भासायी विकास री औ क्रम इसारौ (संकेत) सैलांण बोली अर भासा तांई पूगौ। भासायी विकास री आ जात्रा ई घणी लांबी रैयी। जे आपां रै देस-प्रदेस री बात करां तो देववाणी संस्कृत, प्राकृत, पालि, अपभ्रंश अर मरु-गुजरी सूं विकसित हुयी राजस्थान प्रांत री मायड़ भासा—राजस्थानी। अेक कांनी अठै मध्यकाल मांय अरबी, फारसी अर उरदू भाषा ई आपरा पग पसार लिया तो दूजी कांनी अंगरेजां री ईस्ट इंडिया कंपनी रै आवण सूं अंगरेजी भासा री तूती बोलण लागी। कैयौ जावै कै 'घर रौ जोगी जोगटौ अर बार गांव रौ सिद्ध' सो इचरजजोग बात आ कै अंगरेजी भासा जाणणवाळा तो 'लाट साहब' बणग्या अर मायड़ भासा रा सपूत 'गंवार' कहीजण लाग्या। देस री आजादी रै सागै ई भारतीय संविधान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति रै त्हैत 'त्रिभासा सूत्र' रौ समावेस हुयौ जिणरै अंतरगत अंतरराष्ट्रीय भासा रै त्हैत-अंग्रेजी, राजभासा रै त्हैत हिंदी अर प्रांतीय भासा रै त्हैत हरेक प्रांत री आपरी मायड़ भासा सामिल करीजी।

हिंदी भासा नै भावनात्मक अेकता रौ आधार बताय'र भारत रै संविधान मांय 'राजभासा' रौ दरजौ मिळग्यौ। इणरै सागै ई केई प्रांतां री भासावां नै संवैधानिक मान्यता मिलगी पण राजस्थानी रै राजनेतावां री उदासीनता रै कारण 'राजस्थानी' नै संवैधानिक मान्यता नीं मिळ पायी। पण राजस्थानी भासा-साहित्य रै अंजसजोग इतियास, साहित्य रै विसाळ भंडार अर भासायी सिमरथता रै कारण राजस्थानी रचनाकार हिम्मत नीं हारी, वौ लगौलग आपरी मायड़भासा रै विगसाव सारू सदैव सकारात्मक सिरजण करतौ रैयौ।

देस-विदेस रा भासा-वैग्यानिक किणी भासा नै सुतंत्र अर सिमरध भासा मानण सारू भासा रा जकौ मानक-तत्त्व थरपिया वां मांय—साहित्य भंडार, भौगोलिक खेतर, लिपि, बोलियां, व्याकरण अर सबदकोस उल्लेखजोग है। भासा रै आं मानक तत्त्वां रै

Scanned with CamScanner